CMYK

दैनिक

जयपुर,सीकर, झुंझुनूं, चुरू,नागौर एवं अलवर से एक साथ प्रकाशित

जयपुर टाइम्स

नई सोच नई रफ्तार

वर्ष : 10 अंक : 135 ■ डाक पंजीयन संख्या : जयपुर सिटी / 007/2017-19 जयपुर, शनिवार 07 जून, 2025 ■ RNI.No.RAJHIN/2016/70162 ■ मूल्य : 2 रुपए ■ पृष्ठ : 8+2

वरिष्ठ नागरिक तीर्थ यात्रा योजना का मिल रहा लाभ

सनातन संस्कृति को जोड़ने में तीर्थ स्थलों की बड़ी भूमिका : भजनलाल

मुख्यमंत्री ने प्रथम वातानुकूलित ट्रेन को हरी झंडी दिखाकर किया रवाना

प्रदेश सरकार 50 हजार वरिष्ठजनों को करवाएगी एसी ट्रेन से तीर्थ यात्रा

जयपुर टाइम्स

जयपुर(कासं.)। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने शुक्रवार को फीता काटकर वरिष्ठ नागरिक तीर्थ यात्रा योजना 2025-26 का शुभारंभ किया। साथ ही, योजना के तहत प्रथम वातानुकूलित 'राजस्थान वाहिनी भारत गौरव पर्यटक ट्रेन' को दुर्गापुरा रेलवे स्टेशन से हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। इस एसी ट्रेन से वरिष्ठ नागरिक रामेश्वरम व मदुरई के तीर्थ स्थलों की यात्रा करेंगे। इस अवसर पर मुख्यमंत्री ने वरिष्ठ नागरिकों से मुलाकात कर उनकी सुगम व सफल यात्रा की शुभकामनाएं दी। इस अवसर पर मुख्यमंत्री ने कहा कि वरिष्ठजन हमारे लिए एक अमूल्य धरोहर और समाज का एक महत्वपूर्ण स्तंभ हैं। इनके अनुभव और आदर्श हमें जीवन में सही राह पर आगे बढ़ने का मार्ग प्रशस्त करते हैं। उन्होंने कहा कि वरिष्ठ नागरिक तीर्थ यात्रा योजना जीवन भर समाज एवं राष्ट्र की सेवा करने वाले वरिष्ठ जनों की सेवा, सम्मान और कृतज्ञता व्यक्त करने का एक भाव है।

तीर्थ स्थलों का समाज में भाईचारा बढ़ाने में महत्वपूर्ण योगदान

शर्मा ने कहा कि देश के तीर्थ स्थल सनातन संस्कृति को जोड़ने का काम करते है। साथ ही, समाज में भाईचारा बढ़ाने में भी इन स्थलों का बड़ा योगदान है। जगद्गुरू शंकराचार्य ने इनके महत्व को जाना और देश के चार भागों में चार धाम की स्थापना की। उन्होंने कहा कि हर व्यक्ति के मन में यह इच्छा रहती है कि वह अपने जीवनकाल में महत्वपूर्ण तीर्थस्थलों की यात्रा करें, वरिष्ठजनों के मन में पावन धामों के दर्शन करने की इच्छा से प्रेरित होकर यह तीर्थयात्रा योजना चलाई जा रही है। उन्होंने कहा कि इस यात्रा के दौरान सभी तीर्थ यात्रियों को राज्य सरकार की ओर से भोजन, ठहरने की सुविधा सहित सभी आवश्यक सुविधाएं निःशुल्क उपलब्ध करवाई जाएंगी।

राज्य सरकार ने वरिष्ठ नागरिकों के हित में लिए अनेक फैसले

शर्मा ने कहा कि हमारी सरकार प्रदेश के वरिष्ठ नागरिकों के जीवन को बेहतर बनाने की दिशा में निरंतर प्रयास कर रही है। वरिष्ठ नागरिक तीर्थ यात्रा योजना के तहत इस साल 50 हजार वरिष्ठजनों को पहली बार एसी ट्रेनों से 13 विभिन्न तीर्थस्थलों की यात्रा करवाई जा रही है। साथ ही, लगभग छह हजार श्रद्धालुओं को हवाई जहाज से नेपाल में भगवान पशुपतिनाथ के दर्शन करवाए गए। उन्होंने कहा कि हमारी सरकार ने राज्य व राज्य के बाहर देवस्थान विभाग की ओर से प्रबंधित 593 राजकीय मंदिरों की मासिक भोग राशि में वृद्धि, विभिन्न मंदिरों में उत्सव मनाना, मंदिरों के जीर्णोद्धार व जनसुविधाओं के विकास कार्य सहित अनेक काम किए है। इस अवसर पर देवस्थान मंत्री जोराराम कुमावत, सांसद मदन राठौड़ और मंजू शर्मा, जयपुर ग्रेटर नगर निगम महापौर सौम्या गुर्जर सहित विभिन्न जनप्रतिनिधि , बड़ी संख्या में तीर्थयात्री और उनके परिजन उपस्थित रहे।

प्रधानमंत्री से देश की समृद्ध विरासत को मिली नई ऊर्जा

मुख्यमंत्री ने कहा कि यशस्वी प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 2014 के बाद देश की समृद्ध विरासत को आगे बढ़ाने के लिए अनेक कार्य किए है। उनके नेतृत्व से देश में सनातन संस्कृति को एक नई ऊर्जा मिल रही है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री ने सोमनाथ का विकास, महाकाल के महालोक का निर्माण, केदार घाटी का पुनर्निर्माण जैसे अनेक काम किए है। साथ ही, मोदी की ओर से अयोध्या के भव्य मंदिर में राम लला की प्राण प्रतिष्ठा हुई।

तेज रफ्तार कार खड़े ट्रेलर में घुसी, 3 की मौत

जयपुर टाइम्स

नीमराना। कोटपूतली-बहरोड़ जिले में नेशनल हाईवे-48 पर हुए कार एक्सीडेंट में 3 लोगों की मौत हो गई। इनमें 2 लोग हरियाणा के और एक उत्तर प्रदेश का रहने वाला था। तीनों आपस में रिश्तेदार बताए जा रहे हैं। पुलिस के अनुसार कार सवार खाटूश्याम से दर्शन कर घर लौट रहे थे। शुक्रवार सुबह 3 बजे उनकी कार हाईवे किनारे खड़े ट्रेलर में घुस गई। पुलिस ने बताया कि एक्सीडेंट में सतीश गौड़ (42) निवासी खांडसा गुरुग्राम, अंकुश सिंह (38) निवासी सहारनपुर और गुरमीत सिंह (52) निवासी अंबाला की मौके पर ही मौत हो गई। वहीं, घायल वीरेंद्र शर्मा (62) निवासी खांडसा गुरुग्राम का गुरुग्राम के एक अस्पताल में इलाज चल रहा है। पुलिस ने शवों को पोस्टमॉर्टम के लिए नीमराना सीएचसी में रखवाया है। जानकारी के अनुसार तीनों मृतक गुरुग्राम की ही कंपनी में काम करते थे। हेड कॉन्स्टेबल ने बताया कि हादसा इतना तेज था कि कार ट्रेलर में पूरी तरह फंस गई थी। जिसको क्रेन की मदद से खींच कर शवों को बाहर निकाला गया था। वहीं, हादसे के बाद करीब आधे घंटे की तक हाईवे पर लंबा जाम लग गया। पुलिस ने दोनों वाहनों को एक साइड कराकर यातायात सुचारू रूप से चालू करवाया।

कोरोना का कहर, 4 की मौत, 5,364 लोग कोरोना पॉजिटिव

जयपुर टाइम्स

नई दिल्ली(एजेंसी)।। देश भर में कोरोना के मामलों में लगाता बढ़ोतरी देखने को मिल रही है। आंकड़ों पर नजर डालें तो केवल 15 दिनों में कोविड के सक्रिय मामलों में 20 गुना वृद्धि देखने को मिली है। देश में सक्रिय कोविड मामलों की संख्या 5,000 के पार हो गई है। देश में कोरोना से सबसे ज्यादा प्रभावित राज्य केरल बना हुआ है। इसके बाद गुजरात, पश्चिम बंगाल और दिल्ली का स्थान है। देश भर में कोरोना के कुल सक्रिय मामले 5,364 हो गए हैं। वहीं, गत 24 घंटों में चार लोगों की जान गई है। जनवरी से अभी तक कोरोना से कुल 55 लोगों की मौत हुई है। देश में लगातार कोरोना के बढ़ते मामलों ने लोगों को चिंता में डाल दिया है। कोविड के बढ़ते मामलों को देखते हुए केंद्र सरकार कोविड-19 के लिए सुविधा-स्तर की तैयारियों की जांच के लिए मॉक ड्रिल आयोजित कर रही है। कोरोना के बढ़ते मामलों को देखते हुए देश के सभी राज्यों को ऑक्सीजन, आइसोलेशन बेड, वेंटिलेटर और आवश्यक दवाओं की उपलब्धता सुनिश्चित करने के निर्देश दिए गए हैं। सूत्रों के हवाले से बताया कि अधिकांश मामले हल्के होते हैं और घरेलू देखभाल के तहत उनका प्रबंधन किया जाता है।

रन फॉर एनवायरमेंट में दौड़े डॉ. सतीश पूनियां

पूनियां ने श्रमदान-पौधरोपण भी किया

जयपुर टाइम्स

जयपुर/आमेर(कासं.)। भाजपा राजस्थान के पूर्व अध्यक्ष और हरियाणा प्रभारी डॉ. सतीश पूनिया शुक्रवार को दौड़ते हुए नजर आए। मौका था पर्यावरण दौड़ और तिरंगा यात्रा का जिसमें पुनिया ने अपनी महत्ती भूमिका निभाई। आमेर में 'वंदे गंगा जल संरक्षण जन अभियान' के तहत पर्यावरण दौड़ और तिरंगा यात्रा का आयोजन किया गया। इसमें भाजपा हरियाणा प्रभारी, भाजपा राजस्थान पूर्व प्रदेश अध्यक्ष डॉ. सतीश पूनियां सीआरपीएफ, सीआईएसएफ जवानों, अधिकारी-कर्मचारी, युवाओं, एनएसएस-एनसीसी कैडेट्स आमजन व कार्यकर्ताओं के साथ शामिल हुए। सतीश पूनियां ने आमेर के नाहरगढ़ जैविक उद्यान में 'वंदे गंगा जल संरक्षण जन अभियान' के तहत 'रन फॉर एनवायरमेंट' कार्यक्रम में श्रमदान व पौधरोपण कर तिरंगा यात्रा में शामिल हुए और जल संरक्षण और पर्यावरण संरक्षण की सभी को शपथ दिलाई। कार्यक्रम में कमाडेंट कुलदीप कुमार जैन, उपखण्ड अधिकारी आमेर बजरंग लाल स्वामी, तहसीलदार सौरभ गुर्जर, विकास अधिकारी पंचायत समिति आमेर दीनबंधु सुरोलिया, असिस्टेंट कमाडेंट सजील कुमार, अभिषेक जोरवाल, इंस्पेक्टर विक्रांत राठी सहित सेना के जवान व नागरिक उपस्थित रहे। पूनियां ने वहां मौजूद सभी लोगों को शपथ दिलाते हुए आह्वान किया कि हम सभी इस जन-अभियान से जुड़कर हरित, स्वच्छ और समृद्ध राजस्थान के नव निर्माण में अपनी भागीदारी निभाएं।

हाई कोर्ट का बड़ा फैसला

शांतिपूर्ण प्रदर्शन किसानों अधिकार, 53 किसानों के खिलाफ एफआईआर रद्द

जयपुर टाइम्स

जयपुर(कासं.)। राजस्थान हाईकोर्ट ने राष्ट्रीय राजमार्ग-62 पर शांतिपूर्ण प्रदर्शन के मामले में बड़ा फैसला सुनाया है। कोर्ट ने 53 किसानों के खिलाफ दर्ज FIR को रद्द कर दिया। जस्टिस फरजंद अली ने आदेश में कहा कि शांतिपूर्ण विरोध करना लोकतंत्र में हर नागरिक का मौलिक अधिकार है। इसे अपराध मानकर सजा देना गलत है। कोर्ट ने सांडेराव थाने को निर्देश दिया कि वह ट्रायल कोर्ट में नकारात्मक अंतिम रिपोर्ट दाखिल करे। यह याचिका अजयपाल सिंह और अन्य किसानों ने दायर की थी। दरअसल जवाई बांध से पानी वितरण को लेकर 2 जनवरी 2022 को संभागीय आयुक्त ने जोधपुर में बैठक बुलाई थी। परंपरागत रूप से यह बैठक सुमेरपुर के बांध निरीक्षण भवन में होती थी, लेकिन इस बार स्थान बदलने से किसानों को अपनी बात रखने का मौका नहीं मिला। इससे नाराज होकर 9 अक्टूबर 2022 को सैकड़ों किसान -62 के पास इकट्ठा हुए और शांतिपूर्ण प्रदर्शन किया। इसके बाद 10 और 14 अक्टूबर को प्रशासन ने किसानों की अनदेखी कर पाली में बैठकें कीं। इससे गुस्साए करीब 800 किसानों ने फिर से राजमार्ग पर प्रदर्शन किया। पुलिस जांच में साफ हुआ कि प्रदर्शन के दौरान कोई हिंसा नहीं हुई। न तो किसी को चोट पहुंची, न ही सार्वजनिक संपत्ति को नुकसान हुआ। इसके बावजूद किसानों के खिलाफ भारतीय दंड संहिता की धारा 117, 143, 283, 353 और राष्ट्रीय राजमार्ग अधिनियम की धारा 8 बी के तहत मामला दर्ज किया गया। कोर्ट ने सवाल उठाया कि शांतिपूर्ण प्रदर्शन को अपराध कैसे माना जा सकता है। कोर्ट ने थाना सांडेराव, जिला पाली में दर्ज एफआईआर को खारिज करते हुए संबंधित एसएचओ को ट्रायल कोर्ट में नकारात्मक अंतिम रिपोर्ट पेश करने का निर्देश दिया। यह याचिका अजयपाल सिंह व अन्य की ओर से दायर की गई थी, जिसमें चार अलग-अलग आपराधिक याचिकाएं शामिल थीं। हाईकोर्ट ने अपने फैसले में कहा कि लोकतंत्र में शांतिपूर्ण असहमति जताना लोगों का अधिकार है।

जी-7 सम्मेलन में हिस्सा लेने कनाडा जाएंगे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी

जयपुर टाइम्स

नई दिल्ली(एजेंसी)।। कनाडा के प्रधानमंत्री मार्क कार्नी ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से फोन पर बात की है और उन्हें जी7 सम्मेलन के लिए आमंत्रित किया है। वहीं प्रधानमंत्री मोदी ने आमंत्रण के लिए उन्हें धन्यवाद दिया। उन्होंने कहा कि शिखर सम्मेलन में उनसे मुलाकात का बेसब्री से इंतजार है। इस साल 15 से 17 जून 2025 को कनाडा के अल्बर्टा के कनानास्किस में जी7 सम्मेलन हो रहा है। इसमें अमेरिका, फ्रांस, ब्रिटेन, जापान, इटली, कनाडा और जर्मनी के शीर्ष नेता हिस्सा लेंगे। इसके अलावा भारत ब्राजील, मैक्सिको, दक्षिण अफ्रीका, यूक्रेन के राष्ट्रपतियों और ऑस्ट्रेलिया के प्रधानमंत्री को भी शिखर सम्मेलन में आमंत्रित किया गया है। पीएम मोदी ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर लिखा, प्रधानमंत्री मार्क कार्नी से फोन पर बात कर खुशी हुई। मैंने उन्हें हाल ही में हुए चुनाव में जीत की बधाई दी और इस महीने के अंत में कनानास्किस में होने वाले ल7 शिखर सम्मेलन में आमंत्रण के लिए धन्यवाद दिया। उन्होंनेड्ढ कहा कि भारत और कनाडा दोनों ही जीवंत लोकतंत्र हैं ।

सवा सौ साल पुराना सपना हुआ साकार

वंदे भारत एक्सप्रेस कश्मीर के लिए रवाना, मोदी ने दिखाई हरी झंडी

जयपुर टाइम्स

जम्मू(एजेंसी)।। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कटड़ा रेलवे स्टेशन से श्रीनगर के लिए वंदे भारत को हरी झंडी दिखा दी है। इस तरह अब कन्याकुमारी से कश्मीर रेल मार्ग से जुड़ गया है। पीएम मोदी ने इससे पहले रियासी में मौजूद चिनाब ब्रिज का उद्घाटन किया। यह दुनिया का सबसे ऊंचा रेल ब्रिज है। इस पुल ने कश्मीर तक ट्रेन पहुंचाने में एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है। चिनाब ब्रिज एक स्टील और कंक्रीट से बना आर्च ब्रिज है। यह रियासी जिले के बक्कल और कौरी गांवों को जोड़ता है। कश्मीर तक रेल कनेक्टिविटी में इसका बड़ा योगदान है। खास बात यह है कि यह ब्रिज कुतुब मीनार से पांच गुना ऊंचा है। इसके साथ ही पेरिस में मौजूद एफिल टॉवर से यह 35 मीटर ऊंचा है। पीएम मोदी ने चिनाब ब्रिज के बाद भारत के पहले केबल-स्टेड अंजी पुल का भी उद्घाटन किया। कश्मीर तक रेल लाने का सपना उधमपुर-श्रीनगर-बारामूला रेलवे लिंक परियोजना के अंतर्गत पूरा हुआ है। यह प्रोजेक्ट का अंतिम चरण था, जिसके पूरा होने में 70 साल का समय लगा है। कटड़ा रेलवे स्टेशन से श्रीनगर के लिए वंदे भारत एक्सप्रेस को हरी झंडी दिखाने से पहले प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने ट्रेन में सवार स्कूली बच्चों से बातचीत भी की। उन्होंने ट्रेन में मौजूद रेलवे कर्मचारियों से भी बातें की। इससे पहले पीएम मोदी चिनाब ब्रिज का निरीक्षण करने के दौरान पुल के पास बने व्यू पॉइंट पर गए, जहां उन्हें अधिकारियों ने परियोजना से जुड़ी जानकारी दी। उनके साथ केंद्रीय मंत्री अश्विनी वैष्णव और जितेंद्र सिंह और मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला भी मौजूद रहे। कश्मीर तक ट्रेन लाने के लिए उधमपुर -श्रीनगर-बारामूला रेल लिंक के तहत कार्य किया गया। इसमें दुनिया का सबसे ऊंचा रेल पुल चिनाब ब्रिज जो नदी से 359 मीटर ऊंचाई पर है। इसके साथ ही केबल स्टेड अंजी खड्ड पुल भी शामिल हैं। यह ब्रिज 331 मीटर ऊंचाई पर है। उधमपुर- श्रीनगर-बारामूला रेल लिंक परियोजना इंजीनियरिंग में एक नया चमत्कार माना गया है। कश्मीर तक रेल का सपना, दशकों का नहीं है। बल्कि यह एक सदी से भी पुराना है। महाराजा हरि सिंह के पोते और पूर्व सदर-ए-रियासत कर्ण सिंह के पुत्र विक्रमादित्य सिंह के मुताबिक, उन्हें गर्व है कि 130 साल पहले डोगरा शासक की योजना आखिरकार साकार हो गई है। यह एक परियोजना थी, जो एक सदी से भी अधिक समय तक अधूरी रही थी। लेकिन अब कश्मीर तक ट्रेन का सपना पूरा हो गया है।

CMYK

अलवर जयपुर टाइम्स

जयपुर, शनिवार
7 जून, 2025

राजकीय कन्या महाविद्यालय, बहादुरपुर में बीए प्रथम वर्ष के प्रवेश प्रारंभ, आवेदन की अंतिम तिथि 16 जून

जयपुर टाइम्स

अलवर(निसं.)। राजकीय कन्या महाविद्यालय, बहादुरपुर में बीए प्रथम वर्ष में प्रवेश के लिए ऑनलाइन आवेदन प्रारंभ हो गए हैं। जहां आवेदन की अंतिम तिथि 16 जून रखी गई है। प्राचार्य डॉ. अनूप सिंह व नोडल अधिकारी (प्रवेश) डॉ. महेश गोठवाल ने बताया कि सत्र 2025-26 में महाविद्यालय में बीए प्रथम वर्ष में पास कोर्स के लिए 160 सीटों पर प्रवेश होना है। महाविद्यालय में हिंदी साहित्य, अंग्रेजी साहित्य, राजनीति विज्ञान, भूगोल, इतिहास, लोक प्रशासन व अर्थशास्त्र विषयों में प्रवेश लिया जा सकता है। महाविद्यालय में प्रवेश के इच्छुक विद्यार्थी डीसीई की साइट से ऑनलाइन आवेदन कर सकते है। प्रवेश कार्यक्रम के अनुसार प्रवेश हेतु आवेदन करने की अंतिम तिथि 16 जून 2025 है। वहीं 20 जून 2025 को अंतिम वरीयता सूची व प्रतीक्षा सूची का प्रकाशन किया जावेगा। महाविद्यालयों में ऑनलाइन आवेदन करने वाले विद्यार्थियों की आवेदन में कमी पूर्ति के लिए प्रवेश समिति द्वारा मोबाईल पर संपर्क किया जाता है। ऐसे में आवेदनकर्ता अपने सही मोबाइल न बर से आवेदन करे और मोबाईल ऑन रखे। विद्यार्थी ऑनलाइन आवेदन से संबन्धित किसी भी प्रकार की जानकारी प्राप्त करने के लिए नोडल अधिकारी डॉ. महेश गोठवाल व प्रवेश प्रभारी डॉ. हितेश शर्मा से संपर्क किया जा सकता है।

जिला अस्पताल की लिफ्ट एक सप्ताह से ख़राब

मरीजों को करना पड़ रहा परेशानी का सामना

जयपुर टाइम्स

अलवर(निसं.) शहर के जिला अस्पताल में पिछले एक सप्ताह से लिफ्ट खराब पड़ी है जिससे मरीजों और अस्पताल स्टाफ को भारी परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। प्रमुख चिकित्सा अधिकारी डॉ. सुनील चौहान ने बताया कि लिफ्ट खराब होने की जानकारी यूआईटी को दी जा चुकी है। पहले भी जब लिफ्ट खराब हुई थी, तब उसे ठीक किया गया था लेकिन अब फिर से खराब हो गई है। इस बार भी यूआईटी को सूचना दे दी गई है, लेकिन अभी तक कोई समाधान नहीं हुआ है। लिफ्ट न चलने के कारण मरीजों को सीढ़ियों से ऊपर जाना पड़ रहा है, जिससे बुजुर्ग, विकलांग और गंभीर मरीजों को खासा दिक्कत हो रही है। अस्पताल स्टाफ को भी मरीजों को इधर-उधर ले जाने में कठिनाई हो रही है। प्रशासन से जल्द लिफ्ट की मरम्मत या बदलाव की मांग की जा रही है ताकि मरीजों को राहत मिल सके।

पंचायत समिति की साधारण सभा की बैठक आयोजित

बैठक मे छाए रहे पानी, बिजली व सड़क के मुद्दे

जयपुर टाइम्स

राजगढ़(निसं.) शुक्रवार को पंचायत समिति सभागार में साधारण सभा की बैठक का आयोजन पंचायत समिति प्रधान भौंरी देवी राठौड़ की अध्यक्षता में आयोजित हुई। बैठक में उपस्थित सरपंच व पार्षदों ने बिजली, पानी, रास्ता खोलों अभियान, सड़क, चिकित्सा, कृषि आदि मुद्दों पर चर्चा हुई प्रधान भौंरी देवी राठौड़ ने अधिकारियों को आगामी बैठक से पूर्व कार्यवाही की अनुपालना रिपोर्ट भिजवाने के निर्देश दिए। बैठक में कनिष्ठ सहायक राजेंद्र कुमार महावर के साथ मारपीट की घटना करने वालों को गिरफ्तार कर नियमानुसार कार्रवाई करने की बात कही इस दौरान तहसीलदार वी.पी. सिंह, अतिरिक्त मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी कमल कुमार मीना, विकास अधिकारी विक्रम सिंह गुर्जर, सरपंच संघ अध्यक्ष राजेश मीना, भाजपा मंडल अध्यक्ष प्रकाश दीक्षित, मुकेश मण्डावरी, पंचायत समिति सदस्य राकेश खंडेलवाल, सरपंच सीमा मीना, कमलेश कुमार मीना, राधा मीना सहित जनप्रतिनिधि व विभिन्न विभागों के अधिकारी मौजूद रहे।

18 साल में हजारों लोगों को निःशुल्क कम्प्यूटर साक्षरता का प्रशिक्षण, बनाया आत्मनिर्भर

जयपुर टाइम्स

सुजानगढ़(नि.सं.)। कम्प्यूटर को लेकर अब लोगों में साक्षरता बढ़ी है और कम्प्यूटर अब लोगों की जीवन प्रणाली का काफी महत्वपूर्ण हिस्सा बन गया है। खासकर उन लोगों की जो, शारीरिक मेहनत मजदूरी का काम नहीं करते। ऐसे में सुजानगढ़ में एक ऐसा ट्रस्ट इस क्षेत्र में 18 वर्षों से लगातार काम कर रहा है, जो अब तक हजारों लोगों को निःशुल्क कम्प्यूटर साक्षरता उपलब्ध करवा चुका है। यहां पर कम्प्यूटर साक्षरता प्राप्त कर चुके कई युवक-युवतियां निजी क्षेत्र में नौकरियां भी हासिल कर चुके हैं। नाथोतालाब के पास श्रीनथमल जानकीलाल खेतान ट्रस्ट जयपुर की ओर से स्थित श्रीनथमल जानकीलाल खेतान कम्प्यूटर सेंटर में प्रत्येक साल एक हजार से 15 सौ लोग कम्प्यूटर साक्षरता प्राप्त कर रहे हैं। कम्प्यूटर प्रशिक्षक कपिल देव माटा ने बताया कि 21 जुलाई 2007 को श्रीनथमल जानकीलाल खेतान ट्रस्ट जयपुर निःशुल्क कम्प्यूटर प्रशिक्षण प्रारंभ किया गया, ताकि प्रत्येक व्यक्ति के मन से कम्प्यूटर का भय निकल सके और वह आराम से कम्प्यूटर संचालन कर सके। इसके लिए कम्प्यूटर का बेसिक, एमएस ऑफिस और टेली का प्रशिक्षण शुरू किया गया। खास बात ये है कि इस सेंटर में कम्प्यूटर प्रशिक्षण पाने के लिए कोई सीमाओं का निर्धारण नहीं किय गया और 6 से लेकर 60 साल तक के व्यक्ति यहां आवेदन कर कम्प्यूटर प्रशिक्षण ले सकते हैं। माटा ने बताया कि धीरे-धीरे लोगों का रूझान बढ़ा और प्रत्येक साल करीब 13 सौ से ज्यादा लोगों की ओर से कम्प्यूटर प्रशिक्षण लिया जाने लगा।

जिले के प्रभारी मंत्री डॉ. किरोडी लाल मीणा ने थानागाजी के गांव जोधावास में आयोजित वंदे गंगा जल संरक्षण-जन अभियान के कार्यक्रम में की शिरकत

जोहड का निरीक्षण कर किया जल पूजन

जयपुर टाइम्स

अलवर(निसं.)। जिले के प्रभारी मंत्री एवं कृषि एवं उद्यानिकी मंत्री डॉ. किरोडी लाल मीणा ने थानागाजी के गांव जोधावास में आयोजित वंदे गंगा जल संरक्षण-जन अभियान के कार्यक्रम में शिरकत कर रिलेक्सो कंपनी के सीएसआर फंड से निर्मित चैक डेम का उद्घाटन किया। प्रभारी मंत्री डॉ. मीणा ने कहा कि मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा अगुवाई में राज्य सरकार द्वारा प्रदेशभर में 20 जून तक भूजल स्तर बढ़ाने तथा जल संचयन के उद्देश्य से चलाए जा रहे वंदे गंगा जल संरक्षण-जन अभियान का मुख्य उद्देश्य जल संचय संरचनाओं का निर्माण, जल स्रोतों की साफ-सफाई, परंपरागत जलाशयों का पुनरूद्धार आदि कार्य कराए जाने के साथ-साथ सामूहिक सहभागिता से पर्यावरण व जल संरक्षण गतिविधियों के माध्यम से आमजन को जल व पर्यावरण का संरक्षण करने हेतु प्रेरित करना है। उन्होंने कहा कि पानी की हर बून्द गंगा के समान है इस सोच के साथ हमें जल को संरक्षित करना बेहद जरूरी है। उन्होंने कहा कि जहां पेड-पौधे होते हैं वहां खुशहाली आती और खेती अच्छी होती है अतः जल संरक्षण के साथ-साथ पर्यावरण का संरक्षण करना भी हमारा नैतिक दायित्व है। उन्होंने जल संरक्षण की महत्ता एवं जल संरक्षण पखवाडे के संबंध में विस्तृत जानकारी दी तथा आमजन को अभियान से जुडकर इसे जन-जन की भागीदारी का अभियान बनाने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि वंदे गंगा जल संरक्षण-जन अभियान राज्य सरकार का महत्वाकांक्षी अभियान है,जिसके तहत सरकार जल संसाधनों का संरक्षण और प्रबंधन करने का प्रयास कर रही है, जिसका उद्देश्य राज्य के ग्रामीण क्षेत्रों में पेयजल की समस्या का समाधान करना है। उन्होंने कहा कि जल संरक्षण हेतु राज्य सरकार वाटर हार्वेस्टिंग को बढ़ावा दे रही है, जिससे वर्षा जल का संचयन किया जा सके। अभियान का उद्देश्य वर्षा जल का संचयन करना और जल संसाधनों का बेहतर उपयोग करना, जल प्रबंधन हेतु जल संसाधनों का प्रभावी प्रबंधन करना और जल की बर्बादी को रोकना एवं जल संसाधनों का संरक्षण करना और भविष्य की पीढ़ियों के लिए जल संसाधनों को सुरक्षित करना है।

जोहड का निरीक्षण कर किया जल पूजन

प्रभारी मंत्री डॉ. मीणा ने वंदे गंगा जल संरक्षण-जन अभियान कार्यक्रम के तहत बने जोहड का निरीक्षण किया। उन्होंने कहा कि जोहड, तालाब पानी उपलब्ध कराने के साथ-साथ भूजल स्तर को भी बनाए रखने में महती भूमिका निभाते है। अतः हमें इनका संरक्षण करना चाहिए तथा इन्हें साफ-सुथरा रखना भी सभी लोगों का नैतिक दायित्व है। इस दौरान उन्होंने जल पूजन कर अच्छी वर्षा होने व प्रदेश की खुशहाली की कामना की। उन्होंने बरगद का पौधा लगाकर पर्यावरण संरक्षण का संदेश दिया। इस दौरान स्थानीय महिलाओं के द्वारा जल संचय का संदेश देते हुए गए गए क्षेत्रीय लोकगीतों पर मंत्राी डॉ. मीणा ने अनूठे अंदाज में महिलाओं के साथ सिर पर कलश रखकर थिरके। इस मौके पर प्रभारी मंत्री डॉ किरोड़ी मीणा ने बताया कि थानागाजी क्षेत्रा की समस्याओं का उचित समाधान कराने का दिया। साथी ही उन्होंने क्षेत्र के खाद बीज विक्रेताओं को निर्देश दिए कि खाद बीज विक्रय में किसी प्रकार की लापरवाही बरतने पर कानूनी कार्रवाई की जाएगी। इस दौरान थानागाजी विधायक कान्ती प्रसाद मीणा, रोहिताश घांघल, हरिशंकर खंडेलवाल, प्रियंका शर्मा सहित प्रबुद्ध व्यक्ति एवं बडी संख्या में ग्रामीण मौजूद रहे।

साईबर फ्रॉड करते हुए 2 आरोपी गिरफ्तार एंव साईबर फ्रॉड में प्रयुक्त उपकरण बरामद

जयपुर टाइम्स

अलवर(निसं.)। जिला पुलिस अधीक्षक संजीव नैन ने जानकारी देते हुए बताया कि जिले में ऑनलाईन ठगी, सैक्सटोर्शन, ओएलएक्स आदि फ्रॉड के विरुद्ध डॉ0 तेजपाल सिंह अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक (मुख्यालय) व मुकेश चौधरी पु.उ.अ. यातायात एवं सुनील प्रसाद शर्मा वृताधिकारी वृत्त रामगढ़ अलवर के नेतृत्व में पुलिस टीम का गठन कर ऑनलाईन ठगी करने वालो (साईबर अपराध) के विरुद्ध साईबर फ्रॉड प्रभावित गावों में दबिश देकर 02 आरोपी गिरफ्तार, साईबर फ्रॉड में लिये जा रहे उपकरण बरामद किये गये। थाना रामगढ के थानाधिकारी डॉ विजेन्द्र सिंह के नेतृत्व में गठित टीम द्वारा साईबर फ्रॉड के विरुद्ध कार्यवाही करते हुए आसूचना तंत्र व तकनीकी साधनों की सहायता से दबिश देकर कार्यवाही करते हुए आरोपी अपनी फेसबुक सहित अन्य सोशल मीडिया अकाउन्ट की प्रोफाइल पर वर्दी में अधिकारी की डीपी लगा कर तथा फेसबुक सहित अन्य सोशल मीडिया तथा वाणिज्यिक वेबसाइटों पर विज्ञापन डालता है। जिसमें अपना स्थानांतरण किसी दुर्गम स्थान पर होने के कारण अपना घरेलू सामान इत्यादि वहां ले जाने में असमर्थता बता कर उसे सस्ते दामों पर बेचने तथा होम डिलीवरी का ऑफर देता है। जब कोई ग्राहक संपर्क करता है तो उससे व्हाट्सएप नंबर पर चैटिंग कर उन्हें विश्वास में लेकर एक तिहाई राशि एडवांस मांगता है। ग्राहक विश्वास करें इसके लिए वर्दी में अधिकारी की फोटो को अपनी फोटो बता कर भेजता है तथा सामान लोड करते समय की इंटरनेट से डाउनलोडेड फोटो डालता है। जिससे ग्राहक को भरोसा हो जाता है कि उसका सामान होम डिलीवरी के लिए रवाना कर दिया गया है, आरोपी यह आईडी जिस मोबाइल नंबर से निर्मित की जाती है वह नंबर फर्जी होता है इसके पश्चात विभिन्न फर्जी नाम से बने खातों और उनसे संबंधित यूपीआई में पैसे मंगवा लेता है। पुलिस ने उसमान पुत्र गनी खां उम्र 21 साल निवासी कोटा खुर्द पुलिस थाना रामगढ़ को गिरफ्तार कर आरोपी से एक एंड्रोएड मोबाइल व 1 कीपैड फोन बरामद किया। वहीं थाना गोविन्दगढ में थानाधिकारी बनेसिहं के नेतृत्व में साईबर फ्रॉड के विरुद्ध कार्यवाही करते हुए आसूचना तंत्र व तकनीकी साधनों की सहायता से गांव कचरोटी जंगल में दबिश देकर कार्यवाही करते हुए विभिन्न सोशल मीडिया अकाउंट फेसबुक, ट्विटर, इंस्टाग्राम व मोबाईल नंबरों पर सैक्सटोर्शन के माध्यम से ऑनलाईन ठगी करते हुए आरोपी रिजवान पुत्र उस्मान खां निवासी पीपलू थाना गोपालगढ जिला डीग को मय 1 मोबाईल व ठगी राशि 28 हजार रुपए के गिरफ्तार 1 एन्ड्रोड मोबाईल एंव ठगी राशि 28 हजार रूपए बरामद किये।

शहीद परिवारों का किया सम्मान

जयपुर टाइम्स

राजगढ़(निसं.)। उपखण्ड क्षेत्र के भजेड़ा-दुब्बी गांव में स्थित मीन भगवान मंदिर के 15 वें वार्षिक लक्खी मेला इस बार देश के वीर जवान सैनिकों एवं सेना के सम्मान को समर्पित रहा। जिसमें वीर शहीद जवानों की शहादत को याद करते हुए शहीद जवानों के परिवारों का सम्मान क्षेत्र की समस्त जनता व मेला कमेटी द्वारा किया गया। जिसके तहत अलवर व दौसा जिले के 17 शहीद परिवारों को सम्मानित किया गया। मीडिया प्रभारी अमीचंद मीना ने बताया कि कार्यक्रम की शुरुआत उपस्थित समस्त लोगो ने राष्ट्रगान से की, उसके बाद वीर शहीदों को श्रद्धांजलि अर्पित की गई। उपस्थित लोगों ने यह प्रण लिया की हमे अपनी मातृभूमि और देश की सेवा के लिए हमेशा तैयार रहना हैं और जब- जब देश को जरूरत होगी। हम देश व देश की सेना और अपना सर्वोच्च बलिदान देने वाले अपने शहीद भाइयो के परिवार के साथ हमेशा रहेंगे। सबने पड़ोसी देश पाकिस्तान के पहलगाम में कायराना आतंकी हमले की निंदा की और पाकिस्तान को चेतावनी देते हुए कहा की जैसा इस बार भारतीय सेना ने उनके घर में घुसकर मुंहतोड़ जवाब दिया हैं अगर वो अपनी हरकतों से बाज नहीं आया तो उसको गंभीर परिणाम भुगतने होंगे इस बार मेले में क्षेत्र व दूर दराज से हज़ारो की संख्या में माता-बहनों, युवाओं,बुजुर्गों पंच पटेलो ने भाग लिया। इस मौके पर मीन भगवान कमेटी अध्यक्ष रामकृपाल मीना, उपाध्यक्ष प्यारेलाल, विधायक थानागाजी कांती प्रसाद मीना, हेमन्त मीना आईआरएस, रामप्रसाद पंच दुब्बी, सुल्तान उपसचिव ,रामगोपाल, सीमा सरपंच भजेड़ा, राजेश सरपंच, कालू सरपंच प्रतिनिधि पलवा, सरपंच रामकिशन, कमलेश सरपंच, घनश्याम शर्मा, मेला कमेटी सदस्य मनोहर लाल, हरसहाय गार्ड, पटवारी, रामचंद्र बाऊजी, गिर्राज प्रसाद, हरी प्रसाद, श्रीनिवास गार्ड, रवि कुमार,आदि मौजूद रहे।

तीन दिवसीय देव दर्शन यात्रा को किया रवाना

जयपुर टाइम्स

अलवर(निसं.)। श्री श्याम यात्रा मण्डल समिति (रजि.), अलवर द्वारा निर्जला एकादशी को तीन दिवसीय देव दर्शन यात्रा बस की रवानगी नारियल फोड़ कर की गई। यात्रा संयोजक दिनेश अग्रवाल एवं महेंद्र गोयल ने बताया की समिति द्वारा पिछले 30 वर्षों से प्रतिमाह प्रमुख धार्मिक स्थलों के दर्शन करवाती आ रही हैं। इसी क्रम में इस वर्ष भी निर्जला एकादशी पर समिति द्वारा अलवर से खाटूश्याम जी, सांवरिया सेठ चित्तौगढ़, श्रीनाथ जी, एक लिंग महादेव जी नाथद्वारा, पुष्कर जी के दर्शन कराते हुए वापस अलवर आएगी।

खरबूजा एकादशी पर मंदिरों में हुए धार्मिक आयोजन

जयपुर टाइम्स

राजगढ़(निसं.) कस्बे सहित आसपास के क्षेत्र में शुक्रवार को निर्जला एकादशी पर मंदिरों में धार्मिक आयोजन हुए। महिलाओं ने निर्जला एकादशी का उपवास रख कर मंदिरों में खरबूजा, पंखी तथा मिट्टी के घड़े का दान किया। श्री जगन्नाथ मंदिर महंत एडवोकेट मदनमोहन शास्त्री ने बताया कि जेष्ठ माह की शुक्ल पक्ष की एकादशी को निर्जला एकादशी या भीम एकादशी कहते हैं इस दिन मंदिरों में खरबूजा, पानी से भरे घड़े और पंखे दान करने का विशेष महत्व है मंदिर में अल सुबह से ही श्रद्वालुओं की भीड़ रही। महिलाओं ने दान पुण्य करके धर्म लाभ कमाया। वहीं कस्बे के राधा गोविंद मंदिर में भगवान गोविन्द देव जी की विशेष झांकी सजाई गई। मंदिरों में भजन-कीर्तन का आयोजन किया गया वहीं कस्बे सहित आसपास के क्षेत्र में राहगीरों के लिए मीठे शरबत, ठण्डाई आदि का वितरण किया।

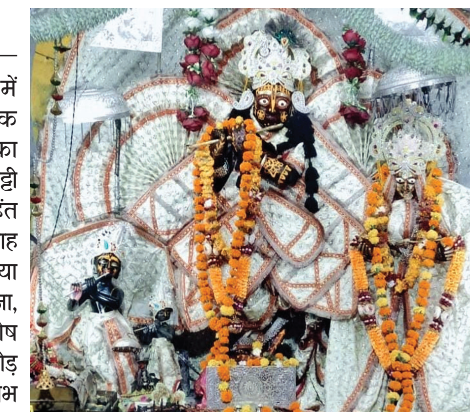

वंदे गंगा-जल संरक्षण जन अभियान

धरती पर जीवन का अस्तित्व जल और हरियाली पर टिकाः रामहेत सिंह यादव

जयपुर टाइम्स

खैरथल-तिजारा(निसं.)। निर्जला एकादशी के पावन अवसर पर बंबोरा बावड़ी पर वंदे गंगा - जल संरक्षण जन अभियान द्वितीय दिन भव्य कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस आयोजन के माध्यम से आमजन को जल संरक्षण, प्लास्टिक मुक्ति एवं पारंपरिक जल स्रोतों के पुनर्जीवन के लिए प्रेरित किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत सरोवर जल पूजन से हुई। इसके पश्चात उपस्थित अतिथिगणों ने सरोवर की पाल पर हरियालो राजस्थान अभियान के तहत पौधारोपण किया। तत्पश्चात विभिन्न गणमान्य अतिथियों ने जल, पर्यावरण और प्रकृति संरक्षण के महत्व पर विचार व्यक्त किए। पूर्व विधायक रामहेत सिंह यादव ने अपने संबोधन में कहा कि धरती पर जीवन का अस्तित्व जल और हरियाली पर टिका है। जल केवल एक प्राकृतिक संसाधन नहीं, बल्कि यह जीवन का आधार है - एक ऐसा तत्व जिसे हमें श्रद्धा और जिम्मेदारी के साथ सहेजना चाहिए। आज, जब हम जल संकट और पर्यावरणीय असंतुलन जैसी चुनौतियों से जूझ रहे हैं, तो समय आ गया है कि हम सिर्फ चिंता नहीं, बल्कि ठोस कार्य करें, सरकार द्वारा इस दिशा में पर्यावरण को सहेजने हेतु इस अभियान कि शुरुआत की गई। हमें अपने आसपास के जल स्रोतों को बचाने के लिए संगठित होकर प्रयास करने होंगे। भूजल स्तर को फिर से जीवन देना और अधिक से अधिक वृक्षारोपण करना आज की सबसे बड़ी आवश्यकता है। यह कार्य सरकार का ही नहीं, हम सबका साझा दायित्व है। उन्होंने सभी से अपील कर कहा कि एक संकल्प लें - कम से कम 5 पौधे अवश्य लगाएं। उन्होंने बताया कि 78 करोड़ की परियोजना के माध्यम से किशनगढ़ बास के 32 गांव को रुंध गिदावड़ा से पेयजल आपूर्ति की जाएगी। जिला कलेक्टर किशोर कुमार ने कहा कि राजस्थान की संस्कृति सदैव जल संरक्षण की रही है। आज की पीढ़ी को पारंपरिक जल स्रोतों की रक्षा कर भविष्य के लिए उदाहरण प्रस्तुत करना होगा। उन्होंने आज हम पर्यावरण संरक्षण को अपनी जिम्मेदारी समझेंगे, तभी आने वाली पीढ़ियों को स्वच्छ और सुरक्षित वातावरण मिल सकेगा। उन्होंने कहा कि जल पृथ्वी पर सीमित मात्रा में है जिसका हमें सदुपयोग कर भूजल स्तर को बढ़ाने हेतु जल संरक्षण के विभिन्न उपाय करने चाहिए। इस अवसर पर 111 तुलसी पौधे वितरित किए गए और जल संकल्प शपथ दिलवाई गई। कार्यक्रम के दौरान कलश यात्रा एवं जागरूकता रैली को उपस्थित जनप्रतिनिधियों द्वारा हरी झंडी दिखाकर रवाना किया गया।

बंबोरा बावड़ीः परंपरा और संरक्षण का सुंदर संगम

बंबोरा गांव स्थित ऐतिहासिक बावड़ी, जिसका निर्माण मदनलाल गुप्ता के पूर्वज सुंढाराम द्वारा करवाया गया था, आज भी जल संरक्षण का एक प्रेरणादायक उदाहरण बनी हुई है। यह बावड़ी न केवल ग्रामीणों के लिए टहलने और शांति से समय बिताने का स्थान है, बल्कि जल-संरक्षण की परंपरा को जीवित रखने का प्रतीक भी है। यहां की हरियाली और प्राकृतिक वातावरण ने पत्रकारों को विशेष रूप से प्रभावित किया।

नंगली ओझाः चारागाह भूमि पर हरियाली से हरित अर्थव्यवस्था की ओर

नंगली ओझा गांव में चारागाह विकास कार्य के अंतर्गत लगभग 22 बीघा भूमि पर 2500 पौधे लगाए गए। आधुनिक तकनीक से सुसज्जित यह क्षेत्र अब पर्यावरणीय संवर्धन के साथ-साथ ग्रामीण अर्थव्यवस्था को भी सशक्त कर रहा है। ड्रिप सिंचाई प्रणाली और सोलर ऊर्जा से संचालित चार बोरिंग की मदद से पौधों को नियमित जल आपूर्ति की जा रही है, जिससे अधिकांश पौधे पूरी तरह जीवित हैं और अच्छे से विकसित हो रहे हैं। इस अवसर पर उपखंड अधिकारी किशनगढ़ बास मनीष कुमार जाटव, भाजपा जिलाध्यक्ष महासिंह चौधरी, भाजपा मंडल अध्यक्ष मनोज मित्तल, सतीश सिंघल, व्यापार महासंघ अध्यक्ष परमानंद लख्यानी सहित जनप्रतिनिधि एवं आमजन उपस्थित रहे।

चंडीगढ़ में उत्तर क्षेत्रीय राज्यों के ऊर्जा मंत्रियों का सम्मेलन, पिट हैड के स्थान पर राज्य में ही थर्मल प्लांट को करें अनुमत -ऊर्जा मंत्री

जयपुर टाइम्स

जयपुर(कासं.)। ऊर्जा राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) हीरालाल नागर शुक्रवार को चंडीगढ़ में उत्तर क्षेत्रीय राज्यों तथा केन्द्र शासित प्रदेशों के ऊर्जा मंत्रियों के सम्मेलन में सम्मिलित हुए। केन्द्रीय विद्युत मंत्री मनोहर लाल की अध्यक्षता में आयोजित इस सम्मेलन में ऊर्जा मंत्री ने राज्य से संबंधित विषयों को प्रमुखता से रखा। उन्होंने आग्रह किया कि कोयला स्रोतों से 1 हजार किलोमीटर से अधिक दूरी होने की स्थिति में पिट हैड पर ही थर्मल प्लांट लगाने की अनिवार्यता पर पुनर्विचार करते हुए संयुक्त उद्यम के तहत छबड़ा एवं कालीसिंध में 3200 मेगावाट के थर्मल प्लांट लगाने की अनुमति प्रदान की जाए। नागर ने प्रस्तावित 1 हजार मेगावाट की बैटरी स्टोरेज परियोजना के अतिरिक्त 5 हजार मेगावाट की बैटरी स्टोरेज योजना के लिए केन्द्रीय सहायता प्रदान करने की भी मांग रखी। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार द्वारा वर्ष 2030 तक लगभग 90 गीगावाट सौर ऊर्जा उत्पादन क्षमता प्राप्त करने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। वर्ष 2028-29 तक प्रदेश की अधिकतम मांग 26.5 गीगावाट तक पहुंचने का अनुमान है। इस अधिकतम मांग को पूरा करने के लिए 18.5 गीगावाट क्षमता के बैटरी एनर्जी स्टोरेज सिस्टम विकसित करने की आवश्यकता है। जिसे प्रतिवर्ष 5 हजार मेगावाट बैटरी एनर्जी स्टोरेज सिस्टम क्षमता जोड़कर प्राप्त किया जा सकता है। ऐसे में प्रतिवर्ष 5 हजार मेगावाट स्टोरेज क्षमता विकसित करने के लिए भारत सरकार राज्य को वीजीएफ समर्थन प्रदान करे ताकि प्रदेश के बैटरी एनर्जी स्टोरेज से संबंधित लक्ष्यों की पूर्ति की जा सके। केन्द्रीय विद्युत मंत्री ने ऊर्जा मंत्री द्वारा उठाए गए इन विषयों को गंभीरता से सुना और सकारात्मक नजरिये से विचार का आश्वासन दिया। सम्मेलन में हरियाणा के ऊर्जा मंत्री अनिल विज, उत्तर प्रदेश के बिजली मंत्री अरविन्द कुमार शर्मा, दिल्ली सरकार के ऊर्जा मंत्री आशीष सूद, पंजाब सरकार के ऊर्जा मंत्री हरभजन सिंह आदि ने भी विचार व्यक्त किए। इंटर स्टेट ट्रांसमिशन परियोजनाओं, साइबर सुरक्षा पहलुओं, बिजली की ग्रीष्मकालीन मांग के बेहतर प्रबंधन, विद्युत वितरण निगमों की वित्तीय स्थिति में सुधार आदि विषयों पर चर्चा की गई।

राज्यपाल ने सारणेश्वर महादेव के दर्शन कर सब के लिए सुख समृद्धि और खुशहाली की कामना की

जयपुर टाइम्स

जयपुर/सिरोही(निसं.)। राज्यपाल हरिभाऊ बागड़े ने शुक्रवार सायं सिरोही स्थित सारणेश्वर महादेव के दर्शन व पूजा अर्चना की। उन्होंने इस दौरान देश एवं प्रदेश की सुख समृद्धि और खुशहाली की कामना की।

वंदे गंगा अभियान के तहत चिकित्सा संस्थानों पर चलाया गया सफाई अभियान

जयपुर टाइम्स

धौलपुर(निसं.)। वंदे गंगा जल संरक्षण जन अभियान के अंतर्गत जिले में विभिन्न स्तरों पर विभिन्न विभागों द्वारा पर्यावरण संरक्षण एवं वर्षा जल संग्रहण तथा स्वच्छता से सम्बन्धित कार्यक्रम क्रियान्वित किये जाने हैं। इसी क्रम में शुक्रवार को मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी कार्यालय सहित जिले के सभी चिकित्सा संस्थानों में श्रमदान और साफ सफाई का कार्य किया गया। सीएमएचओ डॉ. धर्म सिंह मीणा ने बताया कि राज्य सरकार के निर्देश पर अभियान के तहत सभी चिकित्सा संस्थानों में विशेष अभियान चला कर सफाई कार्य किया गया। सफाई अभियान के दौरान सभी अधिकारी कर्मचारियों ने श्रमदान कर लम्बे समय से जमा कचरे का निस्तारण किया। उन्होंने कहा कि सफाई होने से कार्मिकों के साथ आमजन को भी साफ-सुथरा और सकारात्मक माहौल प्राप्त होगा। कार्यालयों और संस्थानों में स्वच्छता से कर्मचारियों का मनोबल ऊंचा होगा, वहीं आमजन को भी सकारात्मक संदेश जाएंगे। साथ ही संक्रमणों और बीमारियों से भी बचाव होगा। ब्लॉक और निचले स्तर पर भी आदेश जारी कर नियमित रूप से साफ सफाई रखने के निर्देश दिए गए है।

जल जीवन मिशन के कार्यो का निरीक्षण करने 4 सदस्यीय दल 9 एवं 10 जून को आएगें धौलपुर

जयपुर टाइम्स

धौलपुर(निसं.)। संयुक्त सचिव शिक्षा मंत्रालय स्कूल शिक्षा एवं साक्षरता विभाग नई दिल्ली एवं केन्द्रीय नोडल अधिकारी जल जीवन मिशन सुश्री अर्चना शर्मा अवस्थी, तकनीकी अधिकारी चंदन बनर्जी, यूएस जल जीवन मिशन जल शक्ति मंत्रालय भारत सरकार सुमित झा एवं मुख्य अभियन्ता जेजेएम एवं स्टेट नोडल अधिकारी अजय सिंह राठोड़ का जिले में 9 एवं 10 जून का भ्रमण कार्यक्रम रहेगा। अतिरिक्त जिला कलक्टर हरिराम मीना ने बताया कि प्रस्तावित भ्रमण कार्यक्रम के दौरान जिले में भ्रमण, निरीक्षण तथा विभागीय अधिकारियों एवं स्टेक हॉर्ल्डस के साथ बैठक का आयोजन किया जाएगा। उन्होंने बताया कि भ्रमण कार्यक्रम के दौरान समस्त आवश्यक व्यवस्थाऐं सुनिश्चित करने के लिए मुख्य कार्यकारी अधिकारी जिला परिषद आव्हाद निवृत्ति सोमनाथ को लाईजनिंग अधिकारी एवं अधीक्षण अभियन्ता जन स्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग राजकिरण यादव को अतिरिक्त लाईजनिंग अधिकारी नियुक्त किया गया है।

विद्युत आपूर्ति रहेगी बाधित

जयपुर टाइम्स

धौलपुर(निसं.)। 33, 11 केवी सब-स्टेशन रीको पर मरम्मत व रख-रखाव का कार्य होने के कारण 8 जून को विद्युत आपूर्ति बाधित रहेगी। सहायक अभियन्ता एचटीएम जयपुर डिस्कॉम धौलपुर ने बताया कि 11 केवी फीडर नम्बर 2 मयूरी, फीडर नम्बर 3 शरदा सेलवेंट, फीडर नम्बर 4 न्यू रीको, फीडर नम्बर 7 अमरनाथ मिल्क फूड, नीलकान्त पेपर मील, राम कॉस्टिरिंग, मैक्सों मेडीकल, मालोनी, फीडर नम्बर 10 प्रताप कोल्ड, फीडर नम्बर 5 मिडवे, फीडर नम्बर 6 प्रकाश कॉलेज एवं फीडर नम्बर 1 भगवान देवी फीडरों की 8 जून को प्रातः 10 बजे से दोपहर 1 बजे तक विद्युत आपूर्ति बाधित रहेगी।

गुर्जर आन्दोलन को लेकर की चर्चा

जयपुर टाइम्स

सुजानगढ़(नि.सं.)। श्री देव नारायण भगवान मंदिर ट्रस्ट समिति की बैठक का आयोजन देवनारायण मंदिर में किया गया। बैठक में गुर्जर समाज के लोगों ने भाग लिया। इस अवसर पर गुर्जर आरक्षण संघर्ष समिति के प्रदेश सचिव नरेंद्र गुर्जर ने बैठक को सम्बोधित करते हुए कहा कि आन्दोलन को लेकर जो भी निर्देश गुर्जर आरक्षण संघर्ष समिति की ओर से मिलेंगे, उनका पालन करने के लिए समाज तैयार है। बैठक में अलग-अलग जिम्मेदारियां भी लोगों को दी गई। पीलुपुरा में होने वाले आन्दोलन को लेकर बैठक में विस्तृत चर्चा की गई। इस अवसर पर किशोर डोई, मनोज गुर्जर, शंकरलाल गुर्जर, सांवरमल सहित अनेक लोग मौजूद रहे।

जिला कलक्टर की पहल से आमजन के लिए राहत की राह हुई प्रशस्त

जन्म-मृत्यु एवं विवाह पंजीकरण में आ रही परेशानी होगी दूर

नगर निगम क्षेत्र में सम्मिलित राजस्व गांव एवं ग्राम पंचायत को पहचान पोर्टल पर मैप

जयपुर टाइम्स

जयपुर(कासं.)। स्वायत शासन विभाग की अधिसूचना द्वारा झोटवाड़ा, सांगानेर, आमेर व बस्सी के अंतर्गत आने वाली ग्राम पंचायत/राजस्व गांव के क्षेत्र को नगर निगम ग्रेटर व हैरिटेज की सीमा में वृद्धि करते हुए शामिल किया गया है ऐसी स्थिति में पिछले कुछ दिनों से पंचायती राज विभाग के आदेश के बाद सम्बंधित ग्राम पंचायत के ग्राम विकास अधिकारी (रजिस्ट्रार) ने जन्म-मृत्यु व विवाह पंजीकरण का कार्य करना बंद कर दिया था इससे इस क्षेत्र के अंतर्गत आने वाले आमजन को जन्म-मृत्यु एवं विवाह पंजीयन से संबंधित कार्यों के लिए अनावश्यक कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा था। इस समस्या से आमजन को त्वरित प्रदान करने के लिए जिला कलक्टर डॉ. जितेन्द्र कुमार सोनी ने अधिकारियों को निर्देश प्रदान कर नगर निगम क्षेत्र में सम्मिलित राजस्व गांव एवं ग्राम पंचायत को पहचान पोर्टल पर मैप करवा दिया गया है। इससे संबंधित राजस्व गांव व ग्राम पंचायत के लोगों को अपने क्षेत्र के नगर निगम जोन से जन्म-मृत्यु व विवाह पंजीयन बनवाने की सुविधा मिल सकेगी। डॉ. सुदीप कुमावत सहायक निदेशक, जिला कलेक्ट्रट जयपुर ने बताया की जिला कलक्टर डॉ. जितेन्द्र कुमार सोनी के निर्देशों की अनुपालना में राज्य स्तर पर जीवनांक शाखा द्वारा झोटवाड़ा पंचायत समिति के अंतर्गत आने वाले राजस्व गांव व ग्राम पंचायत के क्षेत्र को नगर निगम जोन झोटवाड़ा में, सांगानेर पंचायत समिति के अंतर्गत आने वाले क्षेत्र को नगर निगम जोन जगतपुरा में, आमेर पंचायत समिति के अंतर्गत आने वाले क्षेत्र को नगर निगम जोन आमेर में तथा बस्सी पंचायत समिति के अंतर्गत आने वाले क्षेत्र को नगर निगम जोन आदर्श नगर में शामिल किया गया है इससे आमजन को अब संबंधित नगर निगम जोन में जन्म मृत्यु वह विवाह पंजीयन के प्रमाण पत्र मिल सकेंगे।

सचिव ने जिला कारागृह का निरीक्षण कर, जाने बंदियों के हालात एवं दिए आवश्यक निर्देश

जयपुर टाइम्स

धौलपुर(निसं.)। राष्ट्रीय विधिक सेवा प्राधिकरण नई दिल्ली, राजस्थान राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण जयपुर द्वारा जारी दिशा निर्देशों एवं अध्यक्ष जिला विधिक सेवा प्राधिकरण जिला एवं सेशन न्यायाधीश अरुण कुमार अग्रवाल के निर्देशन में सचिव जिला विधिक सेवा प्राधिकरण अपर जिला एवं सेशन न्यायाधीश रेखा यादव द्वारा जिला कारागृह धौलपुर का निरीक्षण किया गया। निरीक्षण के दौरान उन्होंने बंदियों को कारागृह में मिलने वाली मूलभूत सुविधाओं जैसे भोजन, आवास, नाश्ता, स्वच्छ पेयजल, चिकित्सीय सुविधाओं व रसोईघर, बैरक इत्यादि का जायजा लिया। उन्होंने कारागृह में प्रत्येक बैरिक में निरूद्ध बंदियों से वार्ता कर उनके प्रकरणों में पैरवी हेतु अधिवक्ता के संबंध में जानकारी लेने पर 1 बंदी द्वारा उसकी ओर से अधिवक्ता न होने का कथन किया गया, जिस पर से उपस्थित एलएडीसी अधिवक्ता एवं जेल अधीक्षक को बंदी की ओर से विधिक सहायता का प्रार्थना पत्र तैयार करवा कर इस प्राधिकरण को भिजवाये जाने हेतु निर्देशित किया। उन्होंने बंदियों से समस्याओं के बारे में विस्तार से चर्चा की। उन्होंने बंदियों से उनके अधिवक्ता एवं परिजनों से वार्ता के संबंध में पूछताछ करने पर 1 बंदी द्वारा अधिवक्ता से प्रकरण के संबंध में वार्ता कराने हेतु अनुरोध किया, जिसके संबंध में जेल अधीक्षक को, बंदी की उसके अधिवक्ता से वार्ता कराने हेतु निर्देश दिये। उन्होंने जेल में स्थित रसोई घर में पहुंचकर भोजन की गुणवत्ता का अवलोकन किया साथ ही खाना बनाने वाली नई मशीनों के बारे में जानकारी प्राप्त की तथा आवश्यक निर्देश दिये। नालसा द्वारा प्रिजिन लीगल एड क्लिनिक के संबंध में जारी एसओपी में वर्णित दिशा-दिशा निर्देशों की पालना एवं आवश्यक स्वास्थ्य सुविधाएं सुनिश्चित कराये जाने के निर्देश दिये गये। इस मौके पर चीफ लीगल एड डिफेंस कॉउन्सिल अमित कम्ठान, डिप्टी चीफ एलएडीसी पप्पू सिंह गुर्जर, असिस्टेंट एलएडीसी मीता अग्रवाल, आराधना शर्मा, जेल क्लीनिक पर कार्यरत पीएलवी इन्द्रेश शर्मा, प्राधिकरण के कनिष्ठ सहायक सुरेंद्र सिंह, जेल अधीक्षक सुमन मीणा, शैलेन्द्र फौजदार सहित कारागृह का स्टॉफ एवं बंदी मौजूद रहे।

वंदे गंगा जल संरक्षण जन अभियान के अंतर्गत पत्रकारों की जल संरक्षण स्थलों पर एक्सपोजर विजिट

वंदे गंगा अभियान के तहत संजापुरी और भूतेश्वर एनीकट पर मीडिया एक्सपोजर जनसंपर्क विभाग द्वारा विजिट आयोजित

जयपुर टाइम्स

धौलपुर(निसं.)। मीडियाकर्मियों को जिले में विविध जल संरक्षण गतिविधियों की जानकारी की जानकारी देने हेतु शुक्रवार को वंदे गंगा जल संरक्षण जन सहभागिता अभियान के तहत धौलपुर में एक प्रभावी मीडिया एक्सपोजर विजिट का आयोजन किया गया। इस फील्ड विजिट का उद्देश्य जिले में जल संरक्षण की दिशा में किए जा रहे नवाचारों, संरचनात्मक विकास और जन सहभागिता को पत्रकारों के माध्यम से जन-जन तक पहुँचाना रहा। इस अवसर पर जिला सूचना एवं जनसंपर्क कार्यालय के तत्वावधान में सहायक जनसंपर्क अधिकारी रोहित मित्तल के नेतृत्व में पत्रकारों के दल ने संजापुरी आश्रम एनीकट और भूतेश्वर एनीकट जैसे चयनित जल संरचनाओं का भ्रमण किया। संजापुरी एनीकट गाँवों की जीवनरेखा बरई ग्राम पंचायत में पार्वती नदी पर निर्मित संजापुरी आश्रम एनीकट अब सिर्फ एक जल संरचना नहीं, बल्कि सात ग्रामों की जीवनरेखा बन चुका है। लगभग 220 मीटर लंबाई और 2 मीटर ऊंचाई वाली यह संरचना 27.85 मिलियन क्यूबिक फीट जल भंडारण क्षमता रखती है। इस एनीकट के जल से न केवल आसपास के गाँव बरई, भगरीपुरा, अर्जुन का पुरा, बनौरा, कांकोर, कछपुरा व धीमरीमें भूजल स्तर में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है, बल्कि यह जल-स्त्रोत पशु-पक्षियों के लिए भी अमूल्य बन गया है। भूतेश्वर एनीकट संरचना और समर्पण की मिसाल इसके पश्चात पत्रकारों ने भूतेश्वर एनीकट का भी अवलोकन किया, जहाँ जल संसाधन विभाग के सहायक अभियंता पूरन मंगल ने तकनीकी जानकारी और परियोजना की उपयोगिता से अवगत कराया।

विजिट का उद्देश्य और संदेश

सहायक जनसंपर्क अधिकारी ने बताया कि इस फील्ड विजिट का मुख्य उद्देश्य जल संरक्षण को लेकर समाज में जागरूकता बढ़ाना, जनसहभागिता को प्रेरित करना और मीडिया के माध्यम से जिले में हुए कार्यों को रेखांकित करना है। पत्रकारों ने इस पहल की सराहना करते हुए इसे ज्ञानवर्धक, प्रेरणादायक और व्यावहारिक अनुभव बताया। यह मीडिया विजिट निश्चित ही जल संरक्षण के सामूहिक प्रयासों को नई दिशा और गति प्रदान करेगी।

7, 8 एवं 9 जून को विभिन्न कार्यक्रमों का होगा आयोजन

जयपुर टाइम्स

धौलपुर(निसं.)। वंदे गंगा जल संरक्षण जन अभियान' का प्रारंभ 5 जून से किया गया। अभियान का मुख्य उद्देश्य वर्षा जल का अधिकतम संग्रहण, पारंपरिक जल स्त्रोतों का संरक्षण, जनसहभागिता से स्वच्छता तथा जागरूकता को बढ़ावा देना है। जिला कलक्टर श्रीनिधि बी टी ने बताया कि अभियान 5 जून से 20 जून, 2025 तक मनाया जा रहा है। उन्होंने बताया कि 7 जून शनिवार को स्वयं सेवी संस्था, पशुपालन, गौपालन, देवस्थान विभाग एवं आरसीडीएफ द्वारा जिला एवं ब्लॉक स्तर पर धार्मिक, व्यापारिक संगठन, भामाशाह, गणमान्य व्यक्तियों को सूचीबद्ध कर जल संरक्षण जल अभियान की गतिविधियों से सम्बन्धित विषय पर विचार विमर्श, संगोष्ठी, स्थानीय गौशाला, पशु चिकित्सालय, दुग्ध संघ में स्वच्छता अभियान का आयोजन, 8 जून रविवार को खेल विभाग एवं नेहरू युवा केन्द्र, ग्रामीण विकास एवं पंचायती राज विभाग, स्थानीय निकाय एवं जिला प्रशासन द्वारा स्थानीय ग्रामवासियों, जनप्रतिनिधियों तथा नेहरू युवा केन्द्र आदि अन्य स्वयंसेवी संस्थाओं के सहयोग से वंदे गंगा प्रभात फेरी एवं जागरूकता अभियान रैली का ग्रामीण क्षेत्रों में ग्राम पंचायत स्तर पर एवं शहरी क्षेत्रों में वार्ड स्तर पर आयोजन एवं सार्वजनिक स्थान पर स्वच्छता में श्रमदान, 9 जून सोमवार को ग्रामीण विकास एवं पंचायती राज, स्वच्छ भारत मिशन ग्रामीण द्वारा नवीन अमृत सरोवर का शुभारम्भ, नए जल संग्रहण एवं जल संरक्षण संरचनाओं के कार्यो का शुभारम्भ एवं पूर्ण कार्यो का अवलोकन, प्राचीन तालाब, जोहड़ इत्यादि की साफ-सफाई एवं मरम्मत, औरण का चिन्हीकरण एवं घास बुआई की पूर्व तैयारी, चारागाहों का चिन्हीकरण एवं पौधारोपण कार्यो की अग्रिम तैयारी, हरियालो राजस्थान अन्तर्गत अन्य पौधारोपण कार्य की अग्रिम तैयारी, कर्मभूमि से मातृभूति अभियान के तहत कार्यो का अवलोकन एवं स्वीकृति, ग्राम के साभ जल स्त्रोतों की मैपिंग, साफ-सफाई एवं मरम्मत, सोख्ता गढढो की साफ-सफाई, गांवों के मुख्य मार्गो, चौराहों एवं सार्वजनिक स्थलों की साफ-सफाई तथा सार्वजनिक निमार्ण विभाग द्वारा सरकारी भवनों में स्थित आरटीडब्ल्यूएचएस की साफ-सफाई, रोड़ साईड पौधारोपण हेतु अग्रिम तैयारी की जाएगी।

बिना योग्यता किया आवेदन तो हो सकते है परीक्षाओं से डिबार

जयपुर टाइम्स

जयपुर(कासं.)। राजस्थान लोक सेवा आयोग द्वारा आयोजित परीक्षाओं में बिना वांछित योग्यता व अनुभव के आवेदन करने पर आयोग द्वारा आयोजित परीक्षाओं से डिबार किया जा सकता है। आयोग द्वारा डिबार किए गए अभ्यर्थियों की सूचना अन्य सरकारी भर्ती एजेंसियों के साथ भी साझा की जाती है। इस कारण ऐसे अभ्यर्थी उन परीक्षाओं से भी वंचित हो सकते हैं, जिसके लिए वे वास्तव में पात्र हैं। हालांकि अभ्यर्थियों के हितार्थ आयोग द्वारा आवेदन विदड्रा करने का अवसर अभ्यर्थियों को वर्तमान में दिया जा रहा है। इस पर भी अनेक अपात्र आवेदकों द्वारा लापरवाही बरतते हुए आवेदन विदड्रा नहीं किए जा रहे हैं। निर्धारित अवधि में आवेदन विदड्रा न करने पर अपात्र आवेदकों के विरुद्ध डिबार के साथ-साथ भारतीय न्याय संहिता 2023 की धारा 217 के अन्तर्गत भी कार्यवाही की जाएगी। यह उल्लेखनीय है कि आयोग द्वारा माह अक्टूबर 2024 में असिस्टेंट प्रोफेसर (संस्कृत कॉलेज एजुकेशन) परीक्षा- 2024 अन्तर्गत ऐसे ही 14 अभ्यर्थियों के विरूद्ध न्यायालय अतिरिक्त मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट-संख्या 3, अजमेर में भारतीय न्याय संहिता 2023 की धारा 217 में परिवाद प्रस्तुत किया हुआ है।

आयोग की आईटी शाखा द्वारा विभिन्न भर्तियों के तहत प्राप्त ऑनलाइन आवेदनों की रेंडम जांच निरंतर की जा रही है। इसके लिए विभिन्न नवाचारों के साथ विशेष सॉफ्टवेयर एवं एआई तकनीक का प्रयोग किया जा रहा है। उक्त भर्तियों में प्राप्त आवेदनों की रैंडम/सेम्पल जांच में यह पाया गया कि अनेक आवेदकों के पास अनिवार्य योग्यता व अनुभव नहीं होने के उपरांत भी उनके द्वारा आवेदन किया गया है।

आवेदनों की जांच दौरान यह सामने आया कि अपात्र अभ्यर्थियों द्वारा अनर्गल रूप से विभिन्न भर्तियों में आवेदन किए गए हैं। इनमें से कई अभ्यर्थियों द्वारा 3-4 भर्तियों जिनकी वांछित शैक्षणिक योग्यता पूरी तरह भिन्न- भिन्न है, उनमें भी आवेदन किए गए हैं। ऐसे ही अभ्यर्थी जसवंत गरासिया पुत्र स्व. कामजी गरासिया निवासी ग्राम गराडिया, वार्ड नं. 4 पोस्ट महूडी वाया कालिंजरा तहसील सज्जनगढ, बांसवाड़ा तथा खैलेन्द्र प्रसाद पुत्र श्री रघुनाथ प्रसाद निवासी शीतला माता मंदिर के पास, रैगर मौहल्ला, सांभर लेक, जयपुर का प्रकरण भी आयोग द्वारा पकड़ा गया है। विभिन्न भर्ती परीक्षाओं अन्तर्गत जारी की गई अपात्र अभ्यर्थियों की सैंपल सूची आयोग की वेबसाइट पर उपलब्ध है।

सवंत गरासिया की शैक्षणिक योग्यता बीए है। इसके बाद भी इनके द्वारा सहायक निदेशक (विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग) भर्ती-2024 तक में ऑनलाइन आवेदन किया गया है, जबकि इस पद के लिए विज्ञापन अनुसार अनिवार्य शैक्षणिक योग्यता" फर्स्ट क्लॉस डिग्री इन नेचुरल ऑर एग्रीकल्चर साइंस अथवा फर्स्ट क्लास मास्टर डिग्री इन इंजीनियरिंग ऑर टेक्नोलॉजी अथवा फर्स्ट क्लास एमएससी/एमटेक (विथ ग्रेजुएट डिग्री इन साइंस एंड इंजीनियरिंग) इन रिमोट सेंसिंग एंड जीआईएस फ्रॉम ए रिकॉग्नाइज्ड यूनिवर्सिटी ऑर इक्विलेंट तथा रिसर्च एंड डेवलपमेंट/इंडस्ट्रियल/एकेडमिक इंस्टीट्यूशन/साइंस एंड टेक्नोलॉजी आर्गेनाइजेशन में 2 वर्ष का स्पेशलाइज्ड अनुभव" वांछित है।

किसान सरकारी योजनाओं का अधिकतम लाभ लें, ताकि खेतों का विकास हो सके: आर्य

जिला प्रमुख वंदना आर्य ने लालासर की ढ़ाणी रणवां में छींपाणी जोहड़ में किया कुण्ड का उदघाटन

जयपुर टाइम्स

चूरू(निस)। गंगा दशहरा व विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर जिले में शुरू हुए वंदे गंगा-जल संरक्षण जन अभियान के अंतर्गत चूरू ब्लॉक की ग्राम पंचायत लालासर के ग्राम ढ़ाणी रणवां में छींपाणी जोहड़ में गुरूवार देर शाम ब्लॉक स्तरीय कार्यक्रम का शुभारम्भ किया गया। कार्यक्रम की मुख्य अतिथि जिला प्रमुख वंदना आर्य ने छींपाणी जोहड़ में कुण्ड का उद्घाटन किया। इस दौरान उन्होंने पौधरोपण भी किया। कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए जिला प्रमुख वंदना आर्य ने कहा कि जल ही जीवन है, इस तथ्य के साथ किसान विभाग की ओर से चलाई गई सरकारी योजनाओं का अधिकतम लाभ लें व पानी का महत्व समझें। जिससे खेतों का विकास हो सके। उन्होंने कहा कि प्लास्टिक का प्रयोग बंद करें। इस दौरान उन्होंने जल संरक्षण की शपथ दिलाई। इस अवसर पर एसडीएम बिजेन्द्र सिंह ने कहा कि वंदे गंगा जल संरक्षण जन अभियान 20 जून तक चलाया जाएगा। इस अभियान का मुख्य उद्देश्य जल की एक-एक बून्द का महत्व समझना व आने वाले मानसून में वर्षा जल का अधिक से अधिक संग्रहण करना है। हम सभी अधिकाधिक जल का संरक्षण व पौधोपण करें। बीडीओ महेन्द्र भार्गव ने बताया कि एससी, एसटी, बीपीएल परिवारों के किसानों को महानरेगा योजनान्तर्गत कुण्ड व कैटल शेड का निर्माण करवाया जा रहा है। उन्होंने वर्षा जल संग्रहण, पौधरोपण गतिविधियों की जानकारी दी। वाटरशेड सहायक अभियन्ता नागरमल ने बताया कि मुख्यमंत्री जल स्वालम्बन 2.1 व प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना के अन्तर्गत ढ़ाणी रणवां, लालासर व दुधवाखारा में खेतों में निजी कुण्ड, फार्म पौण्ड, सार्वजनिक कुण्ड व चारागाह विकास के 239 कार्य पूर्ण किए गए हैं और 25 कुण्ड प्रगतिरत है। उन्होंने बताया कि खेतां की मेड पर छायादार पौधे लगाएं और निर्मित कुण्डों के पास फलदार पौधे लगाएं। विभाग की ओर से आने वाले मानसून में पौधों का वितरण किया जाएगा। इस अवसर पर सरपंच गोपाल राम कस्वां, शिव सिंह चौहान, लालासर सहकारी समिति अध्यक्ष मान सिंह दानोदिया, गोपीराम, प्रगतिशील कृषक आदि उपस्थित रहे।

दहेज के अभिशाप से मुक्ति कब

दहेज हत्या या दहेज के नाम पर प्रताड़ना का एक पहलू यह भी है कि पिछले कुछ सालों में दहेज उत्पीड़न के मामलों में गिरफ्तारी की संख्या बेतहाशा बढ़ी है। इससे समस्या का एक और पक्ष सामने आया है। इनमें कितने मामले सचमुच उत्पीड़न के थे और कितनों में सबक सिखाने के लिए कानून का दुरुपयोग कर गिरफ्तारियां कराई गईं, यह तय करना मुश्किल है। बढ़ते मामलों और घटती सजा से यह निष्कर्ष नहीं निकाला जा सकता है कि दहेज उत्पीड़न की ज्यादातर शिकायतें झूठी होती हैं। अक्सर आरोप साबित नहीं हो पाते या पारिवारिक दबाव में शिकायतकर्ता ढीला पड़ जाता है। लेकिन इसका एक गलत संकेत भी है, जिसकी तरफ सुप्रीम कोर्ट ने इशारा किया है। दर्ज मामलों की तुलना में कम लोगों का अपराध साबित होने का हवाला देकर सुप्रीम कोर्ट ने राज्य सरकारों को निर्देश दिया था कि वे पुलिस को हिदायत दें कि आइपीसी की धारा 498 ए के तहत मामला दर्ज होते ही गिरफ्तारी करने की

विडंबना है कि पर्याप्त कानूनों के बावजूद कुछ बुनियादी सामाजिक अभिशापों का दंश कम होने के बजाय बढ़ रहा है। साल-दर-साल दहेज के नाम पर होने वाली हत्याओं का बढ़ता आंकड़ा इस बात का प्रमाण है कि दहेज-विरोधी कानूनों को सख्त बनाने और दहेज के खिलाफ व्यापक स्तर पर अभियान छेड़ने का भी कोई खास असर नहीं हो पा रहा है। समाज और परिवार की मानसिकता में कोई बड़ा बदलाव नहीं आया है। संपन्नता बढ़ी है। मध्यवर्गीय परिवारों की आर्थिक स्थिति सुधरी है। कहने को लोगों की मानसिकता भी बदली है। उनकी सोच उदार हुई है। धर्म के प्रति लोगों की आस्था मजबूत हुई है। पिछले कुछ सालों में धार्मिक अनुष्ठानों में जुटने वाली भीड़ और उसमें लगातार हो रही बढ़ोतरी इसका प्रमाण है। कायदे से ऐसे माहौल में सामाजिक व्यवस्था में सहिष्णुता, धैर्य और संतोष बढ़ना चाहिए। पर हो उलट रहा है। यह पुराना मिथक पूरी तरह टूट चुका है कि आर्थिक जरूरतों को पूरा करने के लिए दहेज की मांग की जाती है और वह मांग पूरी न होने पर दहेज-हत्या का घिनौना रास्ता अपना लिया जाता है। अब तो संपन्नता के बावजूद अधिक अमीर बनने का लालच इस प्रवृत्ति को जिंदा रखे हुए है। सामाजिक और सरकारी स्तर पर इस प्रवृत्ति के खिलाफ कोशिश हो रही है। खुद लड़कियां भी इस सामाजिक अभिशाप के खिलाफ खड़े होने की हिम्मत दिखा रही हैं।

किसी भी समाज की पहचान इस बात से होती है कि उसमें महिलाओं का स्थान क्या है? रायटर फाउंडेशन ने दुनिया भर के 370 विशेषज्ञों से जो आकलन कराया, उसमें आम राय यही बनी कि महिलाओं की सबसे खराब स्थिति भारत में है। यह तथ्य किसी को इसलिए चौंकाता नहीं क्योंकि महिलाओं पर होने वाले अपराध के लगातार बढ़ते आंकड़े इस कड़वी सच्चाई को सामने लाते रहे हैं। अन्य अपराधों की तुलना में दहेज के लिए महिलाओं के उत्पीड़न के मामले ज्यादा शर्मनाक हैं, क्योंकि यह पूरे समाज की मानसिकता बताते हैं। दहेज के नाम पर रोज औसतन तेईस हत्याएं होती हैं। महिलाओं को प्रताड़ित करने की घटनाएं इससे कई गुना ज्यादा हैं। 2011 में दहेज के नाम पर 8618 महिलाओं की हत्या की गई। 2012 में 8233, 2013 में 8083 और 2014 में 8455। शर्मनाक है कि दहेज के लिए हत्या वे करते हैं, जो शादी के बाद लड़की के परिजन हो जाते हैं। यह हत्या सिर्फ रिश्तों और विश्वास की नहीं, विवाह जैसे सांस्कृतिक विधान को भी नकारने जैसा है। दहेज हत्याओं की बढ़ती संख्या ज्यादा चिंताजनक है। 2000 में दहेज के लिए 6996 हत्याएं हुईं। 2011 में इनकी संख्या 8618 हो गई। 2014 में यह आंकड़ा 8455 पर रहने से साबित हो जाता है कि लोगों में पहले जैसा लालच कायम है। और उसके लिए किसी मासूम की जान लेने में भी उन्हें कोई हिचक नहीं होती। राष्ट्रीय अपराध रिकाईस ब्यूरो की रिपोर्ट के मुताबिक 2014 में देश भर में व्यक्तिगत दुश्मनी, जमीन के विवाद और प्रेम प्रसंग के बाद सबसे ज्यादा हत्याएं दहेज को लेकर हुईं।

दहेज हत्या या दहेज के नाम पर प्रताड़ना का एक पहलू यह भी है कि पिछले कुछ सालों में दहेज उत्पीड़न के मामलों में गिरफ्तारी की संख्या बेतहाशा बढ़ी है। इससे समस्या का एक और पक्ष सामने आया है। इनमें कितने मामले सचमुच उत्पीड़न के थे और कितनों में सबक सिखाने के लिए कानून का दुरुपयोग कर गिरफ्तारियां कराई गईं, यह तय करना मुश्किल है। बढ़ते मामलों और घटती सजा से यह निष्कर्ष नहीं निकाला जा सकता है कि दहेज उत्पीड़न की ज्यादातर शिकायतें झूठी होती हैं। अक्सर आरोप साबित नहीं हो पाते या पारिवारिक दबाव में शिकायतकर्ता ढीला पड़ जाता है। लेकिन इसका एक गलत संकेत भी है, जिसकी तरफ सुप्रीम कोर्ट ने इशारा किया है। दर्ज मामलों की तुलना में कम लोगों का अपराध साबित होने का हवाला देकर सुप्रीम कोर्ट ने राज्य सरकारों को निर्देश दिया था कि वे पुलिस को हिदायत दें कि आइपीसी की धारा 498 ए के तहत मामला दर्ज होते ही गिरफ्तारी करने की तत्परता न दिखाए। पुलिस पहले आश्वस्त हो जाए कि सीआरपीसी की धारा 41 में दिए गए प्रावधानों के तहत गिरफ्तारी करना जरूरी है। इस धारा में नौ बिंदु बताए गए हैं, जिन्हें जांच-परख कर ही गिरफ्तारी की जा सकती है। इसमें अभियुक्त का व्यवहार जांचना और यह सुनिश्चित किया जाना जरूरी है कि वह कहीं फरार तो नहीं हो जाएगा।

आईपीसी की धारा 498 ए के तहत आरोपित होने वाले व्यक्ति को हालांकि अधिकतम तीन साल की ही सजा मिल सकती है, लेकिन गैर-जमानती धारा होने की वजह से अदालत से किसी अभियुक्त को मुश्किल से ही जमानत मिल पाती है। समस्या यह है कि कौन दहेज हत्या का सचमुच दोषी है और कौन कानून के शिकंजे में फंसा दिया गया, यह तय करना आसान नहीं है। ऐसा रास्ता तलाशना जरूरी है, जिसमें पीड़िता न्याय से वंचित न रह पाए और निर्दोषों को बेवजह परेशान न होना पड़े। पुलिस या कानून के जरिए इस फर्क को समझा नहीं जा सकता। बात घूम-फिर कर समाज या परिवार के विवेक पर आ जाती है। विवेक का सही इस्तेमाल न होने की वजह से यह उलझन भरी स्थिति आ गई है कि दहेज निरोधक कानून के दुरुपयोग की शिकायतें बढ़ रही हैं। एक तरफ मानवता को तार-तार करने वाली समस्या है, तो दूसरी तरफ उसकी आड़ में प्रतिशोध लेने की बढ़ती भावना। यह सही है कि जिस तरह प्रताड़ित महिलाओं को इंसाफ दिलाने के लिए कानून है, उसी तरह कानून उस व्यवस्था का दुरुपयोग कर उस एक पूरे परिवार की इज्जत मटियामेट कर देने की प्रवृत्ति को रोकने के लिए भी बने। लेकिन इस चर्चा में मूल समस्या को भुलाया नहीं जा सकता। दहेज उत्पीड़न की झूठी शिकायतें निश्चित रूप से होती हैं, लेकिन उनकी संख्या दहेज के लालच में महिला की जान लेने या उसे आत्महत्या के लिए बाध्य करने वाले मामलों की तुलना में काफी कम है। सवाल इसे रोकने का है।

ऐसे मामलों में दोष साबित होने का अनुपात कम होता जाना ज्यादा चिंता की बात है। कुछ हद तक यह न्याय-व्यवस्था का दोष है। मामलों की संख्या को देखते हुए उनका समय पर निपटारा करने के लिए उसके पास पर्याप्त संसाधन नहीं हैं। 2011 में दहेज निरोधक कानून के तहत देश भर में एक लाख से ज्यादा लोगों की गिरफ्तारी हुई। अगले सालों में यह संख्या लगातार बढ़ी है। 2011 से 2013 के बीच गिरफ्तारी की तुलना में आरोप-पत्र दाखिल होने का अनुपात पच्चीस से तीस फीसद रहा और फैसला बीस फीसद से भी कम मामलों का हो पाया। लेकिन इसमें बड़ी अड़चन यह है कि इस तरह के संगठनों के लिए दहेज प्रताड़ना कोई अभिशाप नहीं है। पिछले दिनों काफी विवादास्पद रही धर्म गुरु राधे मां पर इस तरह के आरोप भी लगे कि उनकी शह पर उनके कुछ अनुयायियों ने दहेज के नाम पर प्रताड़ना की। आरोप सही थे या गलत, इसकी गहराई में जाने का कोई मतलब नहीं है। असल बात तो यह है कि धर्म और अध्यात्म के नाम पर लोगों को सम्मोहित करने वाले धर्म गुरु अगर दहेज प्रथा के खिलाफ अभियान छेड़ें तो उसका व्यापक असर हो सकता है। खाप पंचायतें इस दिशा में ज्यादा सार्थक भूमिका निभा सकती हैं।

सम्पादकीय

संवैधानिक संस्थाओं के कामकाज को शुचिता और पारदर्शी बनाना प्राथमिक शर्त

लोकतांत्रिक व्यवस्था की मजबूती के लिए संवैधानिक संस्थाओं के कामकाज में शुचिता और पारदर्शिता प्राथमिक शर्त है। मगर राजनीतिक नफे-नुकसान के गणित में सरकारों ने सबसे अधिक कमजोर इन्हीं संस्थाओं को किया है। शायद ही कोई संवैधानिक संस्था बची है, जो भ्रष्टाचार और कदाचार की जकड़बंदी से मुक्त हो। फिर भी जब इन संस्थाओं के भीतर से ही शुचिता लाने के संकल्प उभरते हैं, तो स्वाभाविक रूप से बेहतरी की उम्मीद बनती है। देश की न्यायपालिका में भी भ्रष्टाचार के आरोप लंबे समय से लगते रहे हैं। निचली अदालतों पर तो ऐसे आरोप आम रहे हैं, पर ऊपरी अदालतों में भी पिछले कुछ वर्षों से ऐसे मामले सामने आए हैं, जिससे न्यायपालिका की साख पर सवाल उठने लगे हैं। ऐसे में प्रधान न्यायाधीश बीआर गवई ने इस समस्या को साफगोई से स्वीकार किया और इसे दूर करने का संकल्प दोहराया है, तो सकारात्मक नतीजों का भरोसा बना है। ब्रिटेन के उच्चतम न्यायालय में आयोजित एक गोलमेज सम्मेलन में न्यायमूर्ति गवई ने कहा कि न्यायपालिका में भ्रष्टाचार और कदाचार की घटनाओं से जनता का भरोसा टूटता है। दुख की बात है कि न्यायपालिका के भीतर भी भ्रष्टाचार और कदाचार के मामले सामने आए हैं। यह बात उन्होंने दिल्ली में न्यायाधीश यशवंत वर्मा के घर से बरामद जली नगदी नोटों के संदर्भ में कही। प्रधान न्यायाधीश ने भारतीय न्यायपालिका के भीतर जड़ें जमा रही या जमा चुकी उन सभी समस्याओं को बड़े साफ शब्दों में स्वीकार किया, जिन्हें लेकर अंगुलियां उठती रही हैं। पिछले कुछ वर्षों में उच्चतम न्यायालय और कुछ उच्च न्यायालयों के न्यायाधीशों के राजनीतिक दबाव में या निजी स्वार्थ साधने के मकसद से फैसले सुनाने को लेकर काफी असंतोष जाहिर किया जाता रहा है। कुछ न्यायाधीशों ने सेवामुक्त होने के तुरंत बाद सरकारी पद स्वीकार कर लिया, तो कुछ चुनावी मैदान में उतर गए। इसे किसी भी रूप में नैतिक नहीं माना गया। हालांकि अब उच्चतम न्यायालय के न्यायाधीशों ने संयुक्त रूप से संकल्प लिया है कि वे सेवानिवृत्ति के बाद कोई सरकारी पद स्वीकार नहीं करेंगे, न इस्तीफा देकर चुनाव लड़ेंगे। इससे यह उम्मीद तो बनी है कि शीर्ष न्यायालय के न्यायाधीश सत्ता के किसी दबाव में आकर कोई फैसला सुनाने से बच सकेंगे। राजनीतिक लोभ और दबाव से मुक्त हुए बिना न्यायपालिका सही अर्थों में अपने दायित्व का निर्वाह नहीं कर सकती। इसलिए प्रधान न्यायाधीश का इस दिशा में प्रयास सराहनीय है। लोकतंत्र में न्यायपालिका पर लोगों का भरोसा इसलिए भी बने रहना बहुत जरूरी है कि यही एक स्तंभ है, जिस पर संविधान की रक्षा का दायित्व और राजनीतिक तथा व्यवस्थागत कदाचार पर नकेल कसने का अकूत अधिकार है। यह भी अनुभव जगजाहिर है कि जब भी न्यायपालिका कमजोर दिखती है, तो सत्ता पक्ष की मनमानियां बढ़ती जाती हैं। इसीलिए न्यायाधीशों का व्यक्तिगत आचरण बहुत मायने रखता है। मगर पिछले कुछ वर्षों में इस तकाजे को जैसे भुला दिया गया है। कुछ न्यायाधीशों के सुर्खियां बटोरने के लोभ की वजह से न्यायिक सक्रियता का सवाल भी उठना शुरू हुआ था। कालेजियम प्रणाली और न्यायाधीशों की नियुक्ति में पक्षपात आदि के आरोप भी सुगबुगाते रहे हैं।

कुदरत के साथी

धार जिले की सरदारपुर तहसील में और मध्यप्रदेश-छत्तीसगढ़ के स्थानों के अलावा महाराष्ट्र, गुजरात, हरियाणा, आंध्रप्रदेश में भी ये देखे गए खरमोर पक्षी प्रजनन काल के उनके पसंदीदा स्थानों का चयन कैसे कर लेते है, यह शोध का विषय है। खरमोर पक्षी दक्षिण भारत की दिशा से उड़ान भरते हुए प्रति वर्ष आते हैं। कोमल घास में कुछ समय अपना प्रजनन काल व्यतीत कर दक्षिण एवं उत्तरी पूर्व भारत आदि की ओर लौट जाते हैं। दुनिया भर में कई पशु -पक्षी ऐसे है जो अपने मनपसंद स्थान का चयन अपनी यादाश्त के जरिये कर लेते हैं। बड़ी तेजी से विलुप्त हो रही प्रजातियों में शामिल खरमोर पक्षियों के जोड़ों का सरदारपुर अभयारण्य में जुलाई से अक्तूबर तक यहां पक्षी प्रजनन और वंश संवर्धन करके वापस अपने पूर्व स्थान की ओर उड़ जाते हैं। पक्षियों की अलग-अलग प्रजातियों में मादा को रिझाने के लिए नर तमाम किस्म के करतब दिखाते हैं मोर की तरह। खरमोर भी अपने अद्भुत उछाल के लिए जाने जाते हैं। प्रजनन काल में वे टिटकारी जैसी आवाज निकालते हुए दो-दो मीटर ऊंची उछाल लगाते हैं। इस दौरान उनकी आवाज काफी दूर-दूर तक सुनाई पड़ती है। मादा खरमोर पक्षी को आकर्षित करने के लिए नर खरमोर तेज गति से विशेष प्रकार की आवाज पैदा करता है। साथ ही करतब दिखाते हैं। लेकिन अब इस पक्षी को देखना लगातार दुर्लभ होता जा रहा है। खरमोर की आबादी समाप्त होने के पीछे कई कारणों को जिम्मेदार माना जाता है। खेती में कीटनाशकों के अत्यधिक प्रयोग के चलते कीटों की संख्या बेहद कम होती जा रही है। इसके चलते पक्षी के सामने पेट भरने की समस्या पैदा हो गई है। यह घास वाले मैदानों में रहने वाला पक्षी है और इसके रहवास में ज्यादा से ज्यादा अब खेती होने लगी है। इससे इस पक्षी को रहने के लिए जगह नहीं मिल रही है। यह घास वाले मैदानों में जमीन पर ही यह अपना घोंसला बनाता है। लेकिन आवारा कुत्ते और जंगली जानवर इनके घोंसले को नष्ट कर इन पक्षियों के चूजों का शिकार कर लेते हैं। खरमोर पक्षी को इसके दूसरे नाम चिन मोर और केर मोर से भी जाना जाता है। विलुप्त होने की बढ़ते इस पक्षी के संरक्षित स्थानों को दूषित वातावरण से मुक्त रखना होगा। अवैध शिकार करने वालों पर कड़ी कार्रवाई भी सुनिश्चित करनी होगी

बोझ बढ़ाती आबादी

कभी-कभी मेरे भीतर सामाजिक चिंतन भी समा जाता है। सोचने लगती हूं कि देश कहां से कहां विकास कर गया और हम इन पक्षियों, जानवरों और भूख से मरते गरीबों की सोच में डूबे रहते हैं। ऐसा तो नहीं है कि सरकार गरीबी उन्मूलन के लिए करोड़ों-अरबों खर्च करती नहीं! मगर वह सब शायद सही तरीके से गरीबों की सुविधाओं के लिए पहुंचता नहीं होगा! आबादी का बढ़ना भी बहुत बड़ी बाधा है। अब जब मैं स्वयं जानवरों की बढ़ती आबादी से हैरान हूं तो देश की बढ़ती आबादी से सरकार भी परेशान तो रहती होगी!

हम जमीन और प्राकृतिक संसाधनों को बढ़ा तो नहीं सकते लेकिन रोजाना उनका उपयोग करके घटा अवश्य सकते हैं। यही हम कर भी रहे हैं। अपनी आबादी बढ़ाते-बढ़ाते हम कब जंगलों को शहर बना बैठे, हमें खबर ही नहीं। जंगली जानवरों का इंसानी आबादी में आकर तहलका मचा देना अब आम बात हो गई है। उनके घरों में हम घुस गए हैं तो वे अपनी पुश्तैनी जमीन देखने कभी-कभार आ ही जाते हैं। जानवरों की संख्या की बात की जाए तो उनकी आबादी उतनी नहीं बढ़ रही है जितनी घरेलू जानवरों में कुत्तों की आबादी बढ़ रही है।

घरों से निकली नित की दो रोटी और बचा हुआ भोजन भी उनके लिए अब कम लग रहा है। अक्सर अपनी रसोई की खिड़की से देखती हूं कि पक्षियों के लिए डाला गया खाना दीवार पर चढ़ कर कुत्ते खा जाते हैं। तब मैं देख कर भी अनजान बन कर कुत्तों के लिए और खाना डाल आती हूं। कुत्तों की बढ़ती आबादी के कारण उनका आपस में संघर्ष देख कर उन पर तरस भी आता है। दूसरी तरफ उनके भय से मेरा बाहर न निकलने का मर्म भी मुझे सताता है। फिर मैं ममतामयी बन पक्षियों के लिए दुबारा खाना डालने जाती हूं और थोड़ी देर पक्षियों के आने तक ठहर जाती हूं। उस समय मेरे भीतर एक जज बैठा दिखता है जो पक्षियों व कुत्तों के साथ न्याय करने का प्रयास कर रहा होता है। यह सिलसिला लगभग हर दिन का है।

कभी-कभी मेरे भीतर सामाजिक चिंतन भी समा जाता है। सोचने लगती हूं कि देश कहां से कहां विकास कर गया और हम इन पक्षियों, जानवरों और भूख से मरते गरीबों की सोच में डूबे रहते हैं। ऐसा तो नहीं है कि सरकार गरीबी उन्मूलन के लिए करोड़ों-अरबों खर्च करती नहीं! मगर वह सब शायद सही तरीके से गरीबों की सुविधाओं के लिए पहुंचता नहीं होगा! आबादी का बढ़ना भी बहुत बड़ी बाधा है। अब जब मैं स्वयं जानवरों की बढ़ती आबादी से हैरान हूं तो देश की बढ़ती आबादी से सरकार भी परेशान तो रहती होगी!

कितनी सरलता से हम हर साल अपनी जनसंख्या में करोड़ों का आंकड़ा जोड़ते जा रहे हैं। मगर हमें यह भी सोचना चाहिए कि उस बढ़ती आबादी के लिए सुविधाएं कितनी उपलब्ध करा रहे हैं। नए शिशुओं के स्वागत की तैयारी में कहीं हम कोई कमी तो नहीं कर रहे हैं! देश के भविष्य को बेहतर बनाना है तो सरकार को आने वाली नई पीढ़ी के लिए पहले पौष्टिक भोजन, शुद्ध जल, सस्ती और असली दवाओं और जीवनदायी अस्पतालों जैसी बुनियादी जरूरतों के बारे में सोचना होगा। धरती का विस्तार किया नहीं जा सकता है। समुद्र को बढ़ने से रोका नहीं जा सकता है। जितनी भूमि है उतने में ही हमें रहना भी है। अनाज उगा कर सबका पेट भरना है। लौकिक सुख-सुविधाओं के लिए प्रकृति का संतुलित दोहन भी करना है। आज से चालीस-पचास साल पहले हमारे पूर्वजों ने सोचा भी नहीं होगा कि जल जैसी प्राकृतिक सुविधा को हम कभी खरीदकर पीएंगे! वह भी हमारे भारत जैसे देश में जहां स्वच्छ जल गंगा हिमालय से स्वयं हमें जीवन देने के लिए अवतरित होती है।

इस प्रकृति का संतुलन बनाए रखने के लिए पेड़-पौधे, पक्षी, जानवर, जीव-जंतु, कीट-पतंगे आदि सभी की आवश्यकता है। इसलिए सभी का संतुलन बना रहे, यह भी ध्यान रखना होगा। कुत्ते सामाजिक जानवर हैं, इसलिए उनकी भी आबादी मनुष्यों के साथ-साथ बढ़ती जा रही है। हम अपनी सुविधाओं व जीवन जीने के लिए जंगल में प्रवेश करते जा रहे हैं। मनुष्यता के नाम पर जंगली बन जंगली जीवों की दुनिया को खतरे में डाल रहे हैं। अभी भी समय है कि सचेत होकर अपनी मनुष्यता को बचाते हुए हमें स्वयं को जानवर बनने से रोक लेना चाहिए। बढ़ती आबादी के लिए या तो पर्याप्त सुविधाएं उपलब्ध कराई जाएं या फिर इन पर नियंत्रण के उपाय हों।

किसी देश की आबादी अगर वहां की ताकत है तो उस आबादी का सदुपयोग न होना उस देश की बर्बादी भी होती है। आजादी के समय भारत की आबादी लगभग पैंतीस करोड़ थी। अब बहत्तर वर्षों में बढ़ कर लगभग एक सौ पैंतीस करोड़ हो गई है।

आमिर खान की आखिरी फिल्म होगी महाभारत!

भारत के सबसे पसंदीदा एक्टर्स में से एक आमिर खान ने हाल ही में अपने अगले बड़े प्रोजेक्ट के बारे में रोमांचक खबर शेयर की। अपनी आगामी फिल्म सितारे ज़मीन पर की रिलीज़ के बाद, आमिर अपनी ड्रीम फिल्म महाभारत पर काम शुरू करने का सोच रहे हैं। इसके अलावा, उन्होंने संकेत दिया कि यह भव्य फिल्म उनकी आखिरी भी हो सकती है। हाल ही में राज शामनी के साथ बातचीत में, आमिर खान ने बात की कि वह अपनी आखिरी फिल्म क्या चाहते हैं।

कुछ सोच-विचार के बाद, आमिर खान ने कहा कि यह महाभारत है, एक ऐसी कहानी जिसे वह हमेशा से जीवंत करना चाहते थे। उन्होंने खुलासा किया, यह स्तरित है, इसमें भावनाएं हैं, इसका पैमाना है, दुनिया में आपको जो कुछ भी मिलेगा, वह आपको महाभारत में मिलेगा। इससे पता चलता है कि आमिर इस महाकाव्य कथा के बारे में कितनी गहराई से महसूस करते हैं। उनका मानना है कि महाभारत हर तरह की कहानी और भावना को समेटे हुए है।

कई लोगों को यह जानकर आश्चर्य हो सकता है कि आमिर ने संकेत दिया कि 'महाभारत' उनकी आखिरी फिल्म हो सकती है। उन्होंने कहा, शायद इसे करने के बाद मुझे लगेगा कि मेरे पास करने के लिए कुछ नहीं बचा है। मैं इसके बाद कुछ नहीं कर सकता, क्योंकि इस फिल्म का कंटेंट ऐसा ही होने वाला है। उन्होंने आगे कहा, मुझे उम्मीद है कि मैं काम करते हुए मरूंगा, लेकिन चूंकि आप पूछ रहे हैं, इसलिए यह एक ऐसी चीज है जिसके बारे में मैं सोच सकता हूं। शायद इसके बाद मुझे लगेगा कि मुझे कुछ और करने की जरूरत नहीं है।

'महाभारत' में खुद नहीं रहेंगे आमिर

आमिर ने 'द हॉलीवुड रिपोर्टर' से इस बारे में भी बात की थी कि यह प्रोजेक्ट कितना बड़ा होगा। उन्होंने कहा, यह मेरी सबसे बड़ी फिल्मों में से एक है और कहानी लिखने में ही सालों लग जाएंगे। जब उनसे पूछा गया कि क्या वह इसमें अभिनय करेंगे तो उन्होंने कहा, हम देखेंगे कि हमें किस किरदार के लिए कौन उपयुक्त है। इसका मतलब है कि वह खुद कोई रोल नहीं कर सकते हैं, लेकिन कहानी के लिए बेस्ट एक्टर का चयन करेंगे। 'महाभारत' के लिए कई डायरेक्टर लगेंगे जब उनसे पूछा गया कि क्या वह बड़ी फिल्म का निर्देशन करेंगे, तो आमिर ने कहा कि 'महाभारत' एक ऐसी कहानी है जिसे एक बार में नहीं बताया जा सकता। हालांकि यह कहना जल्दबाजी होगी कि वह निर्देशक होंगे या नहीं, उन्होंने बताया कि कहानी कई फिल्मों में बनाई जाएगी। इसलिए, इसे पूरा करने के लिए उन्हें एक से अधिक डायरेक्टर्स की जरूरत होगी।

श्वेता त्रिपाठी बनेंगी थिएटर निर्माता, लाएंगी समलैंगिक मुद्दे पर नाटक

एक्ट्रेस श्वेता त्रिपाठी जल्द ही थिएटर निर्माता के रूप में अपनी शुरुआत करने जा रही हैं। वह एक मशहूर ब्रिटिश नाटक कॉक का मंचन करेंगी। यह उनका पहला प्रोडक्शन होगा, जिससे वह थिएटर की दुनिया में कदम रख रही हैं। इस नाटक का पहला शो 6 जून को दिल्ली में मैक्स मुलर भवन में होगा। फिर 10 जून को मुंबई में पृथ्वी थिएटर में इसका प्रदर्शन होगा। प्रोजेक्ट के बारे में बात करते हुए श्वेता ने कहा, मुझे थिएटर हमेशा से बहुत पसंद रहा है। थिएटर में सब कुछ सीधे-सादे तरीके से सामने आता है, कोई भी चीज छुपाई नहीं जा सकती। कॉक बनाना मेरे लिए एक व्यक्तिगत और रचनात्मक फैसला है, मेरा मानना है कि कहानियों में दुनिया की सारी सच्चाई और खूबसूरती दिखनी चाहिए। श्वेता अपनी थिएटर प्रोडक्शन कंपनी ऑलमायटी के तहत इस नाटक का निर्माण कर रही हैं। इस नाटक का निर्देशन यूके में रहने वाले मनीष गांधी कर रहे हैं। इसमें रिताशा राठौड़, तन्मय धनानिया, साहिर मेहता और हर्ष सिंह जैसे कलाकार शामिल हैं। श्वेता के लिए इस नाटक पर काम करना बेहद खास बात है, क्योंकि यह नाटक समलैंगिक प्यार और प्राइड मंथ को सेलिब्रेट करता है। जून महीने को एलजीबीटीक्यू समुदाय के लिए प्राइड मंथ के रूप में मनाया जाता है और ये कहानियां उन्हें सम्मान देने के लिए समर्पित हैं। इसलिए, इस महीने में इस नाटक को दिखाना बहुत मायने रखता है। यह नाटक माइक बार्टलेट नाम के ब्रिटिश लेखक ने लिखा है और मनीष गांधी इसका निर्देशन कर रहे हैं। यह नाटक बहुत गहरी और भावुक कहानी है। इसमें बताया गया है कि इंसान अपनी पहचान और अपने प्यार के बारे में कैसे सोचता है और ये चीजें कैसे बदलती रहती हैं। कहानी एक ऐसे आदमी की है जो अपने लंबे समय के पुरुष साथी और एक नई महिला के प्रति अपनी भावनाओं के बीच उलझा हुआ है। नाटक उसके दिल की भावनाओं को सीधे-सादे तरीके से पेश करता है।

एक्ट्रेस ने कहा, हम ऐसे समय में जी रहे हैं जब लोग अपनी असली पहचान को खुलकर अपना रहे हैं। कॉक नाटक उस सफर की मुश्किलें और खूबसूरती दोनों को सच्चाई के साथ सामने रखता है। यह सफर थोड़ा उलझा हुआ है। इस नाटक ने मुझे अपनी ओर आकर्षित किया है। उन्होंने आगे कहा कि वह ऐसी कहानियों का हिस्सा बनना चाहती हैं जो लोगों को सोचने पर मजबूर कर दें, लेकिन एक अच्छे तरीके से। ऐसी कहानियां जो बातचीत को बढ़ावा दें, दूसरों की भावनाओं को समझने में मदद करें, और शायद कुछ बदलाव भी लाएं। श्वेता ने कहा, प्राइड मंथ एक उत्सव है, लेकिन यह ये भी याद दिलाता है कि लोगों को दिखना, शामिल होना और स्वीकार किया जाना अभी भी एक संघर्ष है। इस नाटक के जरिए हम समलैंगिक अनुभवों का सम्मान करना चाहते हैं और उन्हें वह मंच देना चाहते हैं जिसके वे लंबे समय से हकदार हैं। इस नाटक की तैयारी अभी चल रही है, कास्टिंग और प्री-प्रोडक्शन पर काम जारी है। यह नाटक जून 2025 में मुंबई और दिल्ली में शुरू होने वाला है।

निर्देशन पर जो मैं ज्ञान देती हूं, वह मेरा नहीं बल्कि राज खोसला का है

फिल्म निर्माता और एक्ट्रेस पूजा भट्ट ने दिवंगत निर्देशक राज खोसला की तारीफ करते हुए कहा कि उनकी बुद्धिमानी आज भी उनका और नए फिल्मकारों का मार्गदर्शन देती है। उन्होंने कई पीढ़ियों तक अपनी छाप छोड़ी है, जो लोग उन्हें नहीं जानते, वे भी उनकी कला की सराहना करते हैं। पूजा भट्ट अपने पिता व फिल्म निर्माता महेश भट्ट और मशहूर एक्ट्रेस आशा पारेख के साथ मुंबई के रीजल सिनेमा में आयोजित कार्यक्रम राज खोसला 100- बंबई का बाबू में शामिल हुईं। फिल्म हेरिटेज फाउंडेशन ने यह कार्यक्रम फिल्म निर्माता और निर्देशक राज खोसला की 100वीं सालगिरह के मौके पर आयोजित किया था।

उन्होंने इंस्टाग्राम पर इस कार्यक्रम की कई तस्वीरें शेयर की और लिखा, राज साहब एक बड़े सितारे की तरह हैं। भले ही उन्होंने दुनिया को अलविदा कह दिया हो, लेकिन उनकी रोशनी अभी भी मुझमें चमकती है। जब मैं आज के नए फिल्मकारों का मार्गदर्शन करती हूं, तो मुझे उनकी आवाज अपनी आवाज में सुनाई देती है। जो ज्ञान मैं उन्हें देती हूं, वह मेरा नहीं बल्कि उनका है। कहते हैं जो आप अपने बच्चों को सिखाते हैं, वह आपके पोते-पोतियों तक भी जाता है और इस तरह उनकी विरासत धीरे-धीरे आगे बढ़ती है। उनका नाम और काम उन लोगों तक भी पहुंच रहा है जो उन्हें कभी जानते तक नहीं थे। यह शब्द लेखक अंबोरीश रॉयचौधरी की किताब राज खोसला, द ऑथराइज्ड बायोग्राफी से लिए गए हैं। दिवंगत फिल्म निर्माता की बेटियों अनीता खोसला और उमा खोसला कपूर के सहयोग से अंबरीश ने यह किताब लिखी। वह सिनेमा पर आधारित अपनी एक किताब के लिए नेशनल अवार्ड भी जीत चुके हैं। इस कार्यक्रम में राज खोसला की तीन बेहतरीन फिल्मों को दिखाया गया, जिसमें देव आनंद और सुचित्रा सेन की फिल्म बंबई का बाबू, देव आनंद, जॉनी वॉकर और वहीदा रहमान की सी.आई.डी. और धर्मेंद्र, विनोद खन्ना और आशा पारेख की फिल्म मेरा गांव मेरा देश शामिल हैं। फिल्म डायरेक्टर राज खोसला का 9 जून 1991 में निधन हो गया था।

इलियाना डिक्रूज ने अजय देवगन की फिल्म रिजेक्ट करने का बताया कारण

अजय देवगन की फिल्म 'रेड(2018)' में इलियाना डिक्रूज ने मालिनी नाम का किरदार निभाया, यह अजय देवगन के किरदार की पत्नी का रोल था। इस रोल में इलियाना को पसंद भी किया गया। जब 'रेड 2' बनीं तो इलियाना नजर नहीं आईं, उनकी जगह वाणी कपूर दिखीं। इस रिप्लेसमेंट को लेकर तमाम तरह की बातें की गईं। अब इलियाना ने इस बात को लेकर अपनी चुप्पी तोड़ी है।

'रेड 2' करने से इसलिए किया इंकार

हाल ही में अपने इंस्टाग्राम पेज पर फैंस से बातचीत के एक सेशन में इलियाना ने 'रेड 2' में काम ना करने को लेकर अपना पक्ष रखा। वह बताती हैं कि फिल्म के डायरेक्टर, मेकर्स ने उनसे कॉन्टैक्ट किया लेकिन वह इन दिनों अपने बच्चे की परवरिश में व्यस्त हैं तो फिल्म नहीं कर पाईं। इलियाना का कहना है कि मालिनी का किरदार उनके दिल के बहुत करीब है।

क्या आगे फिल्मों में नजर आएंगी इलियाना

फैंस ने जब इलियाना ने से पूछा कि वह क्या आगे फिल्मों में नजर आएंगी? तो एक्ट्रेस का जवाब था कि बिल्कुल वह फिल्मों में आगे काम करेंगी। इलियाना की आखिर फिल्म 'दो और दो प्यार' थी, यह फिल्म साल 2024 में रिलीज हुई।

सैयारा एक ऐसी लव स्टोरी है, जिसे मैं बचपन से सुनता आया हूं

मशहूर निर्देशक मोहित सूरी अपनी आने वाली फिल्म सैयारा की रिलीज का इंतजार कर रहे हैं। उन्होंने कहा है कि यह फिल्म उन प्रेम कहानियों की तरह है, जिन्हें वह बचपन से सुनते और पसंद करते आए हैं। मोहित सूरी को जहर, कलयुग, वो लम्हे, आवारापन, आशिकी 2 जैसी म्यूजिकल हिट फिल्मों के लिए जाना जाता है। उनकी फिल्में प्यार और इमोशन्स से भरी होती हैं और उनके गाने लोगों को लंबे समय तक याद रहते हैं। यह सभी फिल्में विशेष फिल्म्स के बैनर तले बनी हैं, लेकिन सैयारा को मोहित सूरी ने पहली बार यशराज फिल्म्स के बैनर तले तैयार किया है। सैयारा फिल्म के जरिए यशराज फिल्म्स और मोहित सूरी एक साथ आए हैं। दोनों ही दिल को छूने वाली लव स्टोरीज बनाने के लिए जाने जाते हैं। यह फिल्म भी एक गहरी और भावनात्मक प्रेम कहानी है। इस फिल्म में दो नए कलाकारों को लॉन्च किया गया है। इनमें आहान पांडे और अनीत पड्डा शामिल हैं। फिल्म के बारे में बात करते हुए मोहित सूरी ने कहा, आप फिल्मों के जरिए बहुत सारी खूबसूरत कहानियां बता सकते हैं, लोगों को अलग-अलग सफर पर ले जा सकते हैं। लेकिन, रोमांटिक फिल्में हमेशा खास होती हैं। सैयारा मेरे लिए उन लव स्टोरीज की तरह है, जिन्हें मैं बचपन से सुनता और पसंद करता आया हूं। मैं खुशकिस्मत हूं कि बहुत से लोगों ने अपने असली प्यार के किस्से मेरे साथ बांटे हैं। मोहित सूरी ने आगे कहा, मैं सैयारा के टीजर को मिल रही शानदार प्रतिक्रिया से बहुत खुश हूं। मुझे आहान और अनीत के लिए बहुत खुशी हो रही है। उन्होंने दिल से मेहनत की है, तभी लोग टीजर से इतना जुड़ पा रहे हैं। मैं ये खुशी अपनी पूरी टीम और यशराज फिल्म्स के साथ बांटना चाहता हूं। मुझे उम्मीद है कि जब हम प्रमोशन के दौरान सैयारा के प्यार और इमोशन्स के हर रंग को दिखाएंगे, तो लोग इससे और भी जुड़ेंगे। यशराज फिल्म्स द्वारा बनाई गई फिल्म सैयारा 18 जुलाई को सिनेमाघरों में रिलीज होने जा रही है।

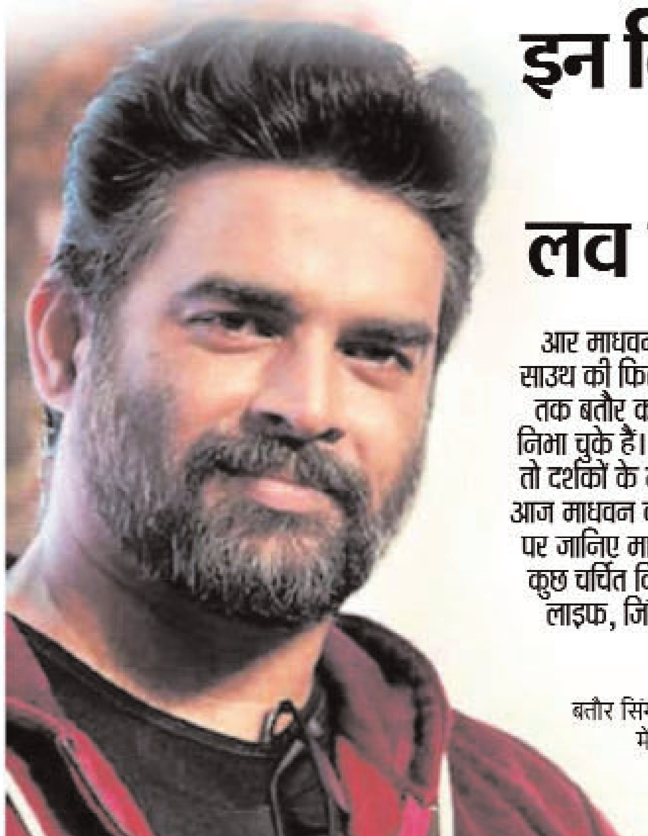

इन किरदारों में माधवन ने दिखाए अभिनय के अलग-अलग रंग लव लाइफ भी है बिल्कुल फिल्मी

आर माधवन लगभग 30 साल से हिंदी और साउथ की फिल्मों में अभिनय कर रहे हैं। अब तक बतौर कलाकार वह हर तरह के किरदार निभा चुके हैं। माधवन के निभाए कई किरदार तो दर्शकों के मन में खास जगह बना चुके हैं। आज माधवन का जन्मदिन है। इस खास मौके पर जानिए माधवन के निभाए हिंदी फिल्मों के कुछ चर्चित किरदार। साथ ही माधवन की लव लाइफ, जिंदगी से जुड़ी कुछ खास बातें भी?

रहना है तेरे दिल में

बतौर सिंगर करियर की शुरुआत साल 1996 में माधवन ने की, वह हिंदी फिल्म 'इस रात की सुबह नहीं' से जुड़े, इस फिल्म के एक गाने में गेस्ट रोल में भी दिखे। फिर 1998 में दक्षिण भारतीय फिल्मों में अभिनय करना शुरू कर दिया था। बॉलीवुड में उनका डेब्यू साल 2001 में फिल्म 'रहना है तेरे दिल में' के जरिए हुआ। आज यह एक कल्ट रोमांटिक ड्रामा फिल्म है।

रंग दे बसंती

राकेश ओमप्रकाश मेहरा निर्देशित फिल्म 'रंग दे बसंती(2006)' में माधवन एक एयरफोर्स ऑफिसर अजय सिंह राठौर के किरदार में दिखे। आमिर खान, सिद्धार्थ, सोहा अली खान के अलावा एक बड़ी स्टार कास्ट इस फिल्म में शामिल रही। फिल्म 'रंग दे बसंती' में माधवन के किरदार के कारण ही कहानी आगे बढ़ती है। यह किरदार कहानी को एक नया मोड़ देता है।

थ्री इडियट्स

फिल्म 'थ्री इडियट्स(2009)' का फरहान कुरैशी का किरदार आज भी दर्शकों को याद है। इस किरदार में माधवन खूब जमे। फिल्म में आमिर खान और शरमन जोशी के किरदारों के साथ माधवन के किरदार की दोस्ती दर्शकों के बीच एक मिसाल बन चुकी है। इस फिल्म को राजकुमार हिरानी ने निर्देशित किया था।

तनु वेड्स मनु

साल 2011 में कंगना रनौत के साथ फिल्म 'तनु वेड्स मनु' में माधवन ने मनु का किरदार निभाया। एक एनआआई डॉक्टर के सीधे-सादे किरदार में वह खूब पसंद किए। इस फिल्म के सीक्वल में भी माधवन की जोड़ी कंगना रनौत के साथ बनी थी। दोनों ही फिल्मों ने बॉक्स ऑफिस पर अच्छा कलेक्शन किया। इस फिल्म को आनंद एल रॉय ने निर्देशित किया था।

साला खड़ूस

साल 2016 में फिल्म 'साला खड़ूस' में माधवन ने बॉक्सिंग कोच का रोल किया, जो एक यंग लड़की को ट्रेंड करता है। इस फिल्म को तमिल और हिंदी दोनों भाषाओं में रिलीज किया। फिल्म को सुधा कोंगारा ने निर्देशित किया था। माधवन ने एक सख्त बॉक्सिंग कोच का रोल बखूबी निभाया था।

रॉकेट्री- द नांबी इफेक्ट

फिल्म 'रॉकेट्री- द नांबी इफेक्ट (2022)' में माधवन ने इसरो वैज्ञानिक नांबी नारायणन का रोल निभाया था, उन पर जासूसी के गलत आरोप लगे। इस वैज्ञानिक ने इसके बाद बहुत कुछ झेला। बाद में इस आरोप से वह दोषमुक्त भी हुए। इसी कहानी को रॉकेट्री- द नांबी इफेक्ट में दिखाया गया। इस फिल्म को आर माधवन ने ही निर्देशित किया था।

धोखा राउंड द कॉर्नर

साल 2022 में ही 'धोखा- राउंड द कॉर्नर' नाम की एक रोमांटिक साइकोलॉजिकल थ्रिलर फिल्म में भी माधवन नजर आए। इस फिल्म में धोखे की ऐसी कहानी है, जो दर्शकों को हैरान करती है। फिल्म में एक पति के रोल में माधवन नजर आए।

शैतान

साल 2024 में रिलीज हुई फिल्म 'शैतान' में माधवन ने एक नेगेटिव रोल किया, जो शैतानी शक्तियों का मालिक है। इस फिल्म में अजय देवगन और ज्योतिका जैसे एक्टर्स भी लीड रोल में दिखे। इस सुपरनेचुरल हॉरर फिल्म में माधवन दर्शकों को डराने में कामयाब रहे। फिल्म को विकास बहल ने निर्देशित किया था।

हिसाब बराबर

साल 2024 में ओटीटी पर रिलीज हुई फिल्म 'हिसाब बराबर' में माधवन ने एक रेल्वे टिकट चेकर का रोल किया, जो एक बड़े घोटाले को सामने लाता है। एक आम आदमी होकर वह भ्रष्टाचार करने वालों से कैसे लड़ता है, यही इस फिल्म की कहानी है। फिल्म को अश्विनी धीर ने निर्देशित किया, इसमें नील नितिन मुकेश नेगेटिव रोल में नजर आए।

केसरी 2

हाल ही में फिल्म 'केसरी 2' में माधवन नजर आए। यह फिल्म जलियांवाला बाग नरसंहार पर आधारित एक कोर्ट रूम ड्रामा फिल्म रही। इसमें अक्षय कुमार ने वकील सी शंकरन नायर का रोल किया जो इस केस को लड़ते हैं। वहीं ब्रिटिश सरकार की तरफ से यह केस माधवन का किरदार लड़ता है।

रिसर्चः तो इसलिए बेटियां बेटों से ज्यादा होशियार होती हैं

आमतौर पर पढ़ाई के मामले में बेटियों की होशियारी की सब तारीफ करते हैं। स्कूल जाने वाली बेटी की होशियारी का एक नमूना तीन साल में देखने को मिला, जब इंग्लैंड में 80,000 बच्चों (लड़कों) को रिसेप्शन क्लास में रखा गया। इनमें से ज्यादातर लड़के ऐसे थे, जिन्हें वाक्यों की संरचना भी नहीं आती थी। रिसेप्शन क्लास स्कूल से पहले बच्चों को बोलना सिखाती है। आश्चर्य की बात यह थी कि इस कक्षा में एक भी लड़की शामिल नहीं थी।

इस बात को समझने के लिए युनिवर्सिटी ऑफ ब्रिस्टल ने स्कूल में पहली बार दाखिला लेने के लिए तैयार बच्चे और बच्चियों का अध्ययन किया और पाया कि बेटों के मुकाबले बेटियां पहली बार स्कूल बेहतर तैयारी के साथ जाती हैं। स्कूल में दाखिला लेने से पहले ही उनकी भाषा और शब्दों की समझ बेटों की तुलना में बेहतर हो जाती है। बेटे और बेटियों के बीच का यह फासला आगे बड़ी क्लास तक पहुंचते-पहुंचते और भी ज्यादा हो जाता है और लड़के, लड़कियों की तुलना में पीछे छूट जाते हैं। अध्ययन रिपोर्ट के अनुसार दरअसल ऐसा इसलिए हुआ है, क्योंकि बच्चियां अपनी मां के साथ ज्यादा वक्त गुजारती हैं। जबकि बेटे खेलकूद में ज्यादा वक्त खर्च करते हैं। मां के साथ रहते हुए बच्चियों को जज्बातों की अभिव्यक्ति और कविताएं सीखने का मौका ज्यादा मिलता है। जहां बेटियों को पढ़ना, लिखना, गाना, पेंटिंग करना, कविताओं आदि के लिए ज्यादा समय दे पाती हैं। विशेषज्ञों ने रिपोर्ट पर प्रतिक्रिया देते हुए कहा कि अध्ययन के नतीजे बेहद दिलचस्प हैं और रोचक भी। इस अध्ययन में यह बात स्पष्ट हो गई है कि बेटे और बेटियों के बीच का यह फर्क किसी भेदभाव का नतीजा न होकर इस बात पर टिका है कि तीन साल की उम्र से लड़के, लड़कियों के मुकाबले खेलकूद की गतिविधियों में ज्यादा रुझान रखते हैं।

गाय की खुशी बढ़ाएगी दूध में कैल्शियम का स्तर

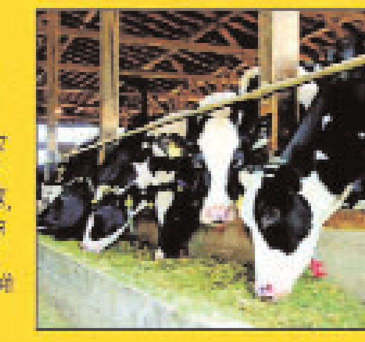

अक्सर लोगों को कहते सुना होगा कि गाय का दूध सेहत के लिहाज से श्रेष्ठ होता है, इसलिए लगभग हर परिवार में गाय का दूध ही डेली रूटीन में इस्तेमाल किया जाता है। हर उम्र के लोगों के लिए बेस्ट माने जाने वाले गाय के दूध के फायदों से आज कौन अंजान है। कैल्शियम का अच्छा स्रोत होने के साथ-साथ बच्चों के दिमाग को मजबूती देने में भी सहायक होता है। ऐसे में हर कोई चाहता है कि वह दिन में कम से कम एक बार अपने रूटीन में शामिल करें। फिर चाहे वह सिंपल दूध के रूप में हो या दही, पनीर आदि के रूप में। क्या आप जानते हैं जो दूध आप पी रहे हैं, उसे ज्यादा पौष्टिक कैसे बनाया जा सकता है ? तो नहीं, अगर आप सोच रहे हैं, गोल्डिमेंट्स, कॉम्पलेक्स और इंजेक्शन इसका सही जवाब नहीं है। इसका सही जवाब है गाय की खुशी। हैरान होने की बात नहीं है। आपको बता दें कि एक नए अध्ययन से इस दिलचस्प बात का खुलासा हुआ है कि गाय जब खुश होती है, तो पहले से कहीं गुना ज्यादा पौष्टिक दूध देती है। इतना ही नहीं, इससे कैल्शियम का स्तर भी बढ़ जाता है।

कॉफी पीने के हैं ढेर सारे फायदे

बहुत से लोगों के दिन की शुरुआत एक ब्लैक कॉफी के मग के साथ ही होती है। लेकिन इसके बावजूद कॉफी पीने के नुकसान लोग ज्यादा गिनाते हैं। सच तो ये है कि कॉफी नुकसान तब करती है जब एक दिन में पांच कप या इससे ज्यादा पी जाए। एक या दो कॉफी के कप तो सेहत के लिए अच्छे माने गए हैं। जानिए कैसे -

- कॉफी की क्वालिटी बहुत मायने रखती है। जर्मनी के एक शोध में पाया गया की डार्क रोस्ट कॉफी पीने से डीएनए मजबूत होता है। आम तौर पर कॉफी बीन्स में पेस्टिसाइड्स का छिड़काव किया जाता है। इसलिए ऑर्गेनिक कॉफी का चुनाव करें।
- कॉफी ठंडी पीने से हेल्थ-बेनिफिट्स ज्यादा मिलते हैं। गर्म कॉफी ज्यादातर फायदे खत्म कर देती है।
- कॉफी सही अनुपात में पी जाए तो वैस्क्युलर हेल्थ सुधारती है और शरीर को पोषण भी देती है।
- मसल-रीजेनेरेशन और सेल्युलर रीसाइक्लिंग के लिए भी फायदेमंद है कॉफी।
- कॉफी लीवर पर फैट नहीं जमा होने देती है और कोलेस्ट्रॉल कंट्रोल रखती है। लेकिन तब जब इसे मॉडरेशन में पीया जाए।
- एल्जाइमर और डिप्रेशन से बचाव भी करती है कॉफी। इसके लिए ये जरूरी है की कॉफी को रेगुलर और मॉडरेशन में पीया जाए। ऐसा इसलिए सम्भव है क्योंकि कॉफी में एंटीऑक्सीडेंट्स बहुत ज्यादा होते हैं।

क्या आप कपड़े खरीदने की सोच रहे है

अगर आप भी उन लोगों में से हैं जो यह मानते हैं कि कलेक्शन में कई कपड़े कीमती नजर नहीं आते हैं और कुछ हद तक चीप भी लगते है तो इन टिप्स पर जरूर गौर फरमाएं :

एक महंगी सफेद शर्ट पर हजारों रुपए खर्च करने से अच्छा है कुछ बेसिक रंग का घर ले आइए। पैसा हमेशा उन चीजों में लगाइए जो ट्रेंड में हैं। जैसे लेदर जैकेट या फ्लोरल पैंट चलन में हैं तो इन पर इन्वेस्ट कीजिये। नीले रंग की जीन्स या सफेद शर्ट तो हमेशा ही पूछे जाते हैं तो इन्हें एक्सेसराइज करने के बारे में सोचिये।

ब्राउन, मैरून और दूसरे अर्थी कलर्स जैसे क्रीम, ऑलिव दो या तीन धुलाई के बाद ही फेड हैं। इनके मैटेरियल्स की क्वालिटी ठीक नहीं है तो फिर तो एक बार धोना ही इन्हें बर्बाद कर सकता है। एक घिसी हुई ब्राउन टी-शर्ट पहनने से अच्छा है ब्लैक या नेवी पहनें। लाइट ब्लू और पिंक भी पहना जा सकता है। वैसे कहा दे कि ब्लैक में कितनी भी कमियां क्यों न दिख रही हो, लेकिन यह रंग हमेशा महंगा होने का अहसास देता है।

जब बात ट्राउजर या कोट की हो तो न्यूट्रल रंगों पर ही भरोसा करें। कैमल, क्रीम, सैंड जैसे ऑप्शंस में से कुछ चुना जा सकता है। इन रंगों के कपड़ों को लंबे वक्त तक संभालना भले ही थोड़ा मुश्किल हो लेकिन जब आप इन्हें पहनते हैं तो पूरा पैसा वसूल हो जाता है। इन्हें हमेशा ही ब्लैक के साथ पहन सकते हैं, यह सुरक्षित विकल्प है और रिच दिखने वाला भी।

कोई भी कपड़ा तब बिलकुल अच्छा नहीं लग सकता जब उस पर सल नजर आ रहे हों। अक्सर सस्ते कपड़े सिंथेटिक मटेरियल के ही बने होते हैं। इन पर प्रेस नहीं फेरी जा सकती इसलिए स्टीमर बेहतरीन विकल्प है। अगर आप इन्हें नहीं धोना चाहते हैं तो स्टीम करें और रात भर के लिए हैंगर पर छोड़ दें। ध्यान रहे कमरे में हवा अच्छे से आ रही हो, सुबह यह ड्रेस पहनने लायक सूख जाएगी। कभी भी वो कपड़े नहीं खरीदें जिन पर पहले से ही खूब ताम-झाम लटक रहे हों। कहने का मतलब है एक सिंपल टी-शर्ट खरीदें और फिर चाहें तो उस पर कोई महंगी ज्वेलरी कैरी करें। ऐसी टी-शर्ट पर पैसे जाया न करें जिस पर पहले से ही कोई चैन या लटकन लगी हो। यह ताम-झाम चीजों को गैरजरूरी ढंग से खूब महंगा भी कर देते हैं। एक बार कपड़े पहनना और फिर धुलने के लिए वाशिंग मशीन के हवाले कर देने की आदत बदल लीजिए। जरूरी नहीं कि हर बार पहनने के बाद कपड़ा धुलने ही जाए। कितना ही कीमती कपड़ा क्यों न हो, हर धुलाई उसकी उम्र और चमक कम करती ही है। इसलिए सिर्फ इतना करें कि इन्हें ताजी और ठंडी हवा में कुछ घंटों के लिए टांग दें। दाग लग गए है तो स्पॉन्ज पर वाशिंग पाउडर लगा कर साफ कर लें, बजाय पूरे कपड़े को तर करने के।

हर चीज तभी अच्छी लगती है जब वो आप पर परफेक्टली फिट हो रही हो। चीप कपड़े अक्सर फिटिंग में भी खराब होते हैं। अच्छी फिटिंग में वह ताकत होती है कि वो 500 रुपए की शर्ट को 2500 रुपए का महसूस कराये। इसलिए सस्ता कुछ भी खरीदें तो एक बार टेलर के पास जरूर ले जाएं और अपने हिसाब से फिट करवा लें।

अगर आपको चीजों को अपने ही हाथ से करना पसंद है तो किसी भी टी-शर्ट में लेस लगाने से शुरुआत कीजिये। इस तरह आप एक सिंपल सफेद टी-शर्ट को फैंसी बना सकते हैं। बस इतना ध्यान रहे कि आपकी खरीदी हुई लेस सस्ती नजर आने वाली नहीं हो। यह भी ख्याल रखें कि धागे ठीक तरह से ट्रिम कर दिए गए हों।

गर्भवती महिलाओं के लिए डिजाइनर ड्रेस

गर्भावस्था किसी स्त्री के जीवन का सबसे महत्वपूर्ण दौर होता है। इस समय कई महत्वपूर्ण बदलाव आते हैं। ऐसे में स्त्रियों को अपने फिगर और ड्रेस को लेकर कई चिंताएं सताने लगती हैं। ड्रेस का चुनाव करते समय कुछ बातों का ख्याल रखें और दिखें स्टाइलिश।

स्टाइलिश लुक के लिए

अगर वेस्टर्न वेयर पहनने की शौकीन हैं तो अब मैटरनिटी के लिए खासतौर पर डिजाइन की गई जींस ही पहनें। इसमें आप कंफर्टेबल महसूस करने के साथ ही स्टाइलिश भी दिखेंगी।

- वेस्टर्न वेयर में फ्लानो सबसे आरामदायक ड्रेस है, जिसे टी-शर्ट या शॉर्ट कुर्ती के साथ टीमअप किया जा सकता है। स्मार्ट लुक के लिए शर्ट या टी शर्ट के साथ स्टोल या स्कार्फ भी डाल सकती हैं, जो आपको एक बेहतरीन लुक देगा।
- किसी पार्टी में जाना हो तो लॉन्ग या मैक्सी ड्रेस पहन सकती हैं।
- सॉफ्ट कॉटन के लूज टॉप, ए-लाइन या वेस्ट लाइन वाली ड्रेस भी पहन सकती हैं।
- अगर ट्रेडिशनल वेयर पहनने का मन हो तो कॉटन की कंफर्टेबल कुर्ती आपके लिए बेस्ट ऑप्शन होगी।
- कोबाल्ट ब्लू, पीकॉक ग्रीन, लेमन येलो जैसे ब्राइट कलर्स चुनें।
- ज्वैलरी कम से कम पहनें। छोटे इयररिंग्स, पतली चेन, हल्की चेन पहन सकती हैं।

क्या न पहनें

- ऐसे परिधान न पहनें जिनमें कंफर्टेबल महसूस न करें।
- ज्यादा एक्सेसरीज कैरी न करें।
- [illegible]
- हील्स न पहनें

अंकिता सक्सेना, फैशन डिजाइनर

स्टोर और मल्टी स्टोर का चलन बढ़ने से इस प्रोफ़ेशन की डिमांड बहुत बढ़ गई है

बेहतरीन कैरियर बना सकते है साइलेंट सेलर

"जो दिखता है वह बिकता है" का कॉन्सेप्ट मॉल कल्चर के लिए बहुत मायने रखता है। दुकानों के सामने सिर्फ डिस्प्ले लगाने का दौर अब नहीं रहा। शो-रूम्स में हर चीज इतने सलीके से रखी हुई मिलती है कि कस्टमर कोई वस्तु खरीदने जाता है, तो अन्य चीजें भी आकर्षित करने लगती हैं। सेल्समैन से कुछ भी पूछने की जरूरत नहीं पड़ती। दरअसल, यह सब विजुअल मर्चेंडाइजिंग का कमाल है, जो अपने आप पूरी एक साइंस है यानी स्टोर में प्रोडक्ट को कैसे डिस्प्ले करना है? लॉट पर क्या कलर अच्छा लगेगा? कैसे टारगेट कस्टमर को दुकान या स्टोर के अंदर लाया जाए... इत्यादि। इसीलिए विजुअल मर्चेंडाइजर को 'साइलेंट सेलर' भी कहा जाता है। रिटेल स्टोर और मल्टी स्टोर का चलन बढ़ने से इस प्रोफेशन की डिमांड बहुत बढ़ गई है।

प्रोफ़ेशनल थीम का जमाना

विजुअल मर्चेंडाइजिंग प्रेजेंटेशन का एक आर्ट है, जिससे किसी चीज की छवि बनाई जाती है। दरअसल, यह मार्केटिंग का ही दूसरा रूप है। एक विजुअल मर्चेंडाइजर का मुख्य ध्येय कस्टमर को प्रोडक्ट के प्रेजेंटेशन के जरिए लुभाना और उन्हें खरीददारी के लिए प्रोत्साहित करना है, ताकि सेल्स में बढ़ोतरी हो। ऐसा करने के लिए स्टोर में चीजों को क्रिएटिव ढंग से लगाना, विंडो डिस्प्ले, विजुअल डिस्प्ले, कलर ब्लॉकिंग, काउंटर तथा इन-काउंटर डिस्प्ले जैसे तमाम तरीके इस्तेमाल किए जाते हैं। मॉल या स्टोर के लिए पिक्चर, ब्रोशर और पोस्टर भी यही लोग तैयार करते हैं ताकि कस्टमर से बिना कुछ बोले कम्युनिकेट किया जा सके। ऐसे प्रोफेशनल थीम के अनुसार अपनी स्ट्रेटेजी बदलते रहते हैं। मसलन, किस मौसम में क्या विंडो थीम रखना है? होली, दीपावली जैसे त्योहारों पर या वेलेंटाइन जैसे मौकों पर स्टोर की विंडो थीम क्या होनी चाहिए?

जॉब की संभावना बहुत ज्यादा है

देश में रिटेल सेक्टर तेजी से विकास कर रहा है। ऑनलाइन शॉपिंग कल्चर भी बढ़ रहा है। वॉलमार्ट, आइटीसी, शॉपर्स स्टॉप, पैंटालून, लाइफ और वेस्टसाइड जैसे ग्रुप छोटे से लेकर बड़े शहरों में दिनोंदिन मल्टीस्टोर खोल रहे हैं।

इसलिए विजुअल मर्चेंडाइजर्स के लिए यहां जॉब की संभावनाएं भी बहुत है। मॉल्स, फैशन बुटीक्स, फाइव स्टार होटल्स और रेस्टोरेंट में भी ऐसे प्रोफेशनल्स की भारी डिमांड है। विजुअल मर्चेंडाइजिंग के जानकारों के लिए एम्पोरिया, डिजाइन कंपनी, आर्किटेक्चर फर्म्स तथा थीम पार्टी ऑर्गेनाइजिंग कंपनीज में भी जॉब के तमाम अवसर हैं। युवा चाहें, तो पार्टटाइम के रूप में फ्रीलांसिंग भी कर सकते हैं।

करियर स्कोप

विजुअल मर्चेंडाइजर के लिए करियर स्कोप सिर्फ रिटेल सेक्टर में ही नहीं है। ऐसे प्रोफेशनल्स की वैल्यू ई-कॉमर्स कंपनियों में भी बहुत है, जहां ये स्नैपडील, अमेजन जैसी कंपनियों की वेबसाइट का लुक तैयार करते हैं। प्रोडक्ट डिस्प्ले पर काम करते हैं। इसी तरह रेस्टोरेंट और कैफे में आजकल सीजनल थीम तय करने का काम यही प्रोफेशनल्स कर रहे हैं। इनके हिसाब से ही खाने-पीने की चीजें कस्टमर को परोसे जाते हैं। स्टोर्स में भी प्रोडक्ट डिस्प्ले के लिए इनकी सेवाएं ली जा रही हैं। अच्छी डिजाइनिंग और फैशन सेंस रखने की वजह से टेक्सटाइल इंडस्ट्री में भी इनके लिए स्कोप लगातार बढ़ रहे हैं।

ग्राफिक डिजाइनिंग के जानकार भी यहां करियर बना सकते है

विजुअल मर्चेंडाइजिंग कोर्स में प्रवेश के लिए रिटेल या फैशन डिजाइनिंग का बैकग्राउंड होना जरूरी है। ग्राफिक डिजाइनिंग के जानकार भी यहां करियर बना सकते हैं। जॉब्स में कई इंस्टीट्यूट विजुअल मर्चेंडाइजिंग का डिप्लोमा कम्युनिकेशन में डिग्री, डिप्लोमा या सर्टिफिकेट कोर्स ऑफर कर रहे हैं। वहीं, डिग्री डिप्लोमा कोर्स ग्रेजुएशन के बाद कर सकते हैं। यहां, किसी भी स्ट्रीम से [illegible] प्रोग्राम के लिए किसी भी स्ट्रीम से [illegible] विजुअल मर्चेंडाइजिंग कोर्स के अंतर्गत स्टूडेंट को रिटेल स्टोर के लेआउट, डिजाइन स्टोर डिस्प्ले, प्रोडक्ट प्रेजेंटेशन, इंटीरियर डेकोरेशन आदि की जानकारी दी जाती है।

जॉब ग्रोथ

इस फील्ड में ग्रोथ बहुत है। अपने काम के आधार पर आप असिस्टेंट लेवल से लेकर क्लस्टर मैनेजर और ब्रांच मैनेजर तक बन सकते हैं। कई बड़ी कंपनियों की डिस्प्ले टीम में ऐसे प्रोफेशनल्स शॉप फ्लोर मैनेजर, स्टोर विजुअल मर्चेंडाइजिंग को ऑर्डिनेटर, फ्रीलांस विजुअल डिस्प्ले पर्सन, रिटेल विजुअल मर्चेंडाइजर और असिस्टेंट के तौर पर अपनी सेवाएं देते हैं।

सैलरी पैकेज

रिटेलिंग फील्ड में विजुअल मर्चेंडाइजर को काफी आकर्षक सैलरी मिलती है। करियर के शुरुआती दिनों में ऐसे प्रोफेशनल्स को 3.5 लाख रुपए तक सैलरी पैकेज आसानी से मिल जाता है। योग्यता और अनुभव के बल पर दो से तीन वर्षों बाद आपका सैलरी पैकेज 4 से 5 लाख रुपए तक पहुंच जाता है। बड़ी कंपनियों में यह पैकेज और भी अधिक हो सकता है। फ्रीलांसर के रूप में भी इस फील्ड में अच्छी कमाई है।

प्रेजेंटेशन पर बढ़ता जोर

देश की जीडीपी बढ़ रही है। खाने पीने की सुविधा अब बहुत हो गई है। लोगों की स्पेंडिंग कैपेसिटी भी बढ़ गई है। वीकेंड पर घूमने-फिरने का चलन बढ़ रहा है। स्टैंडर्ड लाइफस्टाइल मेंटेन किया जा रहा है। यही वजह है कि देश और विदेश के बड़े ग्रुप के रिटेल स्टोर तेजी से खुल रहे हैं। और उनका विस्तार भी हो रहा है। इनमें प्रतिस्पर्धा भी बढ़ रही है। इसलिए बेहतरीन प्रेजेंटेशन के जरिए प्रोडक्ट बेचने पर ज्यादा जोर दिया जा रहा है। विजुअल मर्चेंडाइजर के लिए स्कोप रेस्टोरेंट और ब्रांडेड नाम वाले खाने-पीने के स्टोर्स में भी बढ़ रहा है। इसलिए युवाओं के लिए यहां बहुत अच्छा करियर है।

अजवाइन का सेवन हैं अत्येधिक लाभकारी

भारतीय खानपान में अजवाइन का प्रयोग सदियों से होता आया है। अजवाइन पाचन को दुरुस्त रखती है। यह कफ, पेट तथा छाती का दर्द और कृमि रोग में फायदेमंद होती है। साथ ही हिचकी, जी मचलाना, डकार, बदहजमी, मूत्र का रुकना और पथरी आदि बीमारी में भी लाभप्रद होती है। आयुर्वेद के अनुसार अजवाइन पाचक, रुचिकारक, तीक्ष्ण, गर्म, कड़वी, चरपरी और पित्तवर्धक होती है। पाचक औषधियों में इसका बड़ा महत्वपूर्ण स्थान है। अकेली अजवाइन ही सैकड़ों प्रकार के अन्न को पचाने वाली होती है। आइए हम आपको अजवाइन के स्वास्थ्य लाभ के बारे में बताते हैं-

पेट खराब होने पर : पेट खराब होने पर अजवाइन को चबाकर खाएं और एक कप गर्म पानी पीएं। पेट में कीड़े हैं तो काले नमक के साथ अजवाइन खाएं। लीवर की परेशानी है तो 3 ग्राम अजवाइन और आधा ग्राम नमक भोजन के बाद लेने से काफी लाभ होगा। पाचन तंत्र में किसी भी तरह की गड़बड़ी होने पर मट्ठे के साथ अजवाइन लें, आराम मिलेगा।

वजन कम करें : अजवाइन मोटापे कम करने में भी उपयोगी होती है। रात में एक चम्मच अजवाइन को एक गिलास पानी में भिगो दें। सुबह छान कर एक चम्मच शहद के साथ मिलाकर पीने से लाभ होता है।

रेसिपी

लजीज मनभावन बनाना खिचड़ी

सामग्री

आधा दर्जन कच्चे केले, 2 चम्मच राजगिरा आटा, मूंगफली दाने 100 ग्राम, जीरा 1 चम्मच, शक्कर 1 चम्मच, काली मिर्च 5-7 बारीक पिसी हुई, हरी मिर्च 4-5 बारीक कटी हुई, हरा धनिया, बड़ा आधा चम्मच घी, नींबू, सेंधा नमक आवश्यकतानुसार।

विधि

सर्वप्रथम मूंगफली दाने को सेंक कर दरदरा पीस लें। कच्चे केले को हल्के उबाल कर छील लें और छोटे-छोटे टुकड़ों में काट लें। अब कड़ाही में आधा चम्मच घी लेकर जीरा फ्राई करें एवं हरी मिर्च और केले के पीसेस डाल दें। इसे थोड़ी देर पकने दें। अब इसमें दरदरी पिसी मूंगफली डाल दें और उपरोक्त सारा मसाला डालकर धीमी आंच पर पांच मिनट पकने दें। लीजिए तैयार है कच्चे केले से बनी लजीज फलाहारी खिचड़ी। ऊपर से बारीक कटा हरा धनिया बुरककर मिलाएं और नींबू के साथ पेश करें।

फलाहारी मोरधन के चटपटे चीले

सामग्री

1 कटोरी मोरधन, 1 कटोरी उबले मसले आलू, 1 बड़ी चम्मच किशमिश भीगी हुई, 1 कटोरी बारीक कटे टमाटर, आधी कटोरी बारीक कटी ककड़ी, आधी छोटी चम्मच लालमिर्च पावडर, आधी छोटी चम्मच चाट मसाला, थोड़ा-सा कटा हरा धनिया, सेंधा नमक स्वादानुसार।

विधि

मोरधन साफ करें। एक घंटा पूर्व पानी में गला दीजिए। इसमें भीगी किशमिश, मसले उबले आलू, नमक, लालमिर्च पावडर मिलाइए। पानी की सहायता से मिक्सी में चिकना पीसिए। घोल बनाइए। तेल लगाकर चीलों को सुनहरा सेंकिए। तैयार चीलों की एक सतह पर बारीक कटे टमाटर, ककड़ी, हरा धनिया व चाट मसाला छिड़किए। चीला फोल्ड कर गर्म-गर्म सर्व कीजिए।

कार्यालय ग्राम पंचायत बडाबर

प.स. सुजानगढ़ (चूरू)

क्रमांक- ग्रापब/2025-26/33 दिनांक 05/06/2025

आपत्ति नोटिस

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि ग्राम पंचायत बडाबर पंचायत समिति सुजानगढ़ द्वारा निम्नांकित प्रार्थियों के कब्जा सुदा भूमि के आवासीय पट्टे जारी किये जा रहे है। इस सम्बन्ध में किसी भी निकट पड़ोसी रिश्तेदार भाई बंधु को किसी प्रकार की आपत्ति हो तो ग्राम पंचायत में स्वयं उपस्थित होकर या रजिस्टर डाक द्वारा आपत्ति आगामी 30 दिवस में दर्ज करवा सकता है। मियाद समय पुरा होने के उपरांत किसी भी आपत्ति पर विचार नहीं किया जायेगा।

क्र.स.	आवेदक का नाम	पिता का नाम	जाति	निवासी
1	नानूराम	रामनिवास बिरड़ा	जाट	जिनरासर
2	शिवराज	रामनिवास बिरड़ा	जाट	जिनरासर
3	भंवर सिंह	मांगू सिंह	राजपूत	जिनरासर
4	देवाराम	फेफाराम	मेघवाल	बडाबर
5	नानूराम	फेफाराम	मेघवाल	बडाबर
6	मनोज कुमार	भागुराम	नायक	बडाबर

ग्राम विकास अधिकारी
ग्राम पंचायत बडाबर
पं. स. सुजानगढ़ (चूरू)

प्रशासक
ग्राम पंचायत बडाबर
पं. स. सुजानगढ़ (चूरू)

एसपी ने जिले के पुलिस अधिकारियों की ली क्राइम मीटिंग, लंबित प्रकरणों के शीघ्र निस्तारण सहित अन्य मामलों में दिये आवश्यक दिशा निर्देश

धौलपुर(निसं.)। जिले में और अधिक बेहतर पुलिसिंग सुनिश्चित करने के लिए पुलिस अधीक्षक सुमित मेहरडा ने कलेक्ट्रेट के सभागार कक्ष में क्राइम मीटिंग कर पुलिस अधिकारियों को आवश्यक दिशा निर्देश दिए। पुलिस अधीक्षक ने क्राइम मीटिंग के दौरान जिले की कानून व्यवस्था की स्थिति के सम्बन्ध में चर्चा की एवं वृत्ताधिकारियो व थानाधिकारीगण से आमजन से प्राप्त परिवादो के निस्तारण की समीक्षा की, सम्पति संबंधित प्रकरणों, सरकारी कर्मचारियों पर हमले के मामलों का रिव्यू कर सख्त कार्यवाही करने, थाना स्तर के टॉप-10 अपराधियों की अतिशीघ्र गिरफ्तारी, अवैध खनन की रोकथाम में प्रभावी कार्रवाई करने, लंबित प्रकरणों के शीघ्र निस्तारण, यातायात नियमों की कडाई से पालना सुनिश्चित कराने, अवैध मादक पदार्थों की तस्करी की रोकथाम एवं धरपकड़ के लिए कार्यवाही करने, थाना स्तर पर परिवादियो को संवेदनशीलता से सुनने एवं उनकी समस्या का उचित निराकरण करने, सडक दुर्घटनाओं की आईआरएडी में एंट्री करने आदि के निर्देश दिए गए इसके साथ ही पोक्सो सहित महिलाओं के साथ होने वाले अन्य गंभीर श्रेणी के अपराधों की समीक्षा कर उनकी वर्तमान स्थिति की जानकारी लेते हुए शीघ्र निस्तारण के निर्देश दिए, इसके साथ ही हत्या के प्रयास व फायरिंग के मामलों की समीक्षा कर वांछित चल रहे आरोपियों की शीघ्र गिरफ्तारी के निर्देश दिए गए है पुलिस अधीक्षक द्वारा कम्युनिटी पुलिसिंग को बढ़ावा देने के साथ-साथ वांछित इनामी एवं अन्य अपराधियों की शीघ्र गिरफ्तारी के निर्देश दिये गये है प्रतिबंधित चम्बल बजरी की रोकथाम एवं धरपकड़ के लिए और अधिक कडाई से कार्रवाई करने के निर्देश दिए है इस अवसर पर अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक शिकाऊ हवा सिंह, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक एडीएफ बाडी कमल कुमार जांगिड, वृत्ताधिकारी वृत्त धौलपुर मुनेश मीणा, वृत्ताधिकारी वृत्त ग्रामीण धौलपुर अनूप सिंह, वृत्ताधिकारी वृत्त बाडी महेंद्र सिंह, वृत्ताधिकारी वृत्त सरमथुरा नरेन्द्र मीणा सहित सभी थानों के थानाधिकारीगण उपस्थित रहें।

निर्जला एकादशी पर छान्देल में द्वितीय विशाल भंडारे का आयोजन

चाकसू(निसं.) उपखंड क्षेत्र चाकसू के ग्राम छान्देल कलां में गुरूवार को पवित्र निर्जला एकादशी के अवसर पर भव्य भंडारे का आयोजन किया जा रहा है। यह आयोजन खाटू बस सेवा परिवार छान्देल कलां के तत्वावधान में किया जाएगा। भंडारे के अंतर्गत सुबह 10 बजे से नींबू शिकंजी व शरबत वितरण की व्यवस्था गई है, जिसमें क्षेत्र के सैकड़ों श्रद्धालुओं के शामिल होने की संभावना है। आयोजनकर्ताओं ने बताया कि यह इस प्रकार का द्वितीय विशाल आयोजन है और इसका उद्देश्य गर्मी में यात्रियों और राहगीरों को राहत प्रदान करना है। आयोजकों ने सभी श्याम प्रेमियों से तन, मन और धन से सहयोग भी किया। इस दौरान यह सेवा सफलतापूर्वक संपन्न हो हुई। भंडारे में निंबू शिंकजी व शरबत सेवा मे हजारों राहगीरों ने लाभ उठाया, जिससे यह आयोजन एक जनसेवा का उत्सव बन गया।इस मौके पर कैलाश चन्द शर्मा, सत्यनारायण प्रजापत, रवि तिवाड़ी, हेमराज गुर्जर, अशोक प्रजापत, गणेश प्रजापत, श्योजीराम गुर्जर, सियाराम गुर्जर, सुरेश सैन सहित अन्य श्याम प्रेमी मौजूद रहें।

जल संसाधन विभाग मंत्री 9 एवं 10 जून को धौलपुर में

***धौलपुर (निसं.)** जल संसाधन विभाग मंत्री सुरेश सिंह रावत 9 जून को सायं 7.30 बजे धौलपुर आएगें। अतिरिक्त जिला कलक्टर हरिराम मीना ने बताया कि मंत्री सुरेश सिंह रावत द्वारा 10 जून को जिले के 7 कार्यो का लोकार्पण करेगें। उन्होंने बताया कि 10 जून को प्रातः 10.15 बजे इंटेक वेल धौलपुर लिफ्ट प्रोजेक्ट, 11.30 बजे उर्मिला सागर बांध, दोपहर 1.15 बजे नहर कोठी बसेड़ी, सायं 3.15 बजे बंध बरैठा का भ्रमण करेगें। इसके उपरान्त सायं 4.30 बजे जयपुर के लिए प्रस्थान करेगें। उन्होंने बताया कि सम्पूर्ण भ्रमण कार्यक्रम के दौरान तहसीलदार सरमथुरा, बाड़ी, धौलपुर, बसेड़ी को अपने-अपने क्षेत्र में प्रोटोकॉल अधिकारी तथा अधीक्षण अभियन्ता जल संसाधन विभाग को लाइजनिंग अधिकारी नियुक्त किया गया है।*

नरेंद्र मोहन साहू बने नगर पालिका फुलेरा के विधि सलाहकार

फुलेरा(निसं.) राज्य सरकार द्वारा नगर पालिका फुलेरा में वरिष्ठ अधिवक्ता नरेंद्र मोहन साहू को विधि सलाहकार नियुक्त किया गया है। मोहन साहू, कैलाश नारायण साहू के सुपुत्र हैं, और उन्होंने वर्ष 2004 में सांभर न्यायालय में वकालत प्रारंभ की थी, जिससे उन्हें 22 वर्षों का लंबा और समृद्ध अनुभव प्राप्त है। नरेंद्र मोहन साहू पूर्व में भाजपा मंडल फुलेरा के विधि प्रकोष्ठ के अध्यक्ष भी रह चुके हैं तथा नगर पालिका फुलेरा में पूर्व में भी सफल विधि सलाहकार के रूप में सेवाएं दे चुके हैं। उनके कार्यकाल को नगर पालिका प्रशासन एवं स्थानीय नागरिकों द्वारा सराहा गया था। उनकी पुनः नियुक्ति से नगर पालिका को विधिक मामलों में सुदृढ़ मार्गदर्शन की आशा है। स्थानीय जनप्रतिनिधियों और अधिवक्ताओं ने साहू को बधाई दी और उनके उज्ज्वल कार्यकाल की कामना की है।

नगर परिषद सुजानगढ (चूरू) राजस्थान

E-mail id:- nps222419@gmail.com Phone no. 01568-222419

क्रमांक :–न.प.सु/विकास शाखा/2025/2556–60 दिनांक :– 05.06.2025

निविदा सूचना – 2025

नगर परिषद सुजानगढ़ द्वारा विभिन्न प्रकार के कार्यों के लिये उपयुक्त सक्षम श्रेणी के राज्य सरकार के विभागों में प्रजीकृत ठेकेदारों/फर्मस से निविदा दिनांक 11.06.2025 को दोपहर 3:00 बजे तक आमन्त्रित की जाती है। निविदा प्रतियां दिनांक 11.06.2025 को दोपहर 1:00 बजे तक विक्रय की जावेगी प्राप्त निविदायें उसी दिन उपस्थित ठेकेदारों के समक्ष सायं 4:00 बजे खोली जावेगी। उक्त निविदा से संबंधित विस्तृत विवरण वेबसाईट www.sppp.raj.gov.in पर प्राप्त की जा सकती है। निविदा का बीड क्रमांक– DLB2526WSOB06839 कार्यालय समय में किसी भी कार्य दिवस को नगर परिषद सुजानगढ के कार्यालय में एवं सूचना बोर्ड पर देखी जा सकती है।

राज.संवाद/सी/25/3744

आयुक्त
नगर परिषद सुजानगढ

नगर परिषद सुजानगढ (चूरू) राजस्थान

E-mail id:- nps222419@gmail.com Phone no. 01568-222419

क्रमांक :–न.प.सु/विकास शाखा/2025/2050 दिनांक :– 04.06.2025

निविदा सूचना – 2025

नगर परिषद सुजानगढ़ द्वारा विभिन्न प्रकार के कार्यों के लिये उपयुक्त सक्षम श्रेणी के राज्य सरकार के विभागों में प्रजीकृत ठेकेदारों/फर्मस से निविदा दिनांक 11.06.2025 को दोपहर 3:00 बजे तक आमन्त्रित की जाती है। निविदा प्रतियां दिनांक 11.06.2025 को दोपहर 1:00 बजे तक विक्रय की जावेगी प्राप्त निविदायें उसी दिन उपस्थित ठेकेदारों के समक्ष सायं 4:00 बजे खोली जावेगी। उक्त निविदा से संबंधित विस्तृत विवरण वेबसाईट www.sppp.raj.gov.in पर प्राप्त की जा सकती है। निविदा का बीड क्रमांक– DLB2526WSOB06837 कार्यालय समय में किसी भी कार्य दिवस को नगर परिषद सुजानगढ के कार्यालय में एवं सूचना बोर्ड पर देखी जा सकती है।

राज.संवाद/सी/25/3743

आयुक्त
नगर परिषद सुजानगढ

कार्यालय अधिशाषी अभियंता जन स्वा. अभि. विभाग, नगर खण्ड- प्रथम उत्तर पानीपेच जयपुर

Email ID ;- eenorthv.jai.phed@rajasthan.gov.in Telephone no. 0141-2301453

क्रमांक- अअ/नख-1/निविदा/2024-25/407-415 दिनांक- 02.06.2025

निवदा - सूचना

राजस्थान के महामहिम राज्यपाल महोदय की ओर से निम्नलिखित कार्य के लिए पी.डब्ल्यू. एफ. एण्ड आर. पार्ट -ना अपेन्डिक्स 16 दिनांक 01.7.99 से लागू एवं समय-समय पर पंजीयन नियमों से संबंधित वित्त विभाग द्वारा जारी आज दिनांक तक संशोधित परिपत्रों के विभाग में उपयुक्त श्रेणी में पंजीकृत एवं अनुभवी ठेकेदारों / आपूर्तिकर्ता से मोहरबन्द निविदाएं अनुरूप आंमत्रित की जाती है। निविदा प्रपत्र इस कार्यालय में निर्धारित दिनांक तक निविदा शुल्क जमा कराकर प्राप्त किए जा सकते है। निविदाओं को निर्धारित दिनांक को प्रातः 3.00 बजे उपस्थित ऑनलाईन / निविदादाताओं के समक्ष खोली जावेगी। निर्धारित दिनांक को अवकाश होने की स्थिति में अगले कार्यदिवस पर निविदा संबंधी कार्यवाही की जावेगी।

क.सं.	कार्य का विवरण	अनुमानित राशि लाखों में	अमानत राशि	निविदा शुल्क	निविदा निम्न दिनांक तक बेची जायेगी।	निविदा खोलने की दिनांक
04/2025-26	Repairing & Maintenance of Office building of City Circle North Jaipur.	4.27 लाख	8540/-	500/-	09.06.2025	09.06.2025

UBN NO.- PHE2526WSOB03028

DIPR/C/7286/2025

(विकास शर्मा)
अधिशाषी अभियंता,
जन स्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग,
नगर खण्ड - प्रथम (उत्तर), पानीपेच जयपुर

कार्यालयः- सदस्य सचिव, राजस्थान मेडिकेयर रिलीफ सोसायटी, राजकीय डी. बी. सम्बद्ध चिकित्सालय वर्ग, चूरू

Email:-, msdbhchuru@gmail.com Phone- 01562-250333
क्रमांकः- लेखा/निविदा/2025/ 2007 दिनांक- 30.5.25

निविदा आमन्त्रण सूचना

इस चिकित्सालय को निम्न विवरणानुसार से सामग्री क्रय / कार्य हेतु वार्षिक दर संविदा / अनुवन्ध किया जाना है। अतः इच्छुक निविदादाताओं यथा - विर्निमाताओं/ अधिकृत फर्मो / डीलरों / बोनाफाइड डीलर्स आदि से दो रूपों में निविदा प्रस्ताव यथा-तकनीकी प्रस्ताव व वित्तीय प्रस्ताव हेतु मुहरबन्द लिफाफों में निविदायें आमन्त्रित है। निविदा की शर्ते, निविदा शुल्क, अमानत राशि, अनुमानित लागत, ई निविदा प्रपत्र विक्रय / डाउनलोड कर प्रस्तुत करने/निविदा खोलनें की तिथि व समय इत्यादि की सम्पूर्ण जानकारी कार्यालय कार्य दिवस / समय में और वैवसाईट sppp.rajasthan.gov.in पर देखनें /डाउनलोड करनें हेतु अपलोड कर दी गयी हैं।

क्र.सं.	निविदा सामग्री का विवरण	UBN No.
1	HCV Dialysis/ medicine Consumable Item purchases	MHS2526GSRC01423
2	नेत्र विभाग में दवाई/कंज्युमेबल आईटम्स क्रय हेतु	MHS2526GSRC01424
3	सफाई कार्य हेतु सफाई सामग्री आईटम्स क्रय हेतु	MHS2526GSRC01426
4	बायोवैस्ट पॉली बैग क्रय हेतु	MHS2526GSRC01427
5	ब्लड बैंक रिजेंटस क्रय हेतु	MHS2526GLRC01449

DIPR/C/7247/2025

सदस्य सचिव (RMRS)
राजकीय डी. बी. सम्बद्ध चिकित्सालय वर्ग, चूरू

कार्यालय अधिशाषी अभियन्ता, सार्वजनिक निर्माण विभाग, खण्ड तारानगर

क्रमांक- 148-157 दिनांक 26/05/2025

ई-निविदा सूचना सं. 04/2025-26

राजस्थान के राज्यपाल महोदय की ओर से तारानगर खण्ड के अन्तर्गत सडक निर्माण
एवं मरम्मत कार्य कुल 10 कार्यों हेतु उपयुक्त श्रेणी के सार्वजनिक निर्माण विभाग राजस्थान में पंजीकृत संवेदकों एवं राज्य सरकार / केन्द्र सरकार के अधिकृत संगठनों / केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग / डाक एवं दूर संचार विभाग / रेलवे इत्यादि में पंजीकृत संवेदकों जो कि राजस्थान सरकार के उपयुक्त श्रेणी के संवेदकों के समकक्ष हों, से निर्धारित प्रपत्र में ई- टेन्डिरिंग प्रक्रिया द्वारा ऑन-लाईन ई-निविदाऐं आमन्त्रित की जाती है। आर.पी.डब्ल्यू. ए. - 100 की शर्त लागू होगी । ई-निविदा से सम्बन्धित विवरण वेबसाईट dipr.rajasthan.gov.in एवं विभागीय वेबसाईट eproc.rajasthan.gov.in तथा sppp.raj.nic.in पर देखा जा सकता है।
SPPP पर अपलोड NIB No. PWD252640830 के UBN No. निम्न प्रकार

S.No.	UBN No.	S.No.	UBN No.
1	PWD2526WSOB02660	2	PWD2526WSOB02661
3	PWD2526WSOB02664	4	PWD2526WSRC02665
5	PWD2526WSRC02666	6	PWD2526WSOB02667
7	PWD2526WSOB02669	8	PWD2526WSOB02675
9	PWD2526WSOB02676	10	PWD2526WSOB02679

DIPR/C/7088/2025

(विजय प्रताप कस्वां)
अधिशाषी अभियन्ता,
सा.नि.वि. खण्ड-तारानगर

OFFICE OF THE ADDITIONAL CHIEF ENGINEER, (PROJECT) PHED REGION CHURU (RAJ.)

Email : ace.chu.phed@rajasthan.gov.in

S.No. : Dated :

Notice Inviting Bid No 02/2025-26

Bids for Work of Work for reorganisation of rural water supply scheme padihara-loha under rural sub division ratangarh district churu with one year defect liability period are invited from interested bidders upto 18.00 hrs 09.06.2025. Other particulars of the bid may be visited on the procurement portal http://eproc.rajasthan.gov.in, http://sppp.rajasthan.gov.in and departmental website https://phed.raj.nic.in. (The approximate value of the procurement is Rs. 142.67 Lakhs

DIPR/C/7227/2025

(Rammurti)
Additional Chief Engineer
(Project),PHED, Churu

कार्यालय नगरपालिका उदयपुरवाटी जिला झुन्झुनू (राज.)।

कमांक- न. पा. उ / भूमि / 2025 - 26 / 1115 दिनांक- 3/6/25

आपत्ति - विज्ञप्ति

सर्व साधारण को सूचनार्थ प्रकाशित किया जाता है कि नगरपालिका उदयपुरवाटी मे निम्न आवेदक द्वारा सामने अंकित नियमन पटटा, निर्माण स्वीकृति, नामान्तरण चाहने बाबत इस कार्यालय मे आवेदक पत्र प्रस्तूत किये है वांछित स्वीकृति जारी करने से पूर्व इस सम्बन्ध मे 7 दिवसीय आपत्ति विज्ञपति का उतद प्रकाशन किया जाकर विज्ञप्ति प्रकाशन होन की तिथि से 7 दिवस मे आपत्तियां मय सबूत आमंत्रित की जाती है बाद मियाद प्राप्त आपत्तियो पर कोई विचार नही होगा तथा एक तरफा कार्यवाही की जावेगी

क्रसं.	आवेदक का नाम मय पता	भूखण्ड / सम्पत्ति स्थान का विवरण	क्षेत्रफल	प्रयोजन का विवरण
1.	दर्शना देवी पत्नि श्री मोहित लाल जाति मेझावाल निवासी ग्राम नांगल तहसील उदयपुरवाटी ।	खसरा नं 471	264.13 वर्ग मीटर	आबादी भूमि पटटा
2.	श्री राम सैनी पुत्र श्री सांवरमल सैनी जाति माली निवासी उदयपुरवाटी जिला झुन्झुनू राज0 ।	खसरा नं 2273	28.10	गैर मुम आबादी
3	बनवारीलाल सैनी पुत्र श्री हनुमान प्रसाद सैनी निवासी वार्ड नं 10. सीकर रोड उदयपुरवाटी	खसरा नं 2285	321.06 वर्ग मीटर	वाणिज्यक पटटा
4	अशोक कुमार पुत्र श्योपाल जाति मेघवाल निवासी वार्ड नं 29, उदयपुरवाटी जिला झुन्झुनू राज0 ।	खसरा नं 4015 / 1917	6600 वर्ग मीटर	भूमि रूपान्तरण आवासीय

अधिषाशी अधिकारी
नगरपालिका उदयपुरवाटी

Govt. of Rajasthan

Office of Deputy Director Women Empowerment, Churu, Rajasthan

Phone No:01562-250980 Department website: www.wcd.rajasthan.gov.in

e-TENDER NOTICE

NIT No. 11/2025-26/ Dated 28-05-2025

e-Bid is invited For Procurement of Services for 16-06-2025to 28-02-2027 [Out sourcing of services for Pannadhay Suraksha Evam Samman Kendra (PSSK)] at Office Premises Churu. Tender can be uploaded from 28-05-2025to upto 01:00 PM on 09-06-2025. Details may be seen in the Bidding Document on our website www.wcd.rajasthan.gov.in and https://sppp.rajasthan.gov.in. Tender form may be seen and downloaded from website https://eproc.rajasthan.gov.in. This tender shall be processed through e-procurement portal of Govt. of Rajasthan.

Item	Estimated value	Period	Tender Fee	Tendering Process Fee	Earnest Money	Date and Time of upload Tender online	Last Date of Submission on DD of Tender Fee and Processing Fee	Date and time of opening of the Tender	NIB/ UBN No
Out sourcing of services for Pannadhay Suraksha Evam Samman Kendra (PSSK)	Rs. 30.87 Lakh For up to 28-02-2027	16-06-2025 to 28-02-2027	Rs. 500	Rs. 500	Rs. 61740/-	from 28- 05-2025at 01.00PM to 09-06-2025 up to 1.00 PM	09-06-2025 up to 02:00 PM	On 09-06-2025 at 04 .00 PM	NIB-WMP2526A0053 UBN-WMP2526SLOB00054

DIPR/C/7067/2025

(Rajendra Singh Shekhawat)
Member Secretary & Deputy Director
Women Empowerment Churu

हैतुक दर्शित करने के लिये सूचना

(साधारण प्रारूप)
व्यवहार प्रक्रिया संहिता पहली अनुसूची संख्यांक 4

न्यायालय उपखण्ड अधिकारी महोदय जोबनेर जिला जयपुर
मुकदमा नं 23/2024
जमीला बेगम बनाम ग्राम पंचायतजोरपुरा जोबनेर वगैरह

1. ग्राम पंचायत जोरपुरा (जोबनेर), जरिये सरपंच, जिला जयपुर।
2. यूसुफ मोहम्मद पुत्र स्व0 श्री भूरे खां उर्फ भूरा उर्फ भंवर खा जाति-मुसलमान, निवासी-जोबनेर, तहसील जोबनेर, जिला जयपुर।
3. लाल मोहम्मद पुत्र स्व0 श्री भूरे खां उर्फ भूरा उर्फ भंवर खां, जाति-मुसलमान, निवासी-जोबनेर, तहसील जोबनेर, जिला जयपुर।
4. दौलत पत्नि स्व. सुबराती, निवासी-जोबनेर, तहसील जोबनेर जिला जयपुर।
5. मोहम्मद अली पुत्र स्व0 सुबराती, निवासी-जोबनेर, तहसील जोबनेर, जिला जयपुर।
6. शमा पुत्री स्व. सुबराती, निवासी-जोबनेर, तहसील जोबनेर जिला जयपुर।
7.तब्बसुम पुत्री स्व. सुबराती, निवासी-जोबनेर, तहसील जोबनेर, जिला जयपुर।
8. शाहबुद्धीन पुत्र स्व. सुबराती, निवासी-जोबनेर, तहसील जोबनेर, जिला जयपुर।
9.रूकसाना पुत्री स्व. सुबराती पत्नि फैज मोहम्मद, निवासी-सुनारो का मोहल्ला, बगरू, जिला जयपुर।
10. श्रेहाना पुत्र स्व. सुबराती पत्नि फकरूद्दीन, निवासी सुनारों का मोहल्ला, बगरू, जिला जयपुर।
11 रूबीना पुत्री स्व. सुबराती पत्नि श्री इब्राहिम.. निवासी ग्राम चकवाडा तहसील फागी, जिला जयपुर।
12.रेशमा पुत्री स्व. सुबराती पत्नि ईशाक, निवासी-नीलगरो का मोहल्ला, मस्जिद के पास, सिकन्दरा, जिला दौसा।
13. अब्दुल वहीद पुत्र मोहम्मद अली, निवासी-बिसातियों का मोहल्ला, जोबनेर, जिला जयपुर।
14.अमीना बानो पत्नि रियाजुदीन, निवासी बिसातियों का मोहल्ला, जोबनेर, जिला जयपुर।
15. आशा देवी पत्नि नाथूलाल, जाति-सुनार, निवासी-जोबनेर, जिला जयपुर।
16. ईश्वर लाल पुत्र हरदेवराम, जाति-यादव निवासी-गोकुलपुरा कालख, तहसील फूलेरा, जिला यपुर
17. उमा देवी पत्नि अशोक कुमार, जाति-ब्राह्मण, निवासी-म.नं. 517, सुभाष चौक शंकर गुर्जर की गली, जयपुर
18. उमाशंकर पुत्र सोमदत्त, जाति-ब्राह्मण, निवासी लूणवा तहसील नावा जिला नागौर
19.उलपत बेगम पत्नि बुन्दू शाह, जाति-मुसलमान, निवासी जोबनेर, जिला जयपुर।
20. कजोडमल पुत्र गणेश, जाति-जाट, निवासी भैसावा, जिला जयपुर।
21. कमलेश पत्नि उपेन्द्र सिंह, जाति-रापजू, निवासी चिनोटिया तहसील फुलेरा जिला जयपुर
22. कमलेश गौड पत्नि डा. इन्द्रसहाय, जाति-ब्राह्मण, निवासी-गोड भवन इन्द्रा कालोनी, जोबनेर, जिला जयपुर
23. कल्याणमल पुत्र भुवाना, जाति-जाट, निवासी मुरलीपुरा जोबनेर, तहसील फूलेरा जिला जयपुर
24. कुसुम देवी पत्नि गणपत लाल, जाति-ब्राह्मण, निवासी नया बाजार, वार्ड नं.8 जोबनेर, जिला जयपुर।
25. कुसुम देवी पुत्री महावीर कुमार, जाति-जैन, निवासी जैनियों का मोहल्ला जोबनेर जिला जयपुर
26. कान्ता देवी पत्नि रमेश चन्द, जाति लखेरा, निवासी वार्डनंबर-9. जैन मोहल्ला जोबनेर जिला जयपुर
27. कान्ता देवी पत्नी भागचन्द, जाति-जैन, निवासी जोबनेर जिला जयपुर
28. कालूराम पुत्र बालदास, जाति-स्वामी, निवासी नयाबास ढाणी नागान जोबनेर जिला जयपुर
29. किरण पत्नि गिरीराज, जाति-ब्राह्मण, निवासी गुजराती मोहल्ला वार्ड नं. 4 जोबनेर जिला जयपुर
30. गणेशदास पुत्र बालदास, जाति-स्वामी, निवासी-नया बास ढाणी नागान जोबनेर जिला जयपुर
31. गोपाललाल पुत्र धन्नाराम, जाति-जाट, निवासी-पूनाना तहसील आमेर, जिला जयपुर
32. गोरधनलाल पुत्र घीसाराम, निवासी-पालवाली ढाणी डेहरा तहसील जोबनेर जिला जयपुर
33. चैनी देवी पत्नि जवानाराम, जाति-जाट, निवासी-बहादूरपुरा तहसील फूलेरा जिला जयपुर
34. ज्योति देवी पत्नि मनोज कुमार, जाति-जैन, निवासी-सिन्धी कॉलोनी, जोबनेर जिला जयंपुर
35. जोधाराम पुत्र धन्नाराम, जाति-जाट, निवासी पूनाना तहसील आमेर जिला जयपुर
36. तारा पत्नी कमलकुमार, जाति जैन, निवासी-जोबनेर, जिला जयपुर
37. दीपिका देवी पुत्री महावीर कुमार, जाति- जैन, निवासी-जैन मोहल्ला, जोबनेर, जिला जयपुर।
38. धर्मचंद पुत्र भंवरलाल, जाति-जन, निवासी-नई ढाणी, शांति नगर, हटवाड़ा जयपुर
39. नूरमोहम्मद पुत्र दीन मोहम्मद कुरैशी, जाति मुसलमान, निवासी-जोबनेर, जिला जयपुर
40. नानूराम पुत्र झुंथाराम, जाति-जाट, निवासी-भगवतपुरा तहसील फूलेरा जिला जयपुर
41.नारायणी देवी पत्नी शंकर लाल, जाति-ब्राह्मण, निवासी-हरिपुरा
42. निधी पत्नि जितेन्द्र कुमार, जाति जैन, निवासी अग्रवालो का मोहल्ला, जोबनेर, जिला जयपुर
43.निर्मला देवी पत्नि महावीर कुमार, जाति-जैन, निवासी-जैनियो का मोहल्ला जोबनेर जिला जयपुर
44.नीरू देवी पत्नि राजेन्द्र सिंह, जाति-ब्राह्मण, निवासी गुजरातीयो का मोहल्ला, वार्ड नं. 5 जोबनेर जिला जयपुर
45. नीलू देवी पुत्री महावीर कुमार, जाति-जैन निवासी-जैन मोहल्ला, जोबनेर जिला जयपुर
46. परवीन बानो पत्नि नजरूदीन कुरैशी, जाति मुसलमान, निवासी जोबनेर जिला जयपुर
47. पारस देवी पत्नि सुरेशचन्द, जाति-जैन, निवासी जोबनेर जिला जयपुर
48. पोखरमल पुत्र धन्नाराम, जाति-जाट, निवासी पुनाना तहसील आमेर जिला जयपुर
49. बन्नाराम पुत्र हीरालाल, जाति-जाट, निवासी जोरपुरा जोबनेर जिला जयपुर
50. बबीता पत्नि राकेश कुमार, जाति जैन, निवासी-जैनियों का मोहल्ला, जोबनेर, जिला जयपुर
51. भागसिंह पुत्र उम्मेद सिंह, जाति-राजपूत, निवासी वार्ड नं. 15 जोबनेर जिला जयपुर
52. मुकेश पुत्र चौथमल, जाति-सोनी, निवासी-दांतारामगढ जिला सीकर
53. मंजू देवी पत्नि कमल चन्द, जाति-बैगानी, निवासी जोबनेर, जिला जयपुर
54. मंजू देवी पत्नि महावीर कुमार, जाति-जैन, निवासी जैन मोहल्ला, जोबनेर जिला जयपुर
55. मन्नीराम पुत्र बालदास, जाति-स्वामी, निवासी-नयाबास ढाणी नागान जोबनेर जिला जयपुर
56. मुनेश पुत्र भागचन्द, जाति-जैन, निवासी जोबनेर जिला जयपुर
57. मनोज पुत्र महावीर कुमार, जाति-जैन, निवासी-जैन मोहल्ला जोबनेर जिला जयपुर
58. मुराद खां उर्फ उम्मेद खां पुत्र अनवर खां, जाति-मुसलमान, निवासी-पठानो का मोहल्ला, वार्ड नंबर 11 जोबनेर, जिला जयपुर 59. महेन्द्र कुमार पुत्र रामसहाय, जाति-ब्राह्मण, निवासी जोबनेर जिला जयपुर
60. माया देवी पुत्री महावीर कुमार, जाति-जैन, निवासी-जैन मोहल्ला जोबनेर जिला जयपुर
61. मालचन्द पुत्र नन्दाराम, जाति-नाई, निवासी जोबनेर, जिला जयपुर
62. मीना शर्मा पत्नि गौरीशंकर, जाति-ब्राहमण, निवासी-जोबनेर जिला जयपुर
63. योगेश कुमार पुत्र जवाहरमल, जाति-जैन, निवासी-जोबनेर जिला जयपुर
64. रुक्मणी देवी पत्नी मोहनलाल, जाति-ब्राह्मण, निवासी इंद्रगढ़
65. रूडाराम पुत्र धन्नाराम, जाति-जाट, निवासी पुनाना तहसील आमेर जिला जयपुर
66. रमेश कुमार पुत्र मांगीलाल, जाति-मेघवाल, निवासी-बख्तावरपुरा तहसील चिडावा जिला झुन्झुनु,
67. रविन्द्र पुत्र जगन्नाथ प्रसाद, जाति-पालीवाल, निवासी बनीपार्क जयपुर
68. राजेश कुमार पुत्र मांगीलाल, जाति-खटीक, निवासी-वार्ड नंबर-12, खटीको का मोहल्ला, जोबनेर जयपुर
69. लक्ष्मणराम पुत्र नाथूराम, जाति-जाट, निवासी-मुरलीपुरा, जोबनेर, तहसील फूलेरा, जिला जयपुर
70. लालचन्द पुत्र भंवरलाल, जाति-जाट, निवासी ग्राम रता रोजडी तहसील फूलेरा जिला जयपुर
71. लालाराम पुत्र भुवाना, जाति-जाट, निवासी-मुरलीपुरा जोबनेर तहसील फूलेरा, जिला जयपुर
72. लालाराम पुत्र रूडाराम, जाति-जाट, निवासी दीपपुरा
73. विकास पुत्र गोपाल लाल, जाति-लखेरा, निवासी-सुनारो का मोहल्ला, वार्ड नंबर 5 नया बाजार, जोबनरे जिला जयपुर
74. विध्योतमा पत्नि नरेन्द्र कुमार, जाति-ब्राह्मण, निवासी वार्ड नं. 2 कालेज रोड, जोबनेर जिला जयपुर
75. विनोद उर्फ बीना पत्नि महेन्द्र कुमार, जाति-जैन, निवासी 30 स्टाफ कालोनी, कृषि कालेज जोबनेर
76. विनोद कंवर पत्नि सरदार सिंह, जाति राजपूत, निवासी-सजमात की डूंगरी, चिरनोटीया तहसील फूलेरा जिला जयपुर
77. शम्भुदास पुत्र बालदास, जाति-स्वामी, निवासी नया बास ढाणी नागान जोबनेर जिला जयपुर
78. शमीना बानो पत्नि गफार मोहम्मद, निवासी-जोबनेर जिला जयपुर
79. शशि शर्मा पत्नी सत्यनारायण शर्मा, जाति-ब्राह्मण, निवासी जोबनरे जिला जयपुर
80. सन्तोष देवी पत्नि गोविन्दराम, जाति-कुमावत, निवासी कुमावत की ढाणी डेहरा तहसील जोबनेर जिला जयपुर
81. सुनीता देवी पत्नि अनिल कुमार, जाति-जैन, निवासी जोबनरे जिला जयपुर
82. सुमेर पुत्र भागचन्द, जाति-जैन, निवासी जोबनेर जिला जयपुर
83. सूरज देवी पुत्री बालदास, जाति-स्वामी, निवासी नयाबास ढाणी नागान जोबनेर जिला जयपुर
84. सीमा पत्नि विनोद कुमार, जाति-जैन, निवासी वार्ड नं. 8 जैन मोहल्ला, जोबनरे
85. सीमा देवी पतनी गुलाबचन्द, जाति-ब्राह्मण निवासी-नया बाजार, वार्ड नं 8 जोबनेर जिला जयपुर
86. तहसीलदार महोदय, जोबनेर, तहसील जोबनेर, जिला जयपुर

(अप्रार्थी संख्या......

वादी ने आपके विरूद्ध अपील अन्तर्गत धारा 75 भू. राजस्व, अधिनियम 1956 विरूध नांमातकरण संख्या 112 दिनांक 08.06.1967 के लिये वाद पंजीयन किया है जिसका मुकदमा नम्बर 23/2024 है आपका इस न्यायालय में आगामी तारीख 27/6/2025 को दिन में 10 बजे दावे का उत्तर देने के लिये उपसंजात (हाजिर) होने के लिये वचन दिया जाता है। आप न्यायालय में स्वय या किसी ऐसी प्लीडर द्वारा उपंसजात हो सकते है। जिसे सम्यक् अनुदेश दिए गये हा और जो इस वाद से सबंधित सभी सारवान प्रशनो का उत्तर दे सके या जिसके साथ ऐसा कोई व्यक्ति हो जो ऐसे सब प्रशनो का उत्तर दे सके। आप को यह निर्देश भी दिया जाता है कि आप उस दिन अपनी प्रतिरक्षा का लिखित साक्ष्य दाखिल करे। ओर उस दिन ऐसे सभी वरतावेज जो आपके कब्जे में या शक्ति में है पेश करे जिन पर अपनी प्रतिरक्षा या दाखिल / मुजराई का दावा या प्रतिदावा आधारित है ओर यदि आप किसी अन्य दस्तावेज पर चाहे वो आपके कब्जे व शक्ति मे हो अपना प्रतिरक्षा या मुजराई के दावे के समर्थन में साक्ष्य के रूप में निर्भर करते है तो आप ऐसे दस्तावेजो को उल्लिखित समय के बाद उपाबद्ध की जाने वाली सुची में पृविष्ठ करे।
आपको सूचित किया जाता है कि यदि आप उपर बताई गई तारिख को उपसंजात नही होंगे तो बाद की सुनवाई ओर उसका निपटारा आपकी अनुपस्थित में एकपक्षिय किया जायेगा।
यह वाद तारिख 6माह..6. सन् 2025 को मेरे हस्ताक्षर से ओर न्यायालय की मुद्रा लगाकर दिया गया है।

उपखण्ड अधिकारी
जोबनेर जयपुर

निर्जला एकादशी पर राहगीरों को पिलाया शीतल पेयजल

जयपुर टाइम्स

लक्ष्मणगढ़(निस)। अखिल भारतीय युवा अग्रवाल सम्मेलन और न्यामा बाजार के व्यापारियों ने निर्जला एकादशी के अवसर पर एक संयुक्त पहल की। इस पावन अवसर पर उन्होंने शीतल पेय (गन्ने के रस और रसना) की निशुल्क सेवा का आयोजन किया। राहगीरों, दुकानदारों और आम नागरिकों के लिए व्यवस्था की गई, जिससे लोगों को भीषण गर्मी में राहत मिली। युवा अग्रवाल सम्मेलन के राष्ट्रीय वरिष्ठ उपाध्यक्ष दीपक जाजोदिया और न्यामा बाजार क्षेत्र के पार्षद विष्णु शर्मा ने बताया कि यह सेवा समाज के प्रति हमारे कर्तव्य और धार्मिक आस्था का प्रतीक है। इस अवसर पर जयप्रकाश सरावगी, विनोद बनाईवाला, सुशील जाजोदिया, सुरेश मोदी, विमल चिराणिया, राकेश नाउवाला, विनोद बजाज, दिनेश सांडिया, मनोज ढाका, सुमित जाजोदिया, गोपी जाजोदिया, सुभाष चावला सहित अनेक व्यापारी मौजूद रहे।

गंगा दशहरा पर्वः गायत्री जयंती पर महायज्ञ में दी आहुतियां

जयपुर टाइम्स

मण्डावा(निस)। गायत्री शक्तिपीठ मण्डावा पर अखिल विश्व गायत्री परिवार शांतिकुंज के मार्गदर्शन में गायत्री परिवार की ओर से गायत्री जयंती व गंगा दशहरा का पर्व समूह साधना और विश्व कल्याण की प्रार्थना के साथ मनाया गया। इसी क्रम में अखंड जप, गायत्री महामंत्र और महामृत्युंजय मंत्र का जाप किया गया।

गुरुवार को प्रात 9 बजे 5 कुंडीय गायत्री महायज्ञ में पवित्रीकरण व स्वस्तिवाचन के साथ गायत्री महामंत्र और महामृत्युंजय मंत्र की आहुतियां यज्ञ में भगवान को समर्पित की गई। साथ ही सभी प्रकार के संस्कार निशुल्क करवाए गए। गायत्री पर्व पर गायत्री परिवार के वरिष्ठ कार्यकर्ता आलोक कालोया ने कहा कि गंगा और गायत्री भगवान की दो विभूतियां हैं। पतित पावनी गंगा में स्नान करने से तन शुद्ध होता है और गायत्री के नित्य पयपान करने से मन पवित्र होता है। गायत्री मंत्र दुनिया का सबसे शक्तिशाली मंत्र हैं, जिसके जाप से जीवन की समस्याओं को दूर किया जा सकता है। कार्यक्रम में मुख्य रूप से संघनिष्ठ सज्जनलाल शर्मा, गोपाल देवड़ा, सीताराम गुप्ता, मूलसिंह कोलाली और पंकज शर्मा सहित अनेक श्रद्धालु मौजूद रहे।

कन्या महाविद्यालय हेतमसर में नवप्रवेशित छात्राओं की सहायता के लिए हेल्पडेस्क की स्थापना

जयपुर टाइम्स

झुंझुनूं(निस)। राजकीय कन्या महाविद्यालय हेतमसर में स्नातक भाग प्रथम (सेमेस्टर-1) कला एवं विज्ञान संकाय में प्रवेश प्रक्रिया 4 जून से प्रारंभ हो गई है। इस अवसर पर महाविद्यालय में नवप्रवेशित छात्राओं की सुविधा के लिए हेल्पडेस्क की स्थापना की गई है। प्रवेश नोडल प्रभारी सहायक आचार्य सुभाष चन्द्र ने जानकारी देते हुए बताया कि यह हेल्पडेस्क महाविद्यालय की एन.एस.एस. इकाई की छात्राओं की ओर से संचालित की जा रही है। इसका उद्देश्य नए आने वाले विद्यार्थियों को प्रवेश प्रक्रिया से संबंधित जानकारी व सहयोग प्रदान करना है। हेल्पडेस्क का संचालन प्रवेश प्रभारी सहायक आचार्य वन्दना कुमारी के नेतृत्व में किया जा रहा है। हेल्पडेस्क में बी.ए. चतुर्थ सेमेस्टर की छात्राएं रिया कुमारी, हीना, मोनिका और बी.ए. द्वितीय सेमेस्टर की छात्राएं पायल, रोनक, महिगा, सोनू एवं गोनिका सक्रिय रूप से भाग ले रही हैं। ये छात्राएं दस्तावेज़ सत्यापन, ऑनलाइन आवेदन, विषय चयन और अन्य प्रवेश संबंधित जानकारी में नवप्रवेशित छात्राओं की मदद कर रही हैं।

पशुओं को खिलाए तरबूज

जयपुर टाइम्स

मण्डावा(निस)। मंडावा में निर्जला एकादशी के मौके पर गौरक्षकों की ओर से बेसहारा पशुओं के लिए तरबूज ,लौकी, फूस आदि बेसहारा पशुओं को खिलाया गया। इस दौरान हेमंत सैनी, राहुल सैनी, मानव कुमार, सुमित कुमार, प्रदीप कुमार, सुमित सैनी , लकी कुमार, करण सैनी, भरत सैनी, पंकज कुमार, विशाल कुमावत, सुमित शर्मा, रविंद्र कुमार, यश कुमार ,मनीष कुमार, विनीत जांगिड़, सामाजिक कार्यकर्ता अमित मीणा आदि मौजूद रहे।

विश्व पर्यावरण दिवस पर पौधारोपण व जागरूकता कार्यक्रम आयोजित

जयपुर टाइम्स

मण्डावा(निस)। विश्व पर्यावरण दिवस के उपलक्ष्य में आदर्श विद्या मंदिर मण्डावा में पौधारोपण व पर्यावरण जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन हर्षोल्लास के साथ किया गया। कार्यक्रम में एनसीसी के नेवी एवं आर्मी विंग के कैडेट्स सक्रिय रूप से उपस्थित रहे और पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूकता फैलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। कार्यक्रम की शुरुआत विद्यालय प्राचार्य मुकेश कुमार स्वामी की ओर से पौधा लगाकर की गई। उन्होंने विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए कहा कि पर्यावरण की रक्षा करना हम सभी का नैतिक दायित्व है और ऐसे आयोजन हमें प्रकृति से जोड़ने का माध्यम बनते हैं। इस अवसर पर संस्था निदेशक अभिषेक तेतरवाल ने कहा कि पर्यावरण संरक्षण एक दीर्घकालिक संकल्प है। पौधरोपण केवल एक प्रतीकात्मक कार्य नहीं, बल्कि यह भविष्य को सुरक्षित रखने की दिशा में एक सशक्त कदम है।

पर्यावरण को स्वस्थ और सुंदर बनाए रखने के लिए सभी का सामूहिक प्रयास आवश्यक

जयपुर टाइम्स

मण्डावा(निस)। आरयूआईडीपी व नगर पालिका मंडल मंडावा के संयुक्त तत्वावधान में अंबेडकर भवन, मंडावा में पौधारोपण किया गया इस अवसर पर अधिशाषी अधिकारी प्रमोद जांगिड़ ने कहा कि धरती पर पेड़-पौधे हमारे जीवन का मूल स्रोत है। ये नहीं होंगे तो पानी ही नहीं बरसेगा और न खेती ही होगी जिसके कारण अनाज का संकट खड़ा हो जाएगा। आज पृथ्वी पर लगातार पेड़ कटने की वजह से प्राकृतिक आपदाओं का सामना करना पड़ रहा है फिर भी लोगों की आंखें नहीं खुलती। अब भी समय है अधिकाधिक पौधे लगाकर हम पर्यावरण को बचा सकते हैं। विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर आरयूआईडीपी व नगर पालिका मंडावा के संयुक्त तत्वावधान में अंबेडकर भवन में पौधरोपण किया गया। कैप आरयूआईडीपी के सामुदायिक विकास अधिकारी ने कहा कि वर्तमान में पेड़ बचाना बहुत जरूरी हो गया है। अपनी जरूरतें पूरी करने के लिए लोग लगातार पेड़ काटे जा रहे हैं लेकिन उनकी जगह नए पेड़ नहीं लगा रहे हैं। पर्यावरण की रक्षा को लेकर सभी को पेड़ लगाने के लिए आगे आना चाहिए। नगरपालिका मंडावा के कनिष्ठ अभियंता आनंद ने इस मौके पर पौधरोपण के साथ ही पौधों के संरक्षण की जिम्मेदारी लेकर वृक्षों को न काटने और उन्हें बड़े होने तक रखरखाव व प्लास्टिक पॉलीथीन का उपयोग नहीं करने की शपथ ली। पौधरोपण कर समाज हित में जल संरक्षण एवं जन-स्वास्थ्य

अभियान का संदेश दिया गया

सामूहिक प्रयास आवश्यक

नगरपालिका सफाई निरीक्षक सत्यनारायण शर्मा ने कहा कि पर्यावरण को स्वस्थ और सुंदर बनाए रखने के लिए सभी का सामूहिक प्रयास आवश्यक है। इस दिन कम से कम एक पौधा जरूर लगाएं। सीएमएससी के योगेश आत्रेय ने कहा कि विश्व पर्यावरण दिवस पर नहीं बल्कि शुभ अवसरों पर भी पौधरोपण जरूर करें और उसके संरक्षण का कार्य भी करें। पेड़-पौधों का भी अपना परिवार है। इनकी रक्षा करना हमारा दायित्व है। मौजूदा दौर में पौधरोपण की अधिकाधिक जरूरत महसूस की जा रही है। पौधरोपण के जरिए ही हम पर्यावरण की रक्षा कर सकते हैं। इसी से पर्यावरण की शुद्धि बनी रह सकेगी। इस अवसर पर नगरपालिका स्टाफ से नरेंद्र कुमार, सुरेंद्र कुमार, राजपाल सिंह, सुरजीत एवं धर्मेंद्र डारा सहित कर्मचारी मौजूद रहे।

सड़क निर्माण की मांग को लेकर प्रभारी मंत्री को सौपा ज्ञापन

जयपुर टाइम्स

मण्डावा(निस)। गांव तेतरा में गुरुवार को झुंझुनू प्रभारी मंत्री अविनाश गहलोत को विभिन्न मांगों को लेकर ज्ञापन सौपा गया। बिरमी घटना को लेकर अभी तक सुभाष मेघवाल के मुख्य हत्यारे को गिरफ्तार नहीं किया गया, उसे जल्द से जल्द गिरफ्तार किया जाए, साथ ही झुंझुनू में चल रहे आंदोलन पर लाठी चार्ज किया गया, प्रभारी मंत्री ने जल्द कार्रवाई का आश्वासन दिया। तेतरा सरपंच ताराचद्र, बहादुरवास सरपंच ब्रजेश सेवदा, सामाजिक कार्यकर्ता अमित मीणा, राजपाल शर्मा, कमेर सिंह, श्यामलाल, रामलाल आदि मौजूद रहे। इसी प्रकार प्रभारी मंत्री अविनाश गहलोत को ज्ञापन दिया गया। मंडावा से बाजीसर सड़क जो वर्तमान में पूरी तरह से टूट चुकी है। उसको नई बनाने के लिए साथ ही गांव बाजीसर से तेतरा सड़क का कार्य जो अधूरा है, उसको जल्द से जल्द पूरा कराने के लिए, बाजीसर से गोदू का बास तक सड़क का कार्य अधूरा पड़ा है उसको पूरा करने के लिए ज्ञापन दिया गया। इस अवसर पर सामाजिक कार्यकर्ता अमित मीणा, मोजास सरपंच मुकेश कुमार, तेतरा सरपंच ताराचंद्र, रोहित कुमार, शक्ति कुमार आदि मौजूद रहे।

भगवान शनि देव महाराज की मूर्ति स्थापना आज

जयपुर टाइम्स

कांवट(निस)। ग्राम भादवाड़ी में शनिवार को भगवान शनि देव महाराज की मूर्ति स्थापना का कार्यक्रम आयोजित होगा। ग्राम वासियों की ओर से भगवान शनि देव के मंदिर का जीर्णोद्धार के बाद मूर्ति स्थापना का कार्यक्रम हो रहा है, जिसमें सभी ग्राम वासियों ने सहयोग कर मंदिर का जीर्णोद्धार कर मूर्ति की स्थापना विधि विधान एवं मंत्र उच्चारण से होगी। कार्यक्रम को लेकर ग्राम वासियों एवं कार्यकर्ताओं ने विचार विमर्श कर मूर्ति स्थापना को मुहूर्त रूप दिया है। सर्वप्रथम प्रातः 7.30 बजे से शनि देव महाराज का नगर भ्रमण झांकी के बाद 11.30 बजे से मूर्ति स्थापना का कार्यक्रम रहेगा।

वंदे गंगा जल संरक्षण जन अभियान के तहत पत्रकारों ने किया बुहाना क्षेत्र का भ्रमण

जल संरक्षण के कार्यों का अवलोकन कर ली तकनीकी जानकारी

जयपुर टाइम्स

झुंझुनूं(निस)। वंदे गंगा जल संरक्षण जन अभियान के अंतर्गत शुक्रवार को जिले के पत्रकारों के दल ने बुहाना क्षेत्र के विभिन्न जल संरक्षण स्थलों का भ्रमण किया। इस दौरे का उद्देश्य जल संरक्षण के क्षेत्र में किए गए नवाचारों का प्रत्यक्ष अवलोकन करना, जन सहभागिता के सफल उदाहरणों को देखना तथा जल संचयन की आधुनिक तकनीकों की जानकारी प्राप्त करना था। इस दौरान बुहाना पंचायत समिति के बड़बर गांव से हुई, जहां पत्रकारों ने प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना के तहत चारागाह भूमि पर किए गए जल संरक्षण एवं उद्यानिकी कार्यों का निरीक्षण किया। इस क्षेत्र में वर्षा जल को संचित कर पौधारोपण एवं सिंचाई के लिए उपयोग में लाया जा रहा है, जिससे क्षेत्र की जल-निधियों को संरक्षित करने के साथ-साथ हरियाली में भी इजाफा हो रहा है। भ्रमण के दौरान पत्रकारों ने भीर्र गांव में निर्मित फॉर्म पोंड का जायजा लिया। यह जल स्रोत स्थानीय किसानों के लिए एक सशक्त संसाधन बनकर उभरा है, जहां संचित जल का उपयोग कृषि व बागवानी के लिए किया जा रहा है। भ्रमण के दौरान जलग्रहण विकास व भू संरक्षण विभाग, बुहाना के अधिशासी अभियंता मनोज गौड़ ने पत्रकारों को योजनाओं की विस्तृत जानकारी दी। उन्होंने बताया कि "प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना के अंतर्गत निर्मित जल संरचनाएं न केवल जल संरक्षण को बढ़ावा दे रही हैं, बल्कि ग्रामीणों की आजीविका में भी सकारात्मक परिवर्तन ला रही हैं। इन कार्यों से चारागाह भूमि पर हरियाली में वृद्धि हुई है और ग्रामीण समुदाय में जल के प्रति चेतना आई है। इस अवसर पर अधीक्षण अभियंता व पदेन परियोजना प्रबंधक वाटरशेड कृष्ण कुमार बाबल, जलग्रहण विकास व भू संरक्षण विभाग सिंघाना के सहायक अभियंता संदीप कुमार, जिला परिषद के अधिशासी अभियंता विजेंद्र सिंह ढाका, बड़बर गांव के सरपंच विनोद कुमार, भीर्र गांव के सरपंच शीशराम मान, किसान पंकज जांगिड़ सहित विभाग के अन्य अधिकारी व कर्मचारी उपस्थित रहे।

मदार-रोहतक-मदार स्पेशल प्रतिदिन रेल सेवा का संचालन शुरू

जयपुर टाइम्स

कांवट(निस)। रेलवे की ओर से यात्री यातायात को देखते हुए यात्रियो की सुविधा के लिए मदार- रोहतक-मदार स्पेशल (प्रतिदिन) रेलसेवा का संचालन किया जा रहा है। गाडी संख्या 09639, मदार-रोहतक स्पेशल (प्रतिदिन) रेलसेवा 08.06.25 से 30.06.25 तक (23 ट्रिप) मदार से प्रतिदिन 04.30 बजे रवाना होकर 12.50 बजे रोहतक पहुँचेगी। इसी प्रकार गाडी संख्या 09640, रोहतक-मदार स्पेशल (प्रतिदिन) रेलसेवा 08.06.25 से 30.06.25 तक (23 ट्रिप) रोहतक से प्रतिदिन 13.20 बजे रवाना होकर 22.35 बजे मदार पहुँचेगी। यह रेलसेवा मार्ग में किशनगढ, नरेना, फुलेरा, रेनवाल, बधाल, रींगस, श्रीमाधोपुर, कांवट, भगेगा, नीम का थाना, मांवडा, डाबला, निजामपुर, नारनौल, अटेली, कुण्ड, रेवाडी, गोकलगढ, झज्जर व अबोहर स्टेशनों पर ठहराव करेगी। इस रेलसेवा में 10 साधारण व 02 गार्ड डिब्बों सहित कुल 12 डिब्बे होंगे।

दुर्घटना बीमा क्लेम की 50 लाख रुपए की राशि का भुगतान

जयपुर टाइम्स

कांवट(निस)। पंजाब नैशनल बैंक शाखा कांवट ने ग्राहक उपभोक्ता की दुर्घटना में मृत्यु होने पर मृतक के आश्रितों को 50 लाख रुपए का चैक भुगतान किया। शाखा प्रबंधक रविन्द्र कुमार शर्मा ने बताया कि बैंक के ग्राहक भागीरथ मल यादव पुत्र श्योदान राम यादव निवासी ढाणी अहिरान रूपपुरा, थोई का निधन एक सड़क दुर्घटना में हो गया था। जिनका पीएनबी बैंक शाखा कांवट की ओर से पीएनबी रक्षक स्कीम में बीमा बनाया हुआ था। बीमा स्कीम के नियमानुसार ग्राहक की दुर्घटना पर मृत्यु होने पर आश्रितों 50 लाख का सड़क दुर्घटना बीमा मृतक के आश्रितों सुरेश कुमार यादव व अशोक कुमार यादव को उपमंडल प्रमुख विमल शर्मा शाखा प्रबंधक रविंद्र कुमार शर्मा व सहायक पिंटू कुमार गढ़वाल की ओर से 50 लाख का चेक भेंट कर भुगतान किया गया।

ईद उल अजहा को लेकर सीएलजी की बैठक आयोजित

जयपुर टाइम्स

लक्ष्मणगढ़(निस)। लक्ष्मणगढ़ शहर थाना पुलिस चौकी में ईद -उल अजहा के पर्व को लेकर सीएलजी सदस्यों की बैठक का आयोजन किया गया। लक्ष्मणगढ़ थाना पुलिस उपाधीक्षक दिलीप कुमार मीणा की अध्यक्षता में आयोजित बैठक में ईद -उल अजहा के पर्व पर शांति व्यवस्थाओं को लेकर चर्चा की गई। वहीं सीएलजी सदस्यों की ओर से बैठक के दौरान ईद पर्व पर सफाई व्यवस्थाओं के को दुरुस्त करवाने की बात कही गई। इस अवसर पर लक्ष्मणगढ़ थाना उपाधीक्षक दिलीप कुमार मीणा ने ईद -उल अजहा के पर्व को सौहाद्र पूर्ण तरीके से मनाने व शांति व्यवस्था बनाए रखने की अपील की। इस मौके पर लक्ष्मणगढ़ नगरपालिका अध्यक्ष हाजी मुस्तफा कुरैशी ने सभी देशवासियों से मुबारकबाद दी। आयोजित बैठक में लक्ष्मणगढ़ थाना पुलिस उपाधीक्षक दिलीप कुमार मीणा,थाना अधिकारी महेंद्र सिंह साहू, शहर चौकी प्रभारी रामदेव सिंह मावलिया, नगर पालिका अध्यक्ष हाजी मुस्तफा कुरैशी, पाली का उपाध्यक्ष बनवारी लाल पांडे, साबिर बाबू हाजी,पार्षद रियाजउद्दीन, शहीद हुसैन, भाजपा नेता जयप्रकाश सरावगी, सुरेश बीबीपुरिया, सुभाष पारीक, जमील पीनरा, कांस्टेबल विनोद कुमार, कांस्टेबल अशोक कुमार सहित सीएलजी सदस्य मौजूद रहे।

मण्डावा नगरपालिका ईओं को ज्ञापन सौपा

जयपुर टाइम्स

मण्डावा(निस)। मंडावा गौरक्षक दल ने शुक्रवार को मंडावा नगर पालिका की अधिशासी अधिकारी को ज्ञापन दिया। ज्ञापन में मांग की गयी की डंपिंग यार्ड में मैंन गेट नया लगाया जाए। साथ चारदीवारी की मरम्मत की जायें बेसहारा गायों को गौशाला में रखा जाए, जो गाय मर जाती है उनको गड्ढा खोदकर दफनाना चाहिए। साथ ही डंपिंग यार्ड में जो बंद मशीनें पड़ी है उनको चलाने के लिए ज्ञापन दिया गया। इस दौरान मौजूद हेमंत सैनी ,राहुल सैनी, मानव कुमार, सुमित कुमार, प्रदीप कुमार, सुमित सैनी, लकी कुमार, करण सैनी, भरत सैनी, पंकज कुमार, विशाल कुमावत, सुमित शर्मा, रविंद्र कुमार ,यश कुमार, मनीष कुमार, विनीत कुमार, जहांगीर कुमार, साथ ही भाजपा नेता संदीप शर्मा व सामाजिक कार्यकर्ता अमित मीणा मौजूद रहे।

अस्पताल में मरीजों को फल वितरण

जयपुर टाइम्स

सुजानगढ़(नि.सं.)। विप्र फाउंडेशन महिला प्रकोष्ठ चूरू शाखा की ओर से शुक्रवार को निर्जला एकादशी पर राजकीय अस्पताल में फल व ज्यूस वितरण का कार्यक्रम आयोजित किया गया। जिला अध्यक्ष जयश्री दाधीच ने बताया कि निर्जला एकादशी का सनातन में बड़ा महत्त्व है। विप्र फाउंडेशन महिला प्रकोष्ठ समय समय पर समाज सेवा के कार्यक्रम आयोजित करवाती रहती है। कार्यक्रम में सचिव वीणा भोजक, उपाध्यक्ष कमला शर्मा, किरण पारीक, सुनीता पारीक, अनुराधा जोशी, अनुजा भोजक, मंजू पारीक, चंदा जोशी, पार्वती, सम्पत देवी, माया बागड़ा शामिल रहे।

मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी का किया सम्मान

जयपुर टाइम्स

मण्डावा(निस)। मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी अशोक कुमार शर्मा का गुरुवार को कुम्हार कर्मचारी व समाज सेवा समिति जिला झुन्झुनूं के अध्यक्ष हरिराम दादरवाल व बाल भारती विद्या निकेतन मा.वि. के निदेशक राजेन्द्र सनोदिया की अगुवाई में समाज के लोगों ने साफा व माला पहना कर वह्ममिठाई खिलाकर सम्मान किया। सम्मान समारोह में शर्मा ने कहा कि समस्त राजकीय व निजी शिक्षण संस्थाए बच्चों की पढ़ाई, संस्कार एवम सर्वांगीण विकास का पूरा ध्यान रखे व इमानदारी से अपना कार्य करें। इस अवसर पर एसी बीईओ दामोदर प्रसाद जाँगिड़, आरपी उत्तम दाधीच, संजीव जांगिड़, आनंद देवठिया,फारूक खान, कृष्ण सिंह, मूल सिंह, शीतल शर्मा, मदन लाल, भवरलाल घड़ीसाज, राकेश सनोदिया, पुरुषोत्तम आर्य, भरत चायल मौजूद रहे।

शेखावाटी जयपुर टाइम्स

जयपुर, शनिवार
7 जून, 2025

भोलाना जोहड़ में वंदे गंगा जल संरक्षण अभियान का शुभारंभ

जयपुर टाइम्स

रतनगढ़(निस)। तहसील की ग्राम पंचायत जांदवा की बीका की ढाणी भोलाना जोहड़ में वंदे गंगा जल संरक्षण अभियान पखवाड़े का शुभारंभ गुरुवार को किया गया। इस मौके पर चूरू विधायक हरलाल सहारण, जिला प्रमुख वंदना आर्य, उपप्रमुख महेंद्र न्योल, जिला कलेक्टर अभिषेक सुराणा, प्रधान मोहिनीदेवी खीचड़, सीईओ श्वेता कोचर, एसडीएम रामकुमार वर्मा, विकास अधिकारी जगदीशप्रसाद व्यास, तहसीलदार सज्जन लाटा, पंचायत समिति सदस्य हिमानी खीचड़, सरपंच कमलादेवी खीचड़ मंचस्थ अतिथि रहे। अतिथियों का गिरधारीलाल खीचड़ व ग्रामवासियों ने स्वागत किया और नवनिर्मित जोहड़ का पूजन कर लोकार्पण किया गया। इस मौके पर महिलाओं की ओर से कलश यात्रा निकाली गई एवं मंगल गीत गाए गए। पूर्व सरपंच गिरधारी खीचड़ के स्वागत भाषण से शुरू हुए कार्यक्रम में राजीविका की बीपीएम शिवानी भटनागर के नेतृत्व में महिलाओं ने रंगोली बनाई तथा अतिथियों ने पीपल का पौधा लगाकर पौधरोपण किया। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए विधायक सहारण ने कहा कि आज यदि जल संग्रहण नहीं किया गया, तो आगे आने वाली पीढ़ी हमें माफ नहीं करेगी। जिला कलेक्टर सुराणा ने कहा कि जल स्वावलंबन मुख्यमंत्री की दूरगामी सोच है। पानी अमूल्य है, जिसे बूंद-बूंद बचाना है। भारत की सभ्यताएं पानी से ही बनी है, इसलिए यह पखवाड़ा और महत्वपूर्ण हो गया है। पखवाड़े से जागरूकता आएगी और प्रत्येक व्यक्ति को पता चलेगा कि जल को कैसे बचाना है। कार्यक्रम को कोचर, जिला प्रमुख आर्य, उपप्रमुख न्योल ने भी संबोधित किया और वंदे गंगा जल संरक्षण अभियान के बारे में विस्तारपूर्वक जानकारी दी गई।

वन्दे गंगा-जल संरक्षण अभियान के तहत दूसरे दिन किया श्रमदान

जयपुर टाइम्स

तारानगर(निस)। तारानगर के भाजपा नेता राकेश जांगिड़ व उपखंड अधिकारी राजेंद्र कुमार ने तारानगर के ऐतिहासिक प्राचीन जोहड़ में साफ सफाई का कार्य कर वन्दे गंगा-जल संरक्षण अभियान के दूसरे दिन की शुरुआत की। भाजपा नेता जांगिड़ ने जल संरक्षण व प्रकृति सरंक्षण के प्रति जागरूक रहने एवं जल के महत्व को बताया। उपखंड अधिकारी राजेंद्र कुमार ने कहा कि जल है तो कल है इसका समुचित उपयोग कर इसका सरंक्षण कर सदुपयोग करें। रेंजर सुरेन्द्र सिंह ने कहा अधिक से अधिक पौधारोपण कर पर्यावरण को बचाना है। इस मौके पर पालिका सफाई कर्मियों ने ईओ अजय प्रताप के नेतृत्व में पूरे जोहड़ पायतन की सफाई कर कचरे को एकत्रित कर बाहर निकाला। इस मौके पर शहर अध्यक्ष अनूप खंडेलवाल, हरी इंदौरिया जमरदीन तेली, लखुसिह शेखावत, एडवोकेट जितेंद्र सिँह राठौड़, मोहम्मद तैयब, शिव कुमार शर्मा, वीर बहादुर सिँह, राकेश टाक, राजेंद्र सिँह, महेन्द्र सिँह, नोरतमल सहित पालिका के सफाईकर्मी मौजूद रहे।

किसान छात्रावास में किया पौधारोपण

जयपुर टाइम्स

रतनगढ़(निस)। विश्व पर्यावरण दिवस पर गुरुवार को ग्रामीण किसान छात्रावास में पौधरोपण किया गया। कार्यक्रम संयोजक प्रकाश चौधरी के नेतृत्व में प्रधानाचार्य हरलाल डूडी, गोविंदराम ढाका, रामचंद्र ऐचरा, बनाराम पूनियां सहित छात्रावास के विद्यार्थियों ने परिसर में पौधरोपण किया। इस दौरान चौधरी ने इस अभियान का उद्देश्य बताते हुए कहा कि पर्यावरण के प्रति आमजन को जागरूक करना है, ताकि आमजन इससे जुड़े और क्षेत्र को हराभरा बनाए। इस अवसर पर काफी संख्या में लोग उपस्थित रहे।

बाय गांव में नंदी गौशाला का उदघाटन

जयपुर टाइम्स

तारानगर(निस)। तारानगर के निकटवर्ती गाँव बांय में श्याम गौशाला व गो अनुसंधान केंद्र बांय की ओर से संत श्री आनंदगिरी महाराज ने नन्दी गोशाला का उद्धघाटन किया। कार्यक्रम में दिल्ली विकास एसोसिएशन अध्यक्ष श्याम सुंदर चाचाण, मुरलीधर बिगतानी की ओर से 10 लाख की कीमत से बनाए गए दो शैडो का लोकार्पण प्रतिनिधि दलीप कुमार चाचाण व मांगीलाल बिगतानी ने किया। आनन्दगिरी महाराज ने ग्रामवासियों को धन्यवाद देते हुए कहा कि गायों के लिए अनेक गौशालाए कार्य कर रही है लेकिन आवारा सांडो के लिए किए जाने वाला प्रयास सराहनीय है। कार्यक्रम में भीमसेन प्रजापत, पूर्व सरपंच भादर सिंह, नेमीचंद गुर्जर, सदीक खां कुम्हार, पूनमचंद यादव, रामविलास पेड़ीवाल, अनिल वालिया, प्रदीप स्वामी, मनीष सोनी, पद्मसिंह राजपूत, महेंद्र छिम्पा, अमरचंद जोशी, महेंद्र नोखवाल सहित कई ग्रामीण मौजूद रहे।

छात्रावास में प्रवेश को लेकर बैठक आयोजित

जयपुर टाइम्स

तारानगर(निस)। तारानगर के मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी कार्यालय में सीबीईओ बबलेश शर्मा की अध्यक्षता कस्तूरबा गांधी छात्रावास में प्रवेश के लिए बैठक आयोजित की गई। बैठक में बताया कि कक्षा 9 से कक्षा 12 में अध्ययन करने वाली 100 बालिकाओं को रखने की सुविधा है, प्रत्येक कक्षा में 25 सीट हैं। ब्लॉक की एससी एसटी अल्पसंख्यक, बीपीएल, श्रेणी की बालिकाओं को प्राथमिकता के आधार पर प्रवेश दिया जाएगा, इसमें प्रवेश लेने वाली बालिकाओं को सभी सुविधाएं निःशुल्क उपलब्ध करवाई जाएगी। इस मोके पर जमरदीन तेली, मोहम्मद तैयब, जेठाराम, एसबीईओ भागचंद सोलंकी, आरपी रामनिवास धेतरवाल, देवकरणसिंह, समुद्रसिंह, भागूराम, श्रवणसिंह, राकेश कुमार, रविंद्र कुमार, पवन कुमार आदि उपस्थित रहे।

निर्जला एकादशी पर गायों को गुड़ खिलाया

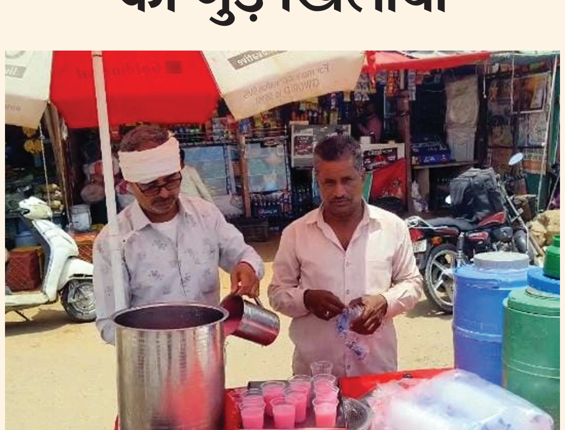

जयपुर टाइम्स

राजलदेसर(निस)। निर्जला एकादशी पर राहगीरों को शर्बत पिलाया और बेसहारा गोवंश को गुड और तरबूज खिलाया। कस्बे के श्री श्याम मित्र सेवा समिति के सदस्यों ने निर्जला एकादशी पर राहगीरों को शर्बत पिलाया। समिति सदस्यों ने एन एच 11 पर राहगीरों और यात्रियों को शर्बत पिलाया। तथा बेसहारा गोवंश को तरबुज तथा गुड़ खिलाया गया। इस अवसर पर काफी सदस्यों का सहयोग रहा।

मृत्यु एक सच्चाई और जीवन एक भुलावा हैंः राधामोहन शरण

जयपुर टाइम्स

सरदारशहर(निस)। शहर के जम्मड़ा कुआं के पास रामगढ़िया परिवार की ओर से आयोजित श्रीमद्भागवत कथा में बोलते हुए कथावाचक राधामोहन शरण देवाचार्य महाराज ने कहा कि मनुष्य पूरा जीवन भ्रम की स्थिति में जीता है और मृत्यु को भूलाकर जीवन को सच्चाई मानता रहता है एवं उसी अनुरूप अनैतिक कार्य, अनावश्यक संग्रह, स्वार्थपूर्ण व्यवहार, द्वेषतापूर्ण विचारधारा में उलझा रहता है। कथा प्रारम्भ के समय चम्पालाल, सम्पत मल, कमल कुमार, गोपीराम, अशोक कुमार, हरिप्रसाद व रामगढ़िया परिवार की ओर से आरती व व्यासपीठ का सम्मान किया गया। इस अवसर पर किशनलाल जाड़ीवाल, बनवारी लाल जांगिड़, लालचंद दर्जी, सुभाष जांगिड़, बींझराज नाई, मुखराम नाथोलिया, गौरीशंकर कंदोई, विष्णुदत्त जाड़ीवाल, अशोक कुमार चोटिया, नंदलाल देरासरी, मांगतमल सारस्वत, सुशील कुमार जांगिड़, गजानंद जांगिड़, लाभूराम जाट, गणेशनाथ सिद्ध, बनवारीलाल नाई, सम्पत राम जांगिड़ सहित बड़ी संख्या में श्रोता उपस्थित रहे।

सड़क पर 10 दिनों से जल भराव, दुकानदार परेशान

जयपुर टाइम्स

सरदारशहर(निस)। शहर के कच्चा बस स्टैंड से मुख्य बाजार की सड़क पर अर्जुन क्लब हॉस्पिटल के सामने पिछले 10 दिनों से पानी भरा हुआ है। यह समस्या पानी निकासी के नाले के ओवरफ्लो होने से उत्पन्न हुई है। दुकानदारों का आरोप है कि शोभाराम माली ने अपनी दुकान और घर के सामने नाली में सीमेंट का पाइप डालकर उसे ऊंचा कर दिया है। इसी कारण यह समस्या पैदा हुई है। नगर परिषद को कई बार शिकायत करने के बावजूद कोई कार्रवाई नहीं हुई है। दुकानदारों ने बताया कि जब शोभाराम माली से इस बारे में बात करते हैं तो वह कहता है कि नाला यहीं रहेगा। सफाई कर्मियों को भी काम करने से रोकता है। हालांकि शोभाराम का कहना है कि नाला सही तरीके से लगा है और पीछे से किसी समस्या के कारण पानी ओवरफ्लो हो रहा है। नगर परिषद के आयुक्त मगराज डूडी ने आश्वासन दिया है कि टीम को मौके पर भेजेंगे। समस्या की जांच कर उसका समाधान किया जाएगा। दुकानदारों और ऑटो चालकों ने चेतावनी दी है कि अगर इस समस्या का स्थाई समाधान नहीं निकाला गया तो बड़े पैमाने पर आंदोलन किया जाएगा।

नकली खाद बीज पर कार्रवाई की मांग, तहसीलदार को ज्ञापन

जयपुर टाइम्स

सरदारशहर(निस)। तहसील के एक झंडा एक डंडा संगठन ने शुक्रवार को कृषि मंत्री राजस्थान सरकार के नाम तहसीलदार को ज्ञापन दिया गया। संगठन के तहसील अध्यक्ष रुपचन्द सहारण ने बताया किसानों के साथ नकली खाद बीज पेस्टिसाइड के खिलाफ अभियान चलाकर दोषियों पर कड़ी कार्रवाई करने के लिए प्रशासन को अवगत करवाया गया, जिससे काश्तकारों की भुमि बंजर होने से रोका जा सके और बाजार में नकली खाद बीज यूरिया व कीटनाशक जहर की वजह से दिन प्रतिदिन किसानों की फसल का उत्पादन कम हो रहा है। समाज में तरह-तरह की नकली खाद बीज की वजह से बीमारियां फैल रही है। समय रहते ध्यान नहीं दिया गया तो आने वाले दिनों में बड़ा आंदोलन किया जाएगा। ज्ञापन देने वालों में रुपचन्द सहारण राजास, धिरेन्द्र सैनी, राकेश चौधरी, सहीराम नाई, ताराचंद, प्रमोद सैन आदि संगठन के पदाधिकारी मौजूद रहे।

मांडेता में संतों का किया सम्मान

सुजानगढ़ (नि.सं.)। *राष्ट्रीय जाट महासभा के प्रदेश अध्यक्ष धर्मेन्द्र कीलक ने मांडेता स्थित श्री काशीपुरीश्वर महादेव मंदिर पहुंचकर महंत स्वामी कानपुरी महाराज का माल्यार्पण कर स्वागत किया। इस अवसर पर मरूदेश संस्थान के अध्यक्ष डॉ. घनश्याम नाथ कच्छावा ने लाडनू करंट बालाजी धाम के महंत बजरंगपुरी महाराज का स्वागत किया। धर्मेन्द्र कीलक ने कहा कि संतों के सानिध्य में धर्म का प्रचार होता है और समाज सच्चाई के रास्ते पर चलता है। दूसरी ओर आश्रम में अखंड हरीनाम संकीर्तन का शुक्रवार को समापन हुआ और आरती के बाद सैंकड़ों भक्तों ने भंडारे में प्रसाद ग्रहण किया।*

घरों में टूंटी लगाने को लेकर की समझाईश

जयपुर टाइम्स

सुजानगढ़(नि.सं.)। निर्जला एकादशी के दिन निकटवर्ती गांव गोपालपुरा में नवाचार करते हुए घर घर टूंटी लगाने की जन जागृति हेतु प्रशासक सविता राठी के नेतृत्व में महिलाओं ने घर-घर जाकर भजन गाकर समझाइश की और बताया कि पूर्वजों की ओर से जल बचाया गया। आज वर्तमान में जल का बुरी तरह से दोहन होगा, तो आने वाली पीढ़ियां हमें माफ नहीं करेगी। सहीराम जानू, भागूराम शर्मा, बुधराम प्रजापत, दानाराम पूनिया, प्रहलाद दर्जी, लालाराम नाई, नानूराम गुर्जर आदि ने पानी बचाने का एवं स्वयं तथा अन्य को भी टूंटी लगाने के लिए प्रेरित करने संकल्प लिया। सुआ कंवर, टिंकू शर्मा, देवी, परमेश्वरी, प्रीति, सोना, मैना, पतासी देवी ने भजन गाकर ग्रामीणों को समझाइश की। ज्योति कछावा ने बताया कि सामाजिक जागरूकता के इस कार्यक्रम में लगातार चल रहे पंचायत के प्रयासों से ग्रामीणों ने घर घर टूंटी लगाने की कवायद शुरू की है। ओमप्रकाश गुर्जर ने बताया कि जिन घरों में टूंटी नहीं लगी है और बाहर पानी सड़क पर आता है। उन्हें लगातार समझाइश की जा रही है। राकेश पंवार जेईएन, शंकरलाल पंप चालक कर्मचारी ने कहा कि पंचायत के नवाचार से जागृति आई है। उप सरपंच गणपत दास, विक्रम, बाबूलाल मेघवाल, हनुमान, भींवाराम प्रजापत, विडीओ भंवर सिंह शेखावत, बीजाराम सारण आदि भी मौजूद रहे।

विधि सलाहकार बनने पर सिंगोदिया का स्वागत

जयपुर टाइम्स

सुजानगढ़(नि.सं.)। राज्य सरकार की ओर से एडवोकेट निर्मल सिंगोदिया को नगरपरिषद का विधिक सलाहकार बनाए जाने पर उनका स्वागत किया गया है। पार्षद ईकबाल खान कायमखानी, जावेद खिची, आफिर भाटी, मास्टर दाउद काजी आदि लोगों ने उनके कार्यालय पहुंचकर माल्यार्पण करते हुए बधाई दी। इस अवसर पर एडवोकेट निर्मल सिंगोदिया ने राज्य सरकार का आभार जताया।

प्लास्टिक मुक्ति का संदेश, आमजन को कपड़े के थैलो का वितरण

जयपुर टाइम्स

रतनगढ़(निस)। भारत विकास परिषद स्थानीय शाखा के तत्वावधान में विश्व पर्यावरण दिवस पर भारत को प्लास्टिक मुक्त करने का संदेश देते हुए गुरुवार को आमजन को कपड़े के थैलों का वितरण किया गया। बस स्टैंड स्थित श्री तालवाले बालाजी मंदिर के आगे राहगीरों को 151 थैले परिषद के सदस्य भवंरलाल टेलर के सौजन्य से वितरित किए गए। शुकदेव सांखोलिया ने बताया कि भारत को प्लास्टिक मुक्त करने की दिशा में यह एक छोटा सा कदम है। परिषद आगामी वर्षा ऋतु में पौधरोपण अभियान भी संचालित करेगी। शाखा अध्यक्ष सत्यनारायण टेलर ने पर्यावरण को स्वच्छ रखने की शपथ दिलाई। इस अवसर पर प्रांतीय उपाध्यक्ष वासुदेव चाकलान, सचिव परमेश्वरलाल आत्रेय, विनोदकुमार वर्मा, कैलाश आत्रेय, वेदप्रकाश पंवार, दिनेशचंद्र शर्मा, राजेंद्रसिंह बीदावत, पवनकुमार महर्षि, रघुनाथ प्रसाद इंदौरिया सहित कई लोग उपस्थित रहे।

निर्जला एकादशी पर राहगीरों को पिलाया शरबत

जयपुर टाइम्स

सरदारशहर(निस)। शहर के रेल्वे स्टेशन पर स्थित राज जेंट्स पार्लर के आगे पंडित कैलाश चौमाल के नेतृत्व में निर्जला एकादशी पर राहगीरों को ठंडा शरबत पिलाने का पुनित कार्य किया। कार्यक्रम का शुभारंभ रेल्वे स्टेशन अधीक्षक मोहनलाल सैनी व विप्र फाउंडेशन युवा प्रकोष्ठ प्रदेशाध्यक्ष सुनील मिश्र व विप्र फाउंडेशन युवा नगर अध्यक्ष नरेन्द्र सिंह राजपुरोहित ने किया। इस अवसर पर स्टेशन अधीक्षक सैनी ने बताया कि इस भीषण गर्मी में प्यासे को पानी पिलाने से बड़ा कोई धर्म नहीं है। इस अवसर पर विप्र फाउंडेशन युवा प्रदेशाध्यक्ष सुनील मिश्र ने सभी शहरवासियों से इस तरह के पुनीत कार्य करने की अपील की। इस अवसर पर सामाजिक कार्यकर्ता पंडित कैलाश चौमाल ने अतिथियों का स्वागत करते हुए इस पुनीत कार्यक्रम में सहयोगी राज जेंट्स पार्लर के प्रोपराइटर राज भाटी, प्रकाश नाई, पवन नाई, अनिल मारु, प्रकाश भाटी, सुनील पारीक का आभार व्यक्त किया। इस अवसर पर बड़ी संख्या में राहगीरों को ठंडा शर्बत पिलाया गया।

नायक बस्ती में गायत्री महायज्ञ का आयोजन

जयपुर टाइम्स

सरदारशहर(निस)। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के आयाम घुमंतू जाति उत्थान न्यास के तत्वावधान में निर्जला एकादशी के अवसर पर नायक सुभाष बस्ती में गायत्री यज्ञ का आयोजन किया गया। गायत्री परिवार के बनवारीलाल व ओमप्रकाश ने यज्ञ का आयोजन करवाया। इस कार्यक्रम में प्रांत धर्म आस्था प्रमुख विष्णु पुजारी ने समाज में भेदभाव व कुरीतियों को दूर करने का आह्वान किया।कार्यक्रम में संत रविदास संस्कार केंद्र व विवेकानंद संस्कार केंद्र के बालकों व अभिभावकों को पक्षियों को पानी डालने के लिए पात्र व प्रसाद वितरण किया गया। यज्ञ में आहुति में मुख्य यजमान गिरधारीलाल स्वामी, अमरचंद नायक, महावीर प्रसाद जांगिड़, चंद्रप्रकाश जोशी, अमित जोशी, संदीप जांगिड़, काशीराम जांगिड़, संघ के मुख्य पदाधिकारी विभाग घुमंतू जाति कार्य प्रमुख सुरेंद्र सैनी, जिला संघ चालक डॉ बनवारीलाल शर्मा, जिला सहकार्यवाहक रामकिशन, हरीश जांगिड़, बाबूलाल सोनी, नवदीप, धनसुख राव आदि उपस्थित रहे।

राजस्थान जयपुर टाइम्स

जयपुर, शनिवार
7 जून, 2025

चेक अनादरण के मामले में 1 वर्ष का साधारण कारावास

3,50,000/- रूपये की प्रति कर राशि अदा करने का आदेश

जयपुर टाइम्स

तारानगर(निस)। तारानगर न्यायालय न्यायिक मजिस्ट्रेट अजयदीप सिह ने चेक अनादरण के मामले में अभियुक्त मैसर्स करणी वस्त्रालय भालेरी के प्रो. बलदेव सिंह पुत्र लक्ष्मणसिंह निवासी बलाल को 1 वर्ष का साधारण कारावास व 3, 50, 000/- रूपये की प्रतिकर राशि अदा करने व अदम अदायगी की सुरत में 3 माह का साधारण कारावास की सजा सुनवाई है। प्रकरण में धेतरवाल इन्टरप्राईजेज के प्रो. हरदेवाराम के अभियुक्त बलदेवसिंह में ट्रेक्टर पेटे 2,50,000/- रूपये बकाया रहे थे जिनकी अदायगी बाबत बलदेवसिंह ने परिवादी हरदेवाराम को एक चेक 2,50,000/- रूपये का दिया था जो अनादरित होने पर परिवादी हरदेवाराम ने न्यायालय में परिवाद पेश किया जिसकी बाद विचारण न्यायालय ने अभियुक्त बलदेवसिंह को चेक अनादरण की धारा 138 एन.आई.एक्ट. के अन्तर्गत दोषी मानकर 1 वर्ष का साधारण कारावास व 3, 50,000/- रूपये प्रतिकर राशि से दण्डित किया और अदम अदायगी की सूरत में 3 माह का साधारण कारावास अतिरिक्त की सजा सुनवाई है। परिवादी की और से पैरवी पवन योगी एडवोकेट व प्रदीप योगी एडवोकेट ने की।

गंदे पानी की पाईप लाईन फूटी, सड़क पर बहा पानी

जयपुर टाइम्स

सुजानगढ़(नि.सं.)। भोजलाई बास स्थित चापटिया तलाई से गंदा पानी लिफ्ट करके खेतों की ओर डाला जाता है। लेकिन खेतों की ओर जाने वाली पाईप लाईन फूट जाने से औद्योगिक क्षेत्र में बिजली बोर्ड की दीवार के पास काफी पानी एकत्रित हो गया और वापस नाले के जरिए चापटिया तलाई की ओर ही आने लगा। हालांकि काफी देर तक पानी सड़क से होकर नाले में बहता रहा। बाद में मौके पर जाकर पानी की मोटर को बंद करवाया गया। हाल ही में सड़क के नीचे से नाले को चापटिया तलाई की ओर निकाला गया है। जिसे भविष्य में तलाई तक जोड़ा जाएगा। दूसरी ओर पार्षद जयश्री दाधीच ने बताया कि इस सम्बंध में सफाई निरीक्षक ओमप्रकाश स्वामी को अवगत करवाकर समस्या समाधान के लिए कहा गया है।

सामूहिक दुष्कर्म का आरोपी गिरफ्तार, दो आरोपियों को पहले गिरफ्तार कर भेजा जेल

जयपुर टाइम्स

सरदारशहर(निस)। शहर पुलिस ने सामूहिक दुष्कर्म मामले में कार्रवाई करते हुए सामूहिक दुष्कर्म के मुख्य आरोपी को गिरफ्तार करने में सफलता हासिल की है। थानाधिकारी मदनलाल बिश्नोई ने मामले की जानकारी देते हुए बताया कि 8 फरवरी को थाना क्षेत्र के एक व्यक्ति ने मामला दर्ज करवाया कि मेरी बहन को जबरदस्ती घर से ले जाकर पिथीसर निवासी हरलाल व अन्य ने सामूहिक दुष्कर्म किया। जिस प्रकरण को लेकर मामला दर्ज कर अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक सतपाल सिंह की ओर से तुरंत अनुसंधान सेल चूरू की ओर से अनुसंधान प्रारंभ किया गया। घटना की गंभीरता व महिला अपराध को देखते हुए अपराधियों की गिरफ्तारी के लिए पुलिस अधीक्षक जय यादव के आदेशानुसार अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक लोकेंद्र दरवाल, वृताअधिकारी रोहित सांखला के निर्देशन में अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक सतपाल सिंह की ओर से त्वरित अनुसंधान सैल मय थाना अधिकारी मदनलाल के नेतृत्व में घटना की सूचना मिलते ही तुरंत अलग-अलग पुलिस टीमों का गठन कर आरोपियों की तलाश शुरू की गई। आरोपी लंबे समय से गिरफ्तारी के भय से फरार चल रहे थे। आरोपियों की गिरफ्तारी को लेकर पुलिस टीमों की ओर से जगह-जगह सीसीटीवी कैमरे खंगाले गए व छापेमारी करते हुए 12 मई को आरोपी शीशराम पुत्र मालाराम जाट निवासी रायपुरिया थाना रतननगर व रामनिवास पुत्र मोहन राम मेघवाल निवासी रायपुरिया थाना रतननगर को गिरफ्तार कर जेल भिजवाया गया। पुलिस ने मुख्य आरोपी की तलाश को लेकर अलग-अलग जगह दबिश देकर शुक्रवार को सामूहिक दुष्कर्म का मुख्य आरोपी हरलाल पुत्र घडसीराम मेघवाल निवासी पिथिसर फरार चल रहा था। जिसको गिरफ्तार करने में पुलिस में सफलता हासिल की। आरोपी को कोर्ट में पेश कर पुलिस अग्रिम कार्रवाई करेगी।

चूरू से दिल्ली के बीच चलने वाली रोडवेज तीन माह से बंद! मुसाफिर है परेशान

जयपुर टाइम्स

चूरू(निस)। चूरू डिपो में ना बस है और ना ही स्टाफ है। इस कारण बसों को ही बंद कर दिया गया है, जो कि बहुत ही दुखद बात है। जानकारी के अनुसार चूरू से दिल्ली वाया झुंझुनूं के बीच चलने वाली राजस्थान राज्य पथ परिवहन निगम की रोडवेज बस बंद कर दी गई है। इस कारण से यहां यात्री बहुत परेशान हो रहे हैं। जानकारी के अनुसार चूरू से शाम साढ़े छह बजे वाया झुंझुनूं होकर दिल्ली जाने वाली रोडवेज बस पिछले तीन माह से बंद है। इस बस के बंद कर दिए जाने से इस मार्ग पर यात्रा करने वाले यात्रियों को बहुत दिक्कत हो रही है। लोगों ने कहा कि एक तरफ तो राजस्थान सरकार यात्रियों की सुविधा के लिए नई बसों का संचालन कर रही है। दूसरी ओर चूरू से दिल्ली जाने वाली बस को बंद कर दिया गया है। यह यहां के लोगों के साथ सरासर अन्याय है। इस बस सेवा को तुरंत शुरू करके यात्रियों को राहत दी जानी चाहिए। इस संबंध में चूरू डिपो के मुख्य प्रबंधक सुदीप शर्मा का कहना है कि बस और स्टाफ की कमी के कारण चूरू से दिल्ली के बीच चलने वाली बस को बंद कर दिया गया है। शर्मा ने कहा कि इसे जल्दी ही शुरू करने का प्रयास कर रहे हैं। देखो कब होती है। कुल मिलाकर यहां बस और स्टाफ की कमी के कारण लंबी दूरी की बस सेवा को बंद किया जाना बड़ा ही दुर्भाग्यपूर्ण है। इससे सरकार की ओर से गिनाई जाने वाली उपलब्धियां संदेह के घेरे में आ गई हैं। साथ ही सरकारी दावों की भी पोल खुलकर सामने आ चुकी है। यहां यात्री सरकार को कोसते हुए देखे जा सकते हैं।

जल संरक्षण में निभाएं भागीदारी, वंदे गंगा जल संरक्षण जन अभियान को सफल बनाएं : अविनाश गहलोत

सामाजिक न्याय व अधिकारिता मंत्री तथा जिला प्रभारी मंत्री अविनाश गहलोत चूरू आए

जयपुर टाइम्स

चूरू(निस)। सामाजिक न्याय व अधिकारिता मंत्री और जिला प्रभारी मंत्री अविनाश गहलोत शुक्रवार को चूरू आए। उन्होंने जिला मुख्यालय स्थित सेठाणी जोहड़ में आयोजित वंदे गंगा –जल संरक्षण जन अभियान अंतर्गत जिला स्तरीय कार्यक्रम में जल पूजन व श्रमदान किया।

दीप प्रज्वलन कार्यक्रम में की शिरकत

जिला स्तरीय कार्यक्रम में प्रभारी मंत्री अविनाश गहलोत, विधायक हरलाल सहारण, जिला प्रमुख वंदना आर्य, जिला कलक्टर अभिषेक सुराणा, जिला उप प्रमुख महेन्द्र न्यौल, सीईओ श्वेता कोचर, चूरू नगरपरिषद आयुक्त अभिलाषा सिंह, बसंत शर्मा ने जल पूजन किया और दीप प्रज्वलन कार्यक्रम में शिरकत की। इसके बाद सेठाणी जोहड़ में श्रमदान कर स्वच्छता का संदेश दिया। जिला स्तरीय कार्यक्रम के समारोह में प्रभारी मंत्री अविनाश गहलोत, विधायक हरलाल सहारण, जिला प्रमुख वंदना आर्य, जिला कलक्टर अभिषेक सुराणा, जिला उप प्रमुख महेन्द्र न्यौल, सीईओ श्वेता कोचर, बसंत शर्मा, ओम सारस्वत, भास्कर शर्मा, दीनदयाल सैनी, विमला गढ़वाल, नरेन्द्र काछवाल, सुशील लाटा, सीपी शर्मा, गोपाल बालाण, संदीप काजला, धर्मेन्द्र राकसिया, मोहन गढ़वाल सहित अन्य अधिकारी, जनप्रतिनिधि मंचस्थ रहे। मुख्य समारोह में संबोधित करते हुए प्रभारी मंत्री अविनाश गहलोत ने कहा कि हम सभी जल संरक्षण में भागीदारी निभाएं तथा वंदे गंगा जल संरक्षण जन अभियान को सफल बनाएं। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के नेतृत्व में प्रदेश खुशहाली की राह पर आगे बढ़ रहा है। प्रदेश में इस मानसून के दौरान 8 करोड़ पौधे लगाने का लक्ष्य रखा गया है। हम सभी अधिकाधिक पेड़ लगाएं और जल संरक्षण गतिविधियों को बढ़ावा दें। उन्होंने कहा कि हमें प्रकृति व प्राकृतिक संसाधनों के प्रति अपने कर्तव्यों का निवर्हन करते हुए संतुलित व्यवहार करना होगा और पर्यावरण संरक्षण के लिए संवेदनशील होना होगा। हम सभी स्वयं से संकल्प लेकर राजस्थान को स्वच्छ, नशामुक्त व समृद्ध प्रदेश बनाएं। उन्होंने कहा कि यह अभियान किसी व्यक्ति, समाज, संस्था तक सीमित नहीं होकर सभी की सामूहिक भागीदारी से सफल होगा। सरकार, प्रशासन, जनता आदि सभी की समन्वित भागीदारी से ही हम जल संस्कृति को संरक्षित कर पाएंगे। हम वर्षाजल का सही व समुचित उपयोग करें तथा जल संरक्षण गतिविधियों में सक्रिय भागीदारी निभाएं। हमारे आज के प्रयासों से ही वर्षों तक हम प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग कर पाएंगे। उन्होंने उपस्थितों को जल संरक्षण का संकल्प दिलाया। विधायक हरलाल सहारण ने कहा कि प्रदेशव्यापी अभियान का उद्देश्य जल संरक्षण के प्रति जागरूकता से काम करना है। हम सभी अपने घरों में कुण्ड बनाएं, वर्षा जल का संगहण करें और जलग्रहण संरचनाओं का रख–रखाव करें। पंरपरागत जल स्त्रोतों का संरक्षण करें। हमें पानी का महत्व समझना होगा, अन्यथा आने वाली पीढ़िया हमें कोसेंगी। जिला प्रमुख वंदना आर्य ने कहा कि मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने अभियान चलाया है। हम जल का मितव्यतता से उपयोग करें और भूमिगत जलस्तर को बढ़ाने के लिए प्रयास करें। अधिकाधिक पौधरोपण करें और कुण्ड, बावड़ियों, तालाबों को सहेंजें। बसंत शर्मा ने कहा कि 20 जून तक वंदे गंगा जल संरक्षण जन अभियान चलाया जाएगा। हम सभी की इसमें अधिकतम भागीदारी हो। अतिथियों ने आमजन को तुलसी का पौधा भेंट कर पौधरोपण का शुभारंभ किया। इस दौरान एएसपी लोकेन्द्र दादरवाल, एसडीएम बिजेन्द्र सिंह, डीवाईएसपी सुनील झाझड़िया, तहसीलदार अशोक गोरा, सीएमएचओ डॉ मनोज शर्मा, पीएचईडी एडिशनल चीफ इंजीनियर राममूर्ति, सानिवि एसई पंकज यादव, ओमप्रकाश प्रजापत, बृजेन्द्र दाधीच, आकाश सैनी, भारत भूषण पूनिया, महेन्द्र डाबी, कैलाश डूडी सहित जिला स्तरीय अधिकारी, जनप्रतिनिधि व आमजन उपस्थित रहे। संचालन मुकुल भाटी ने किया।

संत कबीर जयंती कार्यक्रम को लेकर आयोजन समिति की बैठक

14 जून को टाउन हॉल में मनाएगी जाएगी भव्य कबीर जयंती

जयपुर टाइम्स

चूरू(निस)। शहर के अग्रसेन नगर में कबीर शिक्षा समिति (धानक समाज) की आयोजन समिति की बैठक का आयोजन हुआ। बैठक में कबीर जयंती के कार्यक्रम को लेकर चर्चा हुई और कार्यक्रम की रुपरेखा तैयार की गई। संरक्षक सीताराम लुगरिया ने चर्चा कर सभी को अलग- अलग जिम्मेदारियों का आवंटन किया। कार्यक्रम को व्यवस्थित रूप देने के लिए मंच व स्वागत समिति, व्यवस्था समिति, प्रतिभा सम्मान वितरण समिति, बैठक व्यवस्था समिति एवं कोष व्यवस्था व क्रय समिति का गठन किया गया। आयोजन समिति ने सर्वसहमति से निर्णय लिया की 14 जून को चूरू के टाउन हॉल में विशाल कबीर जयंती समारोह, धानक समाज की प्रतिभाओं का सम्मान समारोह एवं भंडारे का आयोजन बड़े धूमधाम से होगा। आयोजन समिति की ओर से कार्यक्रम में आने वाले अतिथियों को लेकर भी चर्चा की गई। कबीर जयंती के कार्यक्रम में वरिष्ठ भाजपा नेता राजेंद्र राठौड़, उपमुख्यमंत्री मंत्री प्रेमचंद बैरवा, कैबिनेट मंत्री अविनाश गहलोत, चूरू विधायक हरलाल सारण, हनुमानगढ़-गंगानगर सांसद कुलदीप इन्दौरा, राज्य सभा सांसद मिथिलेश कठेरिया, पूर्व सांसद सुनीता दुग्गल, पूर्व मंत्री हरियाणा सरकार अनूप धानक, डीएससी योद्धा स्वामी स्वदेश कबीर, कबीर शिक्षा समिति हिसार के चेयरमैन जोगीराम खुंडिया सहित धानक समाज के पूर्व मंत्री, सांसद व विधायक आदि शामिल होंगे। इस अवसर पर संरक्षक सीताराम लुगरिया ने समिति के सदस्यों से गांव-गांव घर-घर जाकर कबीर जयंती के आयोजन का निमंत्रण देने और कार्यक्रम को सफल बनाने का आह्वान किया। इस अवसर एक-एक कर सभी सदस्यों ने अपने-अपने सुझाव दिए। इस अवसर पर जिलाध्यक्ष महेंद्र धानक, समिति सचिव गुरु धानका सरदारशहर, अनीश लुगरिया, पूर्ण होटला, मूंदी सरपंच सोनू सरोहा, सत्यवीर सिंह निनाणिया, सीताराम खरोड़, सतवीर सिंह खन्ना, धर्मवीर दहिया खारिया, पवन बागड़ी, पवन कुमार होटला, शेरसिंह होटला, प्रताप खरोड़, विकास खन्ना लीलकी, निरंजन धानका, प्रेमराज लुगरिया ढाणा, ओम लुगरिया काकलासर, हरिराम दगल काकलासर, सुमेर सिंह होटला, मदन सिंह खरोड़, मुंशीराम निनाणिया, भंवरलाल, जयसिंह, सुरेन्द्र खन्ना, सुनील कुमार, कृष्ण कुमार खरोड़, लीलाराम डाबला, गोविन्द लुगरिया, राजेश सहित आदि लोग उपस्थित रहें।

ईद को लेकर सीएलजी की बैठक

सुजानगढ़(नि.सं.)। ईद के त्यौंहार को मध्यनजर रखते हुए सीएलजी सदस्यों की बैठक का आयोजन कोतवाली थाना परिसर में किया गया। एएसपी दिनेश कुमार ने बैठक में कहा कि सभी लोग मिलजुलकर सद्भावनापूर्वक त्यौंहार मनाए। बैठक में उपखंड अधिकारी ओमप्रकाश वर्मा ने भी ईद की नमाज के लिए की गई व्यवस्थाओं का फीडबैक लिया। बैठक में नगरपरिषद की ओर से सफाई निरीक्षक ओमप्रकाश स्वामी बैठक में मौजूद रहे। कॉमरेड जगदीश नाथ ने कहा कि नालों की सफाई का कार्य मार्च में शुरू होना था, लेकिन इस बार इस कार्य में देरी होने के कारण व्यापारियों को काफी परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है।

उडसर लोडेरा गांव का है मामला

सरकारी भूमि पर अतिक्रमण हटाने गए दस्ते का विरोध, बैरंग लौटना पड़ा

जयपुर टाइम्स

सरदारशहर(निस)। तहसील के उडसर लोडेरा गांव में सरकारी भूमि पर वर्षो से बने आठ पक्के मकानों को नायब तहसीलदार प्रहलादराय पारीक के नेतृत्व में प्रशासनिक अमला हटाने के लिए पहुंचा। हालांकि प्रशासन की ओर से पहले से उन मकानों पर लाल कलर से क्रोश का निशान बनाकर उक्त लोगों को घर खाली करने की अपील की गई थी और नहीं खाली करने पर घरों को तोड़ने की चेतावनी भी दी गई थी। प्रशासनिक अमला जैसे ही उडसर लोडेरा गांव में मकान हटाने के लिए पहुंचा तो बड़ी संख्या में ग्रामीण एकत्रित हो गए। सरपंच प्रतिनिधि भागीरथ सारण ने ग्रामीणों के साथ मिलकर प्रशासन से अनुसूचित जाति के लोगों के मकानों को नहीं तोड़ने की गुहार लगाई। उन्होंने कहा कि यह सब अनुसूचित जाति के लोग हैं और करीब 50 वर्षों से यहां पर पक्के मकान बनाकर रह रहे हैं। सरकार की ओर से इनको मकान आवंटित किए गए हैं और बिजली पानी तक की सुविधा इनको मिली हुई है। किसी एक व्यक्ति की शिकायत के बाद लोकायुक्त के निर्देश पर यह अतिक्रमण हटाने की कार्रवाई की जा रही है। उन्होंने कहा कि इन परिवारों के पास अन्य कोई जगह नहीं है। जहां पर यह अपना मकान बनाकर रह सके। नायब तहसीलदार प्रहलादराय पारीक ने बताया कि गांव के ही व्यक्ति की ओर से लोकायुक्त के पास इस सरकारी भूमि पर बने मकानों के लिए शिकायत की गई थी। शिकायत की जांच करवाई गई। शिकायत सहित पाई गई और इस आधार पर हमने जो घर अतिक्रमण में आते हैं उन घरों पर लाल रंग से निशाना बनाए। ताकि ग्रामीणों को समझ में आए जाए कि कौन से घर अतिक्रमण में आते हैं। हम अतिक्रमण हटाने की कार्रवाई करने के लिए आए थे। उन्होंने कहा कि यह सभी लोग अनुसूचित जाति के लोग हैं। इन्होंने प्रशासन से अपील की है कि प्रशासन हम पर रहम करें, जब तक हमारी रहने की कोई दूसरी व्यवस्था न हो जाए तब तक हमें यहां से नहीं हटाया जाए। उन्होंने कहा कि दूसरा कारण यह भी है कि हमारे पास इतने पक्के मकान हटाने के लिए पर्याप्त संख्या में पुलिस जाप्ता भी मौजूद नहीं है। इसलिए इस कार्रवाई को स्थगित किया गया है। आगे दूसरी तारीख तयकर भारी पुलिस जाप्ते के साथ आकर इन मकानों को हटाया जाएगा। इस दौरान प्रशासन को करीब 3 घंटे लग गए। प्रशासनिक अमला जब वापस रवाना हुआ तब ग्रामीणों ने राहत की सांस ली।

जल संस्कृति को सुदृढ़ कर रहा वंदे गंगा जल संरक्षण जन अभियान

प्रदेश सरकार का अभूतपूर्व निर्णय, जल संचय व जल संरक्षण की दिशा में मील का पत्थर साबित होगा अभियान

पत्रकार यात्रा के माध्यम से देखी जल संरक्षण गतिविधियां

जयपुर टाइम्स

चूरू(निस)। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के निर्देशन में संपूर्ण प्रदेश में जल स्वावलंबन की दिशा में बेहतरीन काम हो रहा है। जल संरक्षण की दिशा में बनाए जा रहे कुंड, सरोवर व एनिकट आदि के माध्यम से बेहतरीन काम हो रहा है। यह जल संरचनाएं पेयजल और पौधारोपण गतिविधियों के लिए वरदान साबित हो रही हैं। प्रदेश सरकार के निर्देशों पर शुक्रवार को जिला प्रशासन और सूचना व जनसंपर्क विभाग के संयुक्त तत्वाधान में जिले में जल संरक्षण की दिशा में हुए विभिन्न विकास कार्यों के अवलोकन के लिए पत्रकार यात्रा का आयोजन किया गया।

जिले की जांदवा ग्राम पंचायत में विद्यालय व अमृत सरोवर से हो रहा जल संरक्षण

जिले के रतनगढ़ ब्लॉक की जांदवा ग्राम पंचायत में जल संरक्षण की दिशा में बेहतरीन काम हो रहा है। जांदवा के राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय में जल संरक्षण की दिशा में पंचायतीराज व ग्रामीण विकास विभाग, शिक्षा विभाग तथा जनसहभागिता से बेहतरीन कार्य करवाए गए हैं। विकास अधिकारी जगदीश व्यास ने बताया कि जांदवा में 17 से अधिक पक्के जोहड़ और करीब हर खेत में व सार्वजनिक स्थानों पर वर्षा जल संग्रहण के लिए कुंड बनाए गए हैं। इन जलग्रहण गतिविधियों से भूमिगत जलस्तर को बढ़ाने और बरसात के पानी का पेयजल व पौधरोपण में भी उपयोग किया जा रहा है। पूर्व सरपंच गिरधारी खीचड़ ने बताया कि जांदवा के राउमावि में वर्षा जल संरक्षण के लिए तीन कुंड बनाए गए हैं और एक कुंड का निर्माण कार्य प्रक्रियाधीन है। इसी के साथ विद्यालय की छत पर एवं परिसर में बरसात के पानी का नाले के माध्यम से पुराने जोहड़ में एकत्रित कर भूमिगत जल में संचरित किया जा रहा है। उन्होंने बताया कि वर्ष 1977 में यह जोहड़ बनाया गया था। इस जोहड़ की मरम्मत कर इसमें विद्यालय परिसर का पानी संग्रहित कर भूमिगत जल में संचारित किया जा रहा है और पेयजल व वृक्षारोपण के लिए नियमित उपयोग में लिया जा रहा है। इसी के साथ विद्यालय में पौधशाला भी विकसित की जा रही है। विद्यालय में 1000 से अधिक पेड़ लगाए गए हैं और विभिन्न कक्षा - कक्षों में डस्टबिन आदि रखवाते हुए वातावरण को प्लास्टिक मुक्त रखने का संदेश देते हुए पर्यावरण संरक्षण पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है। विद्यालय में पानी निकासी व्यवस्था काफी रोचक व सराहनीय रही। उन्होंने बताया कि जांदवा ग्राम पंचायत के मोलीसर छोटा की ढाणी बीका स्थित भूलाना जोहड़ में पक्के जोहड़ का वंदे गंगा जल संरक्षण जन अभियान के शुभारंभ दिवस पर लोकार्पण किया गया है। यह जोहड़ एमजेएसए 2.0 के प्रथम चरण में 24.25 लाख रुपए की लागत से पूर्ण हुआ है और इस जोहड़ की कुल जल संग्रहण क्षमता 15 लाख लीटर है। उन्होंने बताया कि जांदवा में खेल मैदान का विकास, पौधरोपण, जोहड़ विकास सहित विभिन्न कार्य करवाए गए हैं। इस दौरान एक्सईएन हरिराम माहिच, गोविंद राम खीचड़, दुलीचंद खीचड़, ओमप्रकाश, हेमंत शर्मा, दलीप गुर्जर, विकास शर्मा, सुनील सैनी व मीडियाकर्मी उपस्थित रहे।

पहली बरसात में लबालब हुए कुण्ड

इसी के साथ बीरमसर में पक्के जोहड़ व कुण्ड का अवलोकन किया। अंचल में इसी सप्ताह हुई पहली बरसात से ही कुण्ड लबालब पानी से भर गए हैं। कुण्ड का पानी अधिक स्वच्छ भी है। मीडियाकर्मियों ने पानी का अवलोकन किया है। बीरमसर के ही परमाराम ने बताया कि ग्रामीण अंचल में यह कुण्ड वर्षपर्यंत पेयजल व दैनिक गतिविधियों में उपयोग में लिया जाता है। बीरमसर में झांझाणा अमृत सरोवर के पक्के जोहड़ का निर्माण किया गया है। इसी के साथ जोहड़ परिसर में ही निर्मित कुण्ड की जल संग्रहण क्षमता 1.5 लाख लीटर क्षमता है। गत वर्ष 3200 पौधे लगाए हैं तथा करीब 1800 पौधे सर्वाइव कर रहे है। इस वर्ष नर्सरी में 5000 पौधे तैयार किए जा रहे है। इसी के साथ शमशान में पौधरोपण गतिविधियां प्रक्रियाधीन है। इस दौरान बीडीओ जगदीश व्यास, एक्सईएन हरिराम माहिच, ओमप्रकाश, जेटीए दलीप गुर्जर, हेमंत शर्मा, वीरेन्द्र दाधीच, अरसद अली, घड़सीराम मेघवाल, सुल्तान ढेवा व मीडियाकर्मी उपस्थित रहे।

स्वात्वाधिकारी, कैम्ब्रिज मल्टीमीडिया प्रा.लि. के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक रामेश्वरलाल जाट द्वारा कैम्ब्रिज मल्टीमीडिया प्रा.लि., सी-565 सी, 4 सी स्कीम, न्यू लोहा मंडी रोड, सीकर रोड़ जयपुर में मुद्रित एवं सी-565 सी, 4 सी स्कीम, न्यू लोहा मंडी रोड, सीकर रोड़ जयपुर -302013 से प्रकाशित।
सम्पादक : नीतू चौधरी, सी-588, 4सी स्कीम, न्यू लोहा मण्डी रोड, जयपुर-302013 मो. : 7014217770, E-Mail : jaipurtimes2007@gmail.com *पीआरबी अधिनियम के तहत खबरों के चयन के जिम्मेदार, समस्त विवादों का न्याय क्षेत्र जयपुर।